GL H 294.538 BAL

> 121108 LBSNAA

स्त्री राष्ट्रीय प्रशासन अकादमी d Academy of Administration

मसूरी MUSSOORIE

> पुस्तकालय LIBRARY

.

अवाष्ति संख्या Accession No.

वर्ग संख्या

Class No.

पुरतक संख्या Book No. 121108

G) H

2 no dans 2.

गेा॰ श्री १०८ वि. श्री पुरुषोत्तमलाळ्जी संस्थापित शुद्धाद्वेत भक्ति प्रवर्त्तक सस्ती प्रन्थमाला.

(मणके। १ छे।)

श्रीवलभवंश पद्यवचनामृत.

(भाग १ छे।)



सम्पादक,

कवि नरसिंगदास भाणजीभाइ ब्रह्मभट्ट.

कुतिआणा-(काठीआवाड)

मकाशक,

सनातन भक्ति मार्गीय सा. सेवा सदन श्रो मथुरां (यृ. पी.)

-- ..

मत १०००

मंबत् १९८६



विज्ञिति.

मिय पाठका !

पस्तुत् पुस्तकमां मारा नामनी-पथम " कवि '' शब्दना उल्लेख थयेला जाइ मारा केटलाक स्नेहीओ मारा उपर " हुं स्वयम् किव बनी बेटा छुं " एम कही आत्मश्लाघा-देापारापण करशे एवा भय हावाथी मारे अहीं खुलासा करी लेवानी आवश्यक्ता छे के—

मारा तरफथी छपायेळ, आज पर्यतनां केाइ पण पुस्तको के छेखामां में कोइपण स्थळे ''कवि'' शब्दनो प्रयोग कर्योज नथी अने करवानी इच्छा पण नथी.

परंतु परम पूज्य चरण श्रीमद् गा. श्री १०८ चि. श्री पुरुषोत्तमलालजी महाराजश्रीए स्वयम् कृपा द्रष्टि करी कवि पदवी आधी. आप तेमज आपना सेवक वर्ग अने आपना संसर्गमां आवनार तमाम कवि नामथी संवेश्वन करवा लाग्या, आपश्री तो पत्रवहेवारमां पण कवि शब्दनीज प्रयोग करे छे. जेथी में कवि शब्द मारे माटे आश्वित्रदूष-प्रसादी मानीने तेना उपयोग कर-वातुं साहस कर्यु छे.

पथम पण मानकवि, ग्वालकवि, नरसी महेता. कार्लादास, प्रभृति कविओ महान पुरुपाना आशिर्वाद-थीन महा मूर्वमांथी महाकवि वन्या छे ए सर्व विदित- वार्ती होवाथी मारे पण मळेळ आशिर्वादने शिरोधार्थ करी लेवे।ज उचित्त छे, एम समजीने हवेथी हुं पण मारा नामनी अगाउ कवि शब्दने। उपयोग करुं ते। तेने अनुचित न गणवानी उदारता दाखववा कृपा करशो एवी भावना राखुं छुं. ते प्रश्न पूर्ण करे। अस्तु

वि. नरसिंगदास भाणजीभाइ ब्रह्मभट्ट.

शा संस्थामांथी मळतां पुस्तकोः— ? श्री स्रदासजीनुं जीवन चरित्र ०-६-० २ संपूण रास पंचाध्यायी (नंददासजी कृत) ०-४-० ३ श्रीत्रजगंडळ अने श्रीवछभ अष्टातर शतनाम०-१-० ४ साराष्ट्रनी साध्यी—पाकां सानेरी पुठां....१-०-० ५ श्रीवछभवंश पद्य वचनामृत.... १-४-० ६ प्रेम-शृंगार दाहावली १-४-० ७ श्रीमद् भागवत अने बापदेत तथा सर्वोत्तम धर्म कोने कहेवा ?.... ०-१-६ ९ श्री पुष्टिमांगनो साचा सिंद्धांत १-६-० आ सिवाय अन्य मकाशकोनां एतन् मार्गीय पुस्तको पण मगावी आपवानी सगवड करवामां आवेळ छे,

सम्पादक०

पस्तुत् संस्थानो उदे**त्र तथा नियमो**

- ? आ ग्रंथमाळा द्वारा संप्रदायने अनुसर्ता द्वनभाषा तथा ग्रजराती पाचिन काव्य ग्रन्थानुं शोषन करी प्रसिद्ध करवामां आवशे
- २ शुद्धाद्वैत सिद्धांतने बाधक न थतां भक्ति मार्गने द्रदिश्रुत ग्रन्थे! पण अनुक्कळताए पगट थरो.
- ३ प्राचिन श्रीमद् गेास्वामी बालकोनां चित्रो, जीवन-चरित्रो इत्यादि पण प्रगट थको.
- ४ अमित्रद्ध भाषा ग्रंथा, वचनामृते। इत्यादि मगट थक्ते.
- '५ श्री द्वज चारासी कोषनी परिक्रमाना सविस्तर परिचय तथा तत् लंबंधी अन्य अन्य इकीकता पण अवारनवार पगट थया करशे.
- ६ सहायक सेवा तरीके आठ आना भरी अगाउयी नाम नेांधावनार स्थायी ग्राहक गणाशे.
- ७ स्थायी ब्राइकने दरेक पुस्तक पाणी कींमते मळशे.
- ८ दरेक पुस्तक बाळवेश अने गुजराती एम बन्ने मकारना अक्षरीमां छपाशे
- ९ पुठां शुद्ध लादीनां अथवा बाइन्डींग क्लेग्थनां पाकां बंधाशे तथापि सेवामां राखवा माटे मागणी सुत्रव कंताननां बंधाववानी पण सगवड रहेशे
- १० पत्र वहेत्रार करनारे जवाब माटे रीप्छाइ कार्ड के पेरिष्ट स्टांप बीडवेा. सम्पादक.

पुष्टिमार्गीय शिक्षामृत.

आ संस्थाना बीजा मणका रुपे '' पुष्टिमार्गीय शिक्षापृत '' नामनुं एक पुस्तक मसिद्ध थइ चुक्युं छे जेनी अंदर

- १ वैष्णवानु प्रातःस्मरण.
- २ नित्य स्मरण.
- ३ ब्रह्मसंबंधीओने पाळवाना नियमेा.

इत्यादि छेखो छे, ते दरेके दरेक वैष्णवोए अव-य मनन करवा याग्य छे जेथी दरेक वैष्णवोने तुरत-मांज मगावी छेवा भलामण छे.

नोछावर ०-२-० पेष्टिज ०-०-६ छुटक मगावनारे पेष्टिना स्टांप बीडवा.

आ संस्थानां पुस्तको कोइपण प्रकारना लाभनी आशा राख्या सिवाय फक्त खर्च प्रमाणे नोळावरथो अपाय छे. जेथी ग्रहस्थ वैष्णवाए सामटा मगावी वैष्ण-वामां लहाणी करी पाताना दैवी द्रव्यनो विनियाग करवाना मळेला सुअवसरनो अवश्य लाभ लेवा एवी सुचना करवामां आवे छे. अस्तु,

सम्पादक,

शुद्धादेत भक्ति प्रवर्त्तक सस्ती व्रन्थमाळा.

श्रीमद्ञाचार्यचरणकमछेभ्यानम्:

बे-बाल.

नाहं वसामि वैकुण्ठे, यागिनां हृद्ये न च। मङ्गका यत्र गायन्ति, तत्र तिष्टामि नारद?॥

अखंड भूमंडकाचार्य चक्र चूडामणी आचार्यवर्य श्रीमद् बल्लभाधीश वंशावतंश श्रीमद् गे।स्वामी बालकोए भाषा साहित्यने। उद्धार करवामां मन, धन अने वाणी द्वारा जे श्रम सेव्या छे तेवा श्रम अन्य संपदायमां समष्टी रुपे भाग्येज लेवाया छे.

विश्वने हस्तामछक सम जीनारा तत्त्ववेत्ता पुरुषे। कही गया छे के,—

संसार विष वृक्षस्य द्वैफल अमृतापमे । काव्यामृत रसास्वादः संगतिः; सज्जनैःसह।।

आ विश्वमांथी बे वस्तुओ बाद करवामां आवे अर्थात् श्रीभगवद्गुणानुवादनं गान अने श्रीभगवद् भक्त-भगवदीय पुरुषोत्रो सत्संग. ते। बाकीमां संसार केवळ विषमय रही जाय छे. एटले मनुष्य जन्ममां, श्रीभग-वानना गुणनुं गाम अने भगवदीओना सत्संग एक कर्तव्य अने सार्थेक छे.

उपरेक्त कथन जे शास्त्रोनुं सिद्धांत वाक्यछे तेने सत्य करी बताववानो अमारा श्रीमद् गेास्वामी वाल-केाने महान स्तुत्य उदेश हता अने छे. तेथी तेओ-श्रोए महान महान मितभाशाळी अने सर्व श्रेष्ट भगवद् भक्त कविओने आश्रय आपी काव्य शास्त्रने उच्च कक्षाए पहेंचाहयुं छे एटछंन नहीं परंतु स्वयम् पण मश्च-सेवाना अवकाशमां मश्च गुण-गान संबंधी पद रचनामांन समय व्यतित करता, जेने परिणामे संस्कृत अने (गुजराती तथा वन) भाषा साहित्यना समृद्ध भंदार भरायो छे.

पद-कीर्तन रुप संगीत पण साहित्यनुं एक अति उत्तम अंग छे. पशु गुणगान संबंधी संगीतथी मनुष्यने जेवा अलाकिक आनंद पाप्त थाय छे तेवा आनंद अन्य कोइपण मकारे थता नथी. संगीतनुं एक नानामां नानुं पद पण, सांभळनाराओमां जे मभाव उत्पन्न करी शकेछे तेना अल्पांश पण सारामां सारो वक्ता, लांबा भाषणथी नथी करी शक्तो. संगीतथी आनंद अने उपदेश बन्ने मळे छे. संगीत द्वारा नीति वचना जेटली असर करे छे एटली तत्त्वज्ञानथी पण थइ शक्ति नथी. श्लोकबद्ध के पदबद्ध श्रीमद् भागवत, गीता के रामायणना श्रवणथी नीति अने धर्मनी छाप पढे छे, ते छाप पंचदशी के उपनिषदनां बचनाथी पढती नथी. माटेज कहां छे के,—

तंत्रीनाद कवित्त रस, सरस राग-रित रंग। अनवृडे, बूडे; तरे, जे बूडे सब अंग॥

एक ते। संगीतने। अलैकिक रस, तेमां बळी भगवद्ना गुणनु वर्णन अने सर्वथी श्रेष्ट ते। साक्षात श्री आचार्य वंशनी अमृतवाणी एटले पछी कहेवानुं रह्यंज शुं? जद्पि कह्यो बहु विधि कविन, बरिन अनेक प्रकार तद्पि सदा नित नित नवल, कृष्ण चरित्र उदार

अने ते पण विश्व-व्यापी साहित्य उदानतुं केन्द्र व्रजभाषामां के जे भाषा खरेखर रस रत्नाकर! आ रस रत्नाकरमां जे इबे छे तेने फरीथी पाकृत पाणीमां नहावाना प्रसंगन आवते। नथी. आ रस रत्नाकरनां दर्शन मात्र पण प्रथम श्रीमद्बल्लभाचार्यजी-महापश्चजी ए कराच्यां छे. के जेने परिणामे साहित्य सरावरमां सुरदास. नंददास, व्यासजी, रसखान, चतुर्भूजदास, कृष्णदास, परमानंददास, कुमनदास, छीतस्वामी, गाविंदस्वामी आदि कमल खीली उठयां. भक्ति-भागि-रथीनी भवल धारा वहेवा छागी. अने ते काव्य सरि-तानी तरंगामां श्री गास्वामी बाळका पण अवगाइन करवा अने काव्य-बारीनी छोळा उछाळवा लाग्या. आ उछळती छे।ळे।नां सीकर आसपासमां उडतां इतां तेने ब्रीली लइ एकाद पातमां भरी तेना रसास्वाद

भगवदीओने छेवराववे। एवी इच्छा श्रीमद् गेा. चि.श्री पुरुषोत्तमळाळजी वावाश्रीने थइ तेथी आ कार्य करवातुं आ सेवकने कृपा करी सेांपवामां आव्युं

मारी रुचीने अनुसरतं कार्य मने सुमत थतां वस्तु संग्रह करवानो प्रयास आदयों. शरुआतमां में आ कार्यने शाधारण मानेल, मारी धारणा हती के आवा प्रकारनो संग्रह घणाज ओछे। हशे ! परंतु जेम जेम हुं वधु वधु शोध करतो गया तेम तेम मने मारी अलनुं भान थवा लाग्युं अने जेम श्राद्धदेव महर्षी अथवा ते समयमां पाछळ्थी निमायेला मनु महाराजना कमंडलना नाना मत्स्यमांथी मत्स्य भगवाने प्रकट थइ समुद्र शुद्धांने ढांकी दइ संयोगानुं परिवर्तन करी नाख्युं तेम श्रोमद् गास्वामी वालको अने वहुजी-बेटीजीनी कृतिना अखूट भंडारे मारी धारणानुं पण परिवर्तन करी नाख्युं.

प्रथम मने एम जणायुं के प्रस्तुत् माळानो आ प्रथम मणको लगभग दशेक फोर्मनो थशे. परंतु संग्रह एकत्र करती वखते एटलुं वधुं साहित्य मळी आब्धुं के प्रस्तुत् भागमां २० फोर्मथी पण वधारे समास करवा छतां, आना जेवा वीजा पांच-सात भाग करवामां आवे ते। पण वधी पढे तेम छे. एटले अमे आ पुस्तकने प्रथम भाग तरीके जणावेळ छे अने जो श्रीठाकोरजीनी तेमज श्रीआचार्यचरणनी कृपा हशे ते। आ संस्था द्वारा बीजा भाग पण श्री आचार्यवंश तथा भगवदीओनी सेवामां वनते प्रयासे रज्ज करीश परंतु मुख्य आधार ते। वैष्णवे। आ पुस्तकने अपनावी छेशे ते। कार्य सिद्धी शिघ्र थवा संभव छे

केटलीक अगवडेंा.

आ प्रथम भागमां अमारे श्रीमद् गोस्वामी वाल-कोनां आठ-दश्च चित्रजी दाखल करवानां इतां पर्रतु चालु गांधी चलवलने परिणामे पैसा अने समयनो भाग आपवा छतां अमा अमारी धारणामां निष्फल गया छइ.

ब्लाक माटे अमे मुंबई, अमदाबाद इत्यादि स्थलाए पत्रा छल्या परंतु पत्युत्तर निराशा भर्यो मल्या.
छेवट राजकाटमां एक ब्लाक बनावनारने छ ब्लाक वनाववा आप्या तेमणे पण आजकाल करतां खास्सा चार मास जेटला समय गाल्या छतां छमांथी बे बीलकुल रही अने वाकीना ४ पण बराबर नहीं. जेथी मुंझवण वधी परंतु प्रभुइच्छा बळीयशो मानी संतेष मान्या अने भथम आदृतिनं कार्य जेम तेम आटोपी लीधुं सिवाय पुस्तकनं कदपण धार्या करतां वधी जवार्था श्रीमद् गोस्वामी श्रीमदुलालजी, श्रीमद् गा. श्रीगोकुले- श्रजी, (जनागढवाळा) श्रीमद् गा. श्री हरिरायजी, श्री श्रीभामाजी, श्री जीवनजो महाराज, (मुंबइना मोटा

मंदिरवाळा) श्रीजसीदा वेटीजी, श्रीचन्द्रिया वेटीजी, श्री देवकां वेटीजी, श्रीकन्हैयालालजी प्रभृति बालकोनां पद-कित्तनो मोटा भाग अपूर्ण राखवो पडया छे. अने पांच-सात बालकोनी कृति ते। बीलकुल मुकी देवी पडी छे. तेने आ पुस्तकना बीजा भागमां लेबानो मनो-रथ छे. परंतु श्री-नी इच्छा उपर अवलंबे छे ते करुणा छ करुणा करी कृपादान करशे ते। आ सेवक शिघ्रज सेवामां हाजर थशे अस्तु.

आ पुस्तक तैयार थतां सुधीमां मने निचे जणावेल भगवदीय वैष्णवाए अवारनवार सलाह आपी जे सा-वता करी छे ते माटे तेओ तुं स्मरण पण अहीं करवा तुं योग्य जणाय छे.

श्रीशास्त्रीनी चीमनलालभाइ हरिशंकर

साहित्य भूषण, शुद्धाद्वैत रत्न, माटा मंदिर-सुरत. प भ.शेठ बालाभाइ दामादरदास- अमदाबाद. शेठ रमणलाल केशवलाल (दातार), सूर्य भवन-पेटळाद.

- ,, कीर्त्तनीयाजी पुरुषेात्तमदासजी, जामनगर.
- , प्रेमी भाइ मणीलाळ छगनळाळ, श्रीगिरिराज-कंटक निवारण कार्यना स्वयं सेवक-देवगढवारीया
- ,, मीस्री वेलजीभाइ नथुभाइ- राजकोट.
- ,, गोकुलदासभाइ ओधवजी कम्पाउन्डर-कुतिआणा

मनुष्य मात्र भुक्रने पात्र छे ए सर्व विदित होवाबी हंसहित्यारक सुन्न वैष्णव वंधुओ नीर-क्षीर न्याये महा दोषो तरफ लक्ष न आपतां श्रीवल्लभवंशनां अलै।किक पद्म वचनामृतने हृदयमां धारण करी कृतार्थ थशे एवी याचना छे

छेवटमां जणाववानुं के, श्री शुद्धाद्वेत संमदायमां, एतन् मार्गीय साहित्य-मचारक संस्था केवळ वे-त्रण छे अने ते पण संस्कृत साहित्यनाज मचार करे छे. परंतु तमाम वैष्णव समाज, एक सरखो लाभ लड़ शके तेवी भाषा साहित्य-मचारक संस्थाना अभाव इता तेनी पुरती करवा माटे जेनीकृपा कटाक्षथी मस्तुत् ग्रन्थमा-ळाना मादुर्भाव थया छे. ते परम पुज्य श्रीमद् गास्वामी चि. श्री पुरुषोत्तमलाळजी बावाशीना आभार मानीने विरमुं छुं.

राजकाट, ता. २३-७-३० मगळवार वि॰ त्वदीय, नरसिंगदास भाणजीभाइ. कृतिआणा-(काठीआवाड)

श्रीमद् गा. चि. पुरुषोत्तमलालजी महाराज (मथुरांजीवाळा)नी वंशावळी.

॥ दोहा ॥

जयजय छछमन सुवन शुभ, जय निजजन प्रतिपाल, बछभ पदरज दुःस्व हरत, दरशत करत निहाल.

॥ छप्पय ॥

जिन द्वापरके अंत, संत धरणि द्विजकाजा, नरतनु धर्यो अनंत, हण्या सब असुर समाजा; सप्त दिवस नगराज, करजके, अग्र उठाया, कदन कियो द्धरताज, घेाषपति घेाष बचायो. श्रुतिमुख सरमुख सहसमुख, धरत ध्यान सुर अग्रणी, साहि अब कल्लिमल हरनकां,जगवल्लभ द्विजकुलमणी॥१॥ द्वैताद्वैत विचार, नष्टभया जब सघरा, आमनाय आधार, छांडि करतहें झगराे. मिथ्यावाद अनेक, नीरगुन निरस वखाने. भक्ति डगर विवेक, कतहू न परत छखाने. मायातिमीर बाढया अती, मति गत भइ मतिमानकी, मगटकिन्ह बल्लभ तर्वे, द्यति शुद्धाद्वैत भानकी ॥२॥ ताके युगल कुमार, मारमद मार इटावें, नंदस्रुवन अवतार, प्राक् पुन्य प्रकटावें.

गापीनाथ अहीश, सहसवदन महिधारी, विद्वलनाथ सनाथ, आसुताष असुरारी. तमनीकाय भवअब्धिमें, तरणितरणि चरणनद्वये. पुष्टिपथ द्रदकरनकां, व्याम अरी मगटत ध्ये ॥३॥ ताके स्रत सपूत, पूत अति बेदन गाये, श्रीपति सब श्रीयूत, मनाभ्रुत देख लजाये ॥ मात तात हरखात, सात ए बाळ निहारी, माना सुखमा अवध, सृष्टिकि आन पधारी. श्री गिरिधर गेविंद पुनि, बालकृष्ण गोकुलधणी, रघुनायक यदुनाथ ये, सुश्यामघन गावत फणी ॥४॥ साता जान सुजान, ज्ञान भक्तिके दाता. विद्या बिनय बिवेक, सकल श्रुतिन के ज्ञाता, पष्टम् श्री यद्नाथ, ज्ञान गुन प्रकट कहावे, पष्टी शुक्छ बुधवार, मास मधु हर्ष बढावे. ताग्रह मधुसुदन भये, ते हि स्रुत मधुमन जानिये, तास्रुत विद्वस्त्रनाथजी, सुख करन सुजस बखानीये. ॥५॥ ताहि प्रद्यमनलाल, श्राने विद्वल सुखदायक, श्री पुरुषोत्तमळाल, पकटे सव गुन लायक. ब्रजपालक ब्रजपाल, आत्मज ताके कहिये, निजजन करत निहाछ, चरन शरन गहि रहिये. दय सुत ताके जानिये, ज्येष्ट श्री विद्वलनाथजी, पुनि पुरुषोत्तमजी भये, श्री रमणलालके तातजी. ॥६॥

रमणलाल सुखदान, तनय त्रयताके जाना, श्री त्रजपाल दयाल, दीनता भेष प्रमाना. जयित कन्द्रैयाळाल, करत लीला गाकुलघर, लघुम्राता घनश्याम, विद्यमान आनंदकर. अलंकत भूतळ करत, तनुज द्वय श्री घनश्याम के, श्री दामादरलाल पुनि, श्रोद्वारिकेश सुख धामके. ॥॥॥

॥ दोहा ॥

श्री दामोदर लालकं तनुज सदा सुख थामः विद्या विनय विषेकिनिधि श्री पुरुषोत्तम नाम. १ श्री पुरुषोत्तमलालजी, सुन गाहक सुनवंतः धीर पधुर शीतस्त्र वचन, नरसिंह किरत भनंत. २

॥ सबैया ॥

सरिता शरनांगत सागरके, शरनांगत कामिनी कंथ के नेरे पृथ्वि शरनांगति पावसके, पावस है सुरनायक चेरे. भक्त सदा शरने भगवंतके, ओर न आश धरे नहींनेरे; में शरनांगत श्रीपुरुषोत्तम-लाल सदा बसहुमन मेरे.

॥ दोहा ॥

सम्मत रस नग नाग भ्रव सित रवी सावन मास. द्विजदिन कह वंशावली, ब्रह्मभट्ट नरसिंगदास, ले० आपना, कवि नरसिंगदास ब्रह्मभट्ट.

अनुक्रमणिका.

श्रीमद् वस्त्रभाचार्यजी-श्री महाप्रभुजी.

	पृष्ठ.
परिचय	?
श्री नंदकुमाराष्ट्रक	३
श्री विद्वल प्रभु (श्री ग्रसांइजी) (२)	ı
चरित्र	૭
पंगलार्त्तिकार्या पंगल पंगलं व्रजश्रुवि पंगलं	१ ३
चंदननुं पद पायन चंदन छगाउं.	{8
रथयात्रानुं पद-छाष्ठमाइ खरेइ विराजत आज	\$8
घटानुं पद आज में देखे ढुंवर कन्हाइ.	१५
मुकुटनुं पद-कदंब तरे ठाडे हें पिय प्यारी.	१६
पागनां पद छास्रमाइ बांधे कसंभी पागः	१७
,, ,, —भरे ज्ञिर प्यारा पीयरी पान.	१७
पोदवानुं पद-सिखयन रुचि रुचि सेज बनाइ.	१८
जन्माष्ट्रमीनी वधाइ-तुमारे भाग्य सुने। मेरी गोपी	?6
दाननुं पदठाडेखाल सांकरी खार.	१९
रासनुं पद-चनमें रासरच्ये। वनवारी,	२०

Compared with the compared to	२१
हपचतुर्दर्शानुं पद-न्हात् बळकुवर कुंवर गिरिधारी	
इटरीनां पद-दीपदान दे इटरी बेठे नवछछाल	ર ર
होरीनुं पद–होरी के रंगीछे छाछ गिरिधर	२३
श्रीमहामञ्जीना उत्सवनी वधाइ-सुनेारी०	२४
श्रीयम्रुनांजीनां पद-रास रस सागर श्री यमुने	२५
,, -भक्त प्रतिपाळ जंजाळ टारे	२५
,, -श्री यम्रुनांजीके। नाम छेसा	२६
,, –कोन पें जात श्री यमुनेजु	२६
–सुलासाः	२७
श्री गांकुलनाथजी. (३)	
निरंत्र	२९
पुष्टि मार्गना दश मर्म-पुष्टि मार्ग तणा मर्म दश	३७
कृतनु पद-बेठे हरि राधा संग कुंज भवन अपने	80
श्री रघुनाथलालजी. (४)	
चरित्र	88
श्री गोकुछेशाष्टक-नंद गेाप भूप वंश भूषण	84
श्री द्वारकेशजी (भावनावाळा). (५)
चरित्र	८७
स्वरुप भावनानां प द —	86
् श्रीनाथजीन <mark>ुं पद</mark> -४९ २ श्रीनवनित पियाजी	40

३ श्री मथुरेशजी-५१ (४) श्री विद्वलनाथजी	५१
५ श्री द्वारकांनाथजी (६) श्री गोकुछनाथजी	५२
६ श्री गेाकुलचंद्रमाजी (८) श्री मदन मोहनजी	५३
मुस्र पूरुष	48
श्री महामभुजीनां माकटयत्तं धोळ-तत्त्व गुण	६७
श्री गुसांइजीना ,, -चक्षु मुनि तत्त्व	६७
आश्रयनां पद-आसरे। एक श्रीवल्लभाघीशको	६८
,, - मात समे समरुं श्री वहुभ	६९
श्री जग्रुनांजीनुं पद-जयश्री यग्रुने मकट कल्प	६०
चोरीनुं पद-शाम रुखी सबे अंगको चे।र	40
चरण चिह्ननुं पद-जुगलमें जुगल जुगलके नाम	७१
हींडोरानां पद-लचक लचक झुले चमक चमक	હર
,, ,, –हेरि सखी शरद चांदनी रात	७३
गाय खेळाववानुं पद-गाय खेळावन चळे	હ
प्रवाधिनीनुं पद-आज प्रवाधिनी देव दिवारी	७५
सेवा पकरणनी भावनानुं संक्षिप्त गृह वर्णन	७६
श्री हरिरायजी (रसिक) (६)	
चरित्र	७७
श्री महामञ्जुजीनी वधाइ-भूतल महामहोत्सव	S 8
श्रीगुसांइजीनी वधाइ-श्री छस्मण स्रुत के सुत	८५
", ,, २ जी-नाथ मकट भये	66

,,	,,	३ जी~	-पोष कृष्ण धन्य	८९
	_	ठ−श्रीमहा ^न	राणीजीनां पान	१०१
श्रीमहात्रभु	जीनुं मा	तःस्मरण-	–भार भये	१०२
हरियह को	न रीति	कटी		१०३
हां वारी इ	न बर्छर्भ	विन पर-	- (८)	१०४
नवविकास	नां पद-	—प्रथम वि	विष्ठास	१०५
,,	,,	—द्वितिय	विलास	१०६
,,	••	—-त्रतिय) ?	१०७
,,	"	—चतुर्थ	19	१०८
"	,,	पांचमे	T ,,	११०
**	, ,	—छड्डो	''	१११
) *	,,	—सातमे।	۲ ,,	११२
"	••	आठमे	Τ,,	११३
,,	,,	— नवमा	11	११४
दभ	उल्लास−	-मथम उ	••	१ १६
,	•	2	जो	११७
,	,	३	जो	११८
• •	,	8	यो	११९
.	,	ષ	मेा -	. १२०
) :	j	Ę	ठेा	१२१
>:)	9	मेा	१२ २

		_		
,,	4	: मेा		१२२
, ,	9	. मेा		१२३
; •	१०	मा		१२३
ठाकोरजी श्री	जसोदाजी	मत्ये,	श्री	
वछभ कुळनी से	ोवा भावन	वर्णवे	छे.	१२४
नित्य छीला भा	वना —			१२९
दानक्रीला—				180
श्री कृष्ण जन्मन	ी वधाइ—	-		१५१
पळनानुं पद—	,			१५२
•	न्दाबेटीः	'o'\ A	`	
ઝા પ	प्लाबटा ऽ	\mathbf{u}	,	
रास पंचाध्यायी-शरव	र निशा सुर	वकारी,	चहुंदिश	१५३
श्रीभामिनी वहुजी (८)				
श्रीबह्नभ श्रीवि		_		१५५
श्री शोभामाजी (९)				
चरित्र		••••	••••	१५७
खुळासे।	••••	••••	••••	१५८
श्रीमहाप्रभुजीनी बधाः	। –श्रीलक्ष्म	ण भटर्ज	तेने घेर	१५९
श्रीगुसांइजीनी वधाइ	•			
श्री जम्रुनांजीनरं पद-				
-	गुनांजी निः		_	१६४

,, केछि कछे।छन देखी जग्रुने	१६५
े, आज आनंदमें सूर तनया सुभग	१६५
,. निरखा श्री यम्रना मुखदायक	१६६
,, जमुनां मोहन को मन मोहे	१६७
सिद्धांत रहस्यनुं धेाळ—	१६७
पुष्टि मार्गना पांच तत्वतुं पद	१६८
शरद पुनमना रास	१७०
श्रीवल्लभमभुजी परणमुं	१७७
्रष्टि दढावनं थे।ळ	१७९
जन्माष्ट्रमी <u>नुं</u> धाळ-आनंद सागर उलटये। रे	१८२
श्रीद्वारकेशजी _{उपनाम} गनुजीमहाराज (१०)
चरित्र	
	१८६
श्री सर्वेत्तमजीना दोहा—	२०३
श्री मदुलालजी (११)	
निरित्र	२१७
श्रीवालकृष्णजीनां पद-श्रीबाळकृष्णकुं गाद छे	२३६.
वंदों श्रीवालकृष्ण नव वाळ	२३६
श्रीनटवर <mark>ळालजीनुं कीर्त्तन-वंदे। नटवर नवलकन्हाः</mark>	
आश्रयनां पद-यह तुमसां मांगा गिरिराय	२३८
,, यह तुमसों मांगो डंडाती	२३८
,. करी श्री सर्वोत्तम रसपान	२३९
	• • •

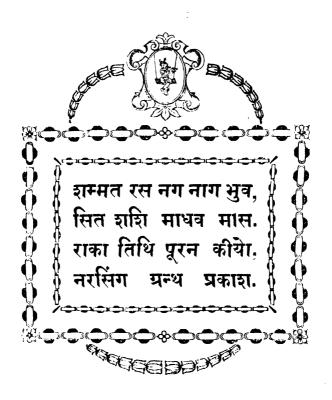
श्री गांकुलाधीशजी (१२)

श्री रास लीलाऽ मृत −	. २४०
श्री जीवनजी महाराज (१३)	
श्री नायजीनुं पद-ओरा आवाने श्री नाथजी	२४१
श्री द्वारकांधीशनुं धेाळ-वेनी चाले। जोइये	२४५
मुंबइना श्रीबालकृष्णजीनुं धोळ-आके। श्रीवालकृ	ब्ज२४८
श्री दानलीलानुं घेाळ-श्री राघाजी मणिमय	२५३
श्री जसादा वेटीजी (निजजन) ((8)
चरित्र	२६७
मंगला चरणनुं धोळ-दास जाणी आश पुरण करजे	१ २७१
कवित—१—२—३ ···· ···	२७४
श्री जमुनांजीनी गरबी-श्री गोकुछचंद्र रमन मन	२७६
रासनुं पद-देखो नागरी निरतत नटवर संग	२७९
श्री व्रजात्सवजी (व्रजजन) (१५)	
चरित्र	२८०
श्री यमुनांजीनां पद-यमुनां यमुनां नाम भजा	२८१
,, निरखतिह मन अति आनंद भये।	२८१
यम्रनासी नहीं केाइ दुःख हरनी	२८२
जयित भानु तनया	२८२

,, जगतमें यम्रनाजी परम		२८३		
,, पिय संग रंगभर कर विलार	से	२८३		
पवित्रानुं पद-पवित्रां पहेरावत श्री विद्वछना		२८४		
श्री ल्लिताजीनी वधाइ-आज सखी शारद	T	२८४		
श्री चन्द्रप्रिया वेटीजी (१६))			
नागर नट नन्दलाल		२८६		
श्री मुकुन्दराय पालने झ्लें		२८६		
मुनेारी सखी क्याम नहीं घर आये		२८७		
श्री व्रजभुषणजी (१७)				
चरित्र	•••	२८८		
श्री वल्कः शारण तिहारे आया	•••	२९१		
श्री महामभ्रजीनी वधाइ-हुं विहारी तैलंग	कुळ	२९३		
		२९५		
,, अहे। भिय ग्रुरली	•••	२९६		
श्री देवकां बेटीजी (१८)				
चरित्र	•••	२९७		
छप्पन भागनी सामग्रीनुं वर्णन	•••	२९७		
श्री गोवर्द्धननाथजी (१९)				
•	•••	३०१		
नित्य पाट–भक्ति थकी वश थाय		३०२		

श्री कन्हैयालालजी (२०)

तुम ते। अखिल ले।कके स्वामी		३०४
अब वज्ञ नाहिन नाथ रह्यो		३०४
भी गोकुलेश अलबेलाे	••••	३०४
अवतो बहुत भइ हे नाथ	••••	३०५
श्री गेाकुलनाथ भक्त पेाखे	••••	३०५
हमारे श्री गे।कुछेश निज ठेार		३०५
निश्चदिन व्रह्म व्रह्म करीए 🗓	****	३०५
हमारे श्री गाेकुलेश वर रुडे।	•••	३०६
मनमें निश्चे भइ श्री गे।कुळपति	••••	३०६
तुम बीन ओर न केाइ श्री बल्लभ	••••	३०६
बह्नभ स्रुने। इमारी विनति	••••	३०६
श्री गाेकुलेशजी (जुनागढवाळा)	[२१]	
निज मंदिरमां विराजता स्वरुपोनी वधाइ	••••	३०७





जय जय जय छछमन सुवन, जय निजजन प्रतिपालः (श्री) बछभ पदरज दुख हरत, दरशत करत निहाल.

श्रीमहाप्रभुजी-श्रीमद्वस्रभाचार्यजी.



मद् आचार्यजी—महाप्रसुजी. श्री बह्लभाचार्यजीतुं चरित्र, अनेक ग्रंथो, मासिको, चोपान्या, भाषणो.

विबेचनो इत्यादि द्वारा स्रुपिसद्ध छे. तेमज निजवार्ता, घरुवार्ता, बेठक चरित्र आदि ग्रंथो, श्रीभगवद् मंडलीअोमां नित्य नियमसर वंचाता होवाथी पण आपनुं
संपुण हत्तांत वैष्णव समाजमां तो बालकोथी हृद्ध पर्यत्त
सर्वेना अनुभवमां छे. एढले अमोए अहीं लखवानुं
योग्य धार्यु नथी. वळी आ ग्रन्थ भाषा पद्य-रचनांनो छे
अने आपतो महान धुरन्धर आचार्य हता एटले आपना
ग्रन्थो तो संस्कृतमांज उच्च कोटीना मितभाशांळी भाषामां
रचायेला छे. आपना समयमां आपने सर्व श्रेष्ट शुद्धाद्वेत
भक्ति साम्राज्यनुं स्थापन करवानुं होवाथी ते कारणे
अन्य संमदायना अनेक धुरन्धर विद्वान पंढिता साथे
आपने संस्कृतमांज शास्त्रार्थ करवा जरुर पडती. तेमज
ते समयना विद्वानोनी सार्वजनिक भाषा पण संस्कृतज

हती अने आपनेता समग्र भारतमां विचरीने मायावादी-ओना पराजय करी भक्ति रुप ध्वजा फरकाववी हती एटले पण आपने संस्कृत भाषाथी विशेष प्रयोजन हत् आपे संस्कृत भाषामां स्तात्र उपदेश झान भक्ति-सिद्धांत _{उत्पादि} विषय पर पचिशेक ग्रन्थो छरूया छे. सिवाय श्रीमद्गागवतपर श्रीसुवोधिनीजी नामे सप्रमाण विस्तृत स्वतंत्र टीका करी छे अने व्याससुत्र उपर पूर्व-मोमांसा भाष्य तथा उत्तर मीमांसा भाष्य, के जेने ब्रह्म-मृत्राणु भाष्य, कहेळे ते, गद्यमां छख्यां छे आ तमाममां तत्त्वार्थदोप उपरनी पकाश नामनी टीका तथा सेवाफल विवरण असृति भेळवतां लगभग ३१-३२ स्वतंत्रं ग्रंथा गणी शकाय आपनो कोइपण ग्रन्थ प्राकृत भाषासां लखायेलो जणातो नथी आप संस्कतना महान् धुरन्धर विद्वान होवा छतां द्वन भाषाने अपनाववामां के तेनी उन्नतिमां कांडपण कचास राखा नथी. अन्य संप्रदायानी अपेक्षाये आपनो तथा आपना वंशजोनो फाळा विशेष छे. आपे कवि सम्राट सुरदासजी जेवा सारामां सारा प्रतिभावान द्वज भाषाना कविओने आश्रय आपी ब्रज-भाषा-काव्यने सर्वेत्तम श्रेष्ट बनाववाना स्तृत्य परिश्रम वेठये। छे. जेने परिणामे मुरस।गर जेवा उत्कष्ट काव्य-ग्रन्था मेळववानुं सामाग्य माप्त करवा साक्षरा शक्तिवान थया छे.

आवां कारणोथीज आ ग्रन्थ भाषा काव्यने। होवा छतां, पथमज आपनुं स्मरण करवानुं येग्य जणायाथी आपना संस्कृत ग्रन्थो पैकी केटलाक स्ते।त्र ग्रन्थो राचक तथा सरळताथी समजी शकाय तेवा छे. तेमांथी एक अग्रक अत्र आपवानुं उचित धार्यु छे. अस्तु

श्री नंदकुमाराष्ट्रकः---

सुंदर गोपालं उरवनमालं

नयनविशालं दुःख हरं । वृंदावन चंद्रमानंदकंदं परमानंदं धरणिधरं॥ वस्लभ घनक्यामं पूरणकामं

अत्त्यभिरामं प्रीतिकरं। भज नंदकुमारं सर्व सुखसारं

तत्त्व विचारं ब्रह्मपरम् । १

सुंदर वारिजवदनं निर्जितमदनं

आनन्द्सदनं मुकुटधरं।

ग्रंजाकृतिहारं विपिनविहारं

परमोदारं चीरहरम्॥

बह्वभपटपीतं कृतउपवीतं करनवनीतं विबुधवरं। भज नन्दकुमारं सर्वसुखसारं तत्त्वविचारं ब्रह्मपरम्॥२॥ शोभितसुखमूलं यमनाकूलं निपटअतूलं सुखद्वरं। मुखमण्डितरेणुं चारितघेनुं वादितवेणं मध्रसरम्॥ वस्त्रभमतिविमलं शुभपद्कमलं नखरुचिविमलं तिमिरहरं। भज नन्दकुमारं सर्वसुखसारं तत्त्वविचारं ब्रह्मपरम् ॥ ३ ॥ शिरमुकुटसुदेशं कुंचितकेशं नटवरवेशं कामवरं। मायाकृतमन्जं हलधरअनुजं प्रतिहतद्नुजं भाववरं॥ वहःभव्रजपारं सुभगसुचालं

हितमनुकाछं भाववरं।

भज नन्दकुमारं सर्वसुखसारं तत्त्वविचारं ब्रह्मपरम् ॥ ४ ॥ इन्दीवरभासं प्रकटसुरासं

कुसुमविकासं वंशिधरं ।

हितमन्मथमानं रुपनिधानं

कृतकलिगानं चित्तहरम्॥

वल्लममृदुहासं कुंजनिवासं

विविधविलासं केलिकरं।

भज नन्दकुमारं सर्वसुखसारं

तस्वविचारं ब्रह्मपरम् ॥ ५॥

अतिपरमप्रवीणं पालितदीनं

भक्ताधीनं कर्मकरं।

मोहनमतिधीरं कलिबलिवीरं

हतपरवीरं तरलतरम्॥

वहःभव्रजरमणं वारिजवदनं

जलधरशमनं शैलधरं।

भज नन्दकुमारं सर्वसुखसारं

तत्त्वविचारं ब्रह्मपरम् ॥ ६॥

जलधरचुतिअंगं ललितत्रिभंगं बहुकृतिरंगं रसिकवरं। गाकुलपरिवारं मदनाकारं कुंजविहारं गूढनरम्॥ वह्नभव्रजचंदं सुभगसुच्छन्दं परमानंदं श्रांतिहरं। भज नंदकुमारं सर्व सुखसारं तत्त्वविचारं ब्रह्मपरम् ॥ ७ ॥ वंदितयुगचरणं पावनकरणं जगदुद्धरणं विमलवरं। कालियशिरगमनं कृतफणिनमनं घातितयवनं मृदुलतरम्॥ वल्लभदुःखहरणं निर्मलचरणं अशरणशरणं मुक्तिकरं। भज नन्दकुमारं सर्व सुखसारं

तत्त्वविचारं ब्रह्मपरम् ॥ ८॥ .

श्रीशुद्धाद्वेत भक्ति प्रवर्त्तक सस्ती यंथमाळा.



श्रीमद् श्रीवीदृळपश्च, जग तारण अभिरामः देवी जीव उद्धारवा, मगठ्या सुंदर क्याम.

श्रीगुसांइजी-श्रीविष्टलनाथजी

श्री गुसांइजीनं प्राकटय संवत् १५७२ना (गुजराति)
ागसर विद ९ ना मांगलीक दीवसे थुम स्थळ श्री
चरणाटमां थयु इतुं. आप पूर्व कालनां वचनाने प्रमाण
करवा माटे साक्षात् पुरुषोत्तम भगवान, श्रीगुसांइजी
श्री विद्वलनाथ स्वरुषे पगट थया छे.

(१) चरणाट आजे चुनारगढ नामथी प्रसिघ्ध छे. मृयमा (अल्हाबाद) थी कल्ककत्ता तरफ जती इ. आइ. रेलवे तथा जवलपुरथी कलकत्ता तरफ जती जो. आइ. र्पा. रेळवेतुं आ चुनार नामनुं स्टेशन छे. ते प्रयागथी आगळ जतां अने ग्रुगल सराय जंकशननी वचमानुं स्टे-शन छे. हालभां चरणाटमां आपनी वेठक छे, स्थान परम रमिणय छे स्टेशनथी एक बाजु थे।डे दुर अरण्यमां आ बेठक छे ते स्थळ आचारजक्कप ना नामथी त्यां मसिध्य छे. बेठकथी एक माइल दूर श्री गंगाजीना तट पर चरणाद्रिनी तळेटीमां गाम वसेखंछे. चरणाद्रि (पर्वत) चरणनी आक्रतिना जेवा जणाय छे. उपर घढ छे. अने हालगढ़नी निचे गामनी एक बाजु श्रो गंगाजीना तट आगल यवनानो एक मस्जीदना स्थाननी साथेज (यवन फकीरनी स्त्रीना कवजामां) ओर डीमां श्री-ने। चरणारविंद

तेनुं प्रमाणः--

धनुर्मासस्य कृष्णे तु, नवम्यां मुनि सत्तम । गोप्यावतारः कृष्णस्य द्विज रूपेण भूतले ॥ (अग्नि मंहिता अ. १४)

पोष ऋष्ण नवम्यांच विद्वलेशेति संज्ञकः। द्विजालये महादेवी काश्या सनिहिता हरिः॥ (गारी तंत्रे काळ महादेवाकम्) *

आपे प्रागटयथी उपवित संस्कार थया त्यां सुबी बाळ्छीला दर्शांबी बाद संबत १५८०मां उपवित संस्कार कराबीने श्री काञ्चीजीमां मधुसुदन सरस्वती नामना विद्वान सन्यासी पासे शास्त्राध्ययन करवा बेसादया त्यां हुंक समयमांज वेद, वेदांग न्याय, व्याकरण

विराजे छे के जे पहेलां चरणादि (पर्वत) उपर गढमां विराजतो हतो आजे पण आ स्थाने घणी वखत भावीक श्रद्धाळ हिंदुओ अने यात्राळुओ दर्शनार्थे जाय छे. तेमज अप्रुक मसंगे मेळा पण भराय छे.

* श्री गुसांइजीना प्राकटय संबंधना अन्य घणा श्लोका छे पण स्थल संकाचने छइने तमाम अहीं लखी शकाया नथी. साहित्य इत्यादि शास्त्रोनुं सारी रीते अध्ययन कर्युं. बाद िश्वनाथ भटनी श्री रुकमणीजी नामनी कन्याथी आप नां रुग्न महोत्सव मोटी धामधुमथी करवामां आच्यां.

श्री गुसांइजीनी १७ वर्षनी अवस्थाए श्री महा-प्रश्निए आसुर व्यामाह लीलाकरी ते वखते आपना श्रीकंटनी माळा श्रीगुसांइजीना कंटमां पधरावी स्व संपदायनुं सिध्धांत दुंकमां समजाव्युं अने विशेष जरुर जणायता. दामादरदास आदि भगवदीओ द्वारा जाणी लेवा भक्तामण करी एतन मार्गीय सन्यास गृहण करी संवत् १५८७ ना आशाद शुदी ३ ना दिवसे मध्यान्हे श्रीगंगाजी द्वारा लीलामां प्रवेश कर्यो.

श्री महाप्रश्रुजीना आसुरव्यामोह पछी आपनी आज्ञा मुजब श्रीगुसांइजी अडेलमां बिराजता अने त्यांथी श्री गिरिराजजी पथारता. आ समय सुधी श्रीनाथजीनी सेवा बंगालीओ करता परंतु तथी श्रीनाथजीने घणा श्रम पडता तथी आपने श्रीजीए आज्ञा करी के, बंगालीओ मारी सेवा भाव पुर्वक करता नथी. माटे तेने सेवामांथी दूर करे।. जेथी आपे बंगालीओने सेवामांथी रजा आपी, पाते सह कुटुंब अडेल्कथी व्रजमां पथाया अने स्थायी निवास कर्यो. तेमज सांचार ग्राम निवासी एर्जर ब्राह्मणोने बेलावी तेमने सेवाना क्रम बताव्यो

अने रामदास गेावींदजी नामना एक ब्राह्मणने श्री-ना चरणस्पर्व करावी मुखीआ स्थाप्याः

आपें श्रोनाथजी ने अनेक प्रकारना विविध गृंगार यस्ताभूषण तैयार करावी समण्या. (जे पैकीनां केटलांक अद्यापि प्रभु धारण करे छे) अने तमाम सेवाना प्रकार चालु कराव्या:आ वस्तते आपनी पासे केटलाक विद्वाना शास्त्रार्थ करवा आवता तेमने शास्त्र द्वारा तत्त्व समजावी तेमसुं समाधान करी संताप प्रमाडता. श्रीमहाप्रभुजीना अपूर्ण रहेल ग्रंथा आपे पुर्ण कर्या अने रहस्यनु अवले।-कन कर्युं.

आपना अनेक महानुभावी शिब्या हता तेमां पण वसा वावनतो महान ताद्रशो थइ गया छे, के जे २५२) विष्णवानी वार्ताथी सुप्रसिद्ध छे. आपनो प्रताप अतुळ-निय छे. आपे श्री गोकुळमां पथार्या पछी प्रतापवळ खुव जणाव्या, आपना प्रभावथी सुग्ध थइ जइ ते समयना दिल्हीना वादशाह भहम्मदशाहे श्री गोकुळ अने जती पुरा इत्यादी गामोभेट करी चमर, मारछलो, छडी विगेरे

(१) श्री गुसांइजीना समयमां दिन्हीनी गादीए मदम्मदशाह नामना वे वादशाही थया छे, एकतो हुमायु ने हरावी ''शेरशाहसूर'' नाम धारण करी गादीए बेठे। हतो ते, अने त्यारवाद सलीमशाहसूर पछी तेना काका अर्पण कर्या (जे अग्रापी वर्तमान छे) जेथी आपे श्री गाकुलमां मंदिर सिद्ध कराव्युं. अने कुल धर्म विचारीने सामयाग कर्यो,

आपे ब्रह्मवादनुं सारी रीते स्थापन कर्यु अर्थात श्री महामभुजीना सिद्धांतना प्रतिपादनने टीका टीप्पणी अने पुस्तको छखीने सारी रीते पुष्ट कर्यो बाद पृथ्वी पिक्रमा पण करो अने सेवा रीती विस्तारथी बतावा, आपे छग भग नाना माटा ५०) ग्रन्थानी स्वतंत्र रचना करी छे, उपरांत श्रीमद् भागवतना श्लोको, अने श्री सुवेाधिनीजी आदि उपर प्रकीर्ण छेखो घणा छे. आपने त्यां ७ छालजी अने ४ वेटीजीनुं प्राकटय थयुं. जेनुं वर्णन श्रीवल्लभाख्यान आदि एतन् मार्गीय ग्रथोमां विस्तार पुर्वक होवाथी तेमज घणाक वैष्णवो नित्य सायं प्रातःकाळे नियमसर स्मरण करता होवाथी आपनुं हत्तांत

नो दीकरो महमदशाह अर्दली संवत् १६०९मां दिल्हीना तख्तपर बेठा. तेना राज अमळ दरमियान राजनी कुळ सत्ता '' हेम्र '' नामक एक वणिकना हाथमां हती.

सदरहु महमद पासेथी हुमायुए फरीथी तख्त इस्त गत कर्यु. हुमायु पछी महान मार्गळ सम्राट अकवर गादीपर आच्या तेनुं पुरुं नाम अबुलग्रुजफ्फर जलालु-दीन ग्रुहम्मद अक्रवरशाह हर्तु. लेखक.

दरेके दरेकथी परिचीतछे एटले ते तमामनो अहीं उल्लेख करता नथी. आपनी माथे श्रीटाकरजीनां जे सेवा-स्वरूप विराजतां हतां तेमांथो ७ लाळजी उपर सात न्वरूप पधरावी दीधां अने श्रीनाथजी तथा श्री नवनित िपयाजी पातानी निज सेवामां राख्यां, एक वखत सात न्वरूप सहवर्तमान अन्नकुट अरागाव्या. केटलेक स्थले श्रीमदभागवतनी पारायण करी बेठका स्थापन करी अने पुष्टी मार्गने संपुर्ण स्थितीए पहेांचाढी ७०) वर्ष अने २८ दिवस भूतळने अलंकत करी श्रीगिरिराजजी नीकंदरामां मवेश करी गया आपतुं संपुर्ण चरित्र एतन् यागीय ग्रंथोमां विस्तारथी वर्णवेलुं होवाथी अहींता िंद्ग दर्शन मात्र करवामां आव्युछे ते उपर कहेवाइ गयुं हे कारण अहीं संपूर्ण चरित्रो सम्बानो अवकाश नथी.

आपनां किर्त्तन-पदमां श्री विद्वल गिरिधरन ए छेवटनी छाप छे, अर्थात् श्री विद्वलनाथजीए. श्री गिरि धर (श्रीनाथजी) श्रीकृष्णने उद्देशीनेतमाम किर्त्तन कर्यां छे. एटले जे जे पद, धोल, किर्त्तन, आदिमां मस्तुत् छाप आवे ते आपनी कृति समजवी.

आपे संस्कृत तथा द्वज अने गुजराती भाषामां किर्त्तन, कोळ, पदः विः घणा वनाव्यां छे, जेमांथो अहीं मात्र थोडां भाषानां पद आपवा मयत्त कर्यो छे. संस्कृत पद मंदीरामां प्रसंगापात गवाय छे तेमांथी मंगलात्तिनी ४ आर्या जे हमेशां नियमसर दरेक मंदीरमां पांतः गवाय छे ते अति परिचीत होवाथी अहीं मंगल रुप पथम आपवामां आवे छे.

मंगल मंगलं व्रज भुवि मंगलं। मंगलिमह श्रीनंदयशादा नाम सुकीर्तन मेतद्रुचिरेात्संग सुलालित पालितरूपम् ॥१॥ श्री श्रीकृष्ण इति श्रुतिसारं नाम स्वार्त जनाशय तापापह मिति मंगलरावं । व्रजसुंदरी वयस्य सुरभीहंद मृगिगण निरुपम भावामंगल सिंधुचया ॥२॥ मंगलमीषत्स्मत-युत मीक्षण भाषण मुन्नत नासापुट गति मुक्ताफल चलनं । कोमल चलदंगुलिदल संगत वेणुनिनाद् विमोहित वृन्दावनभुवि जाता ॥३॥ मंगल मिललं गोपी शितुरति मंथरगति विश्रम मोहित रासस्थितगानं । त्वं जय सततं श्रीगावर्धनधर पालय निजदासान् ॥ ४॥

चंदननुं पद-- राग नायकी पायन चंदन लगाउं: वहोत भांत के बींजना दुराउ, छीरक सुगंधजल नेन सीराउं. ॥१॥ अगरकपुर घसी अंग लगाउं. मृगमद तिलक बनाउं; श्री विद्वल गिरिधरन लालको ललीत लाड लडाउं. ॥२॥ रथयात्रानं पद-- राग मल्हार. लालमाइ खरेइ बिराजत आज; रत्न खचित रथ उपर बेठे, नवल नवल सब साज. ॥१॥ सुथनलाल काछनी शोभित, उर वैजयंति माल; माथे मुकुट ओढे पीतांबर, अंबुज नयन विशाल, ॥२॥ इयामअंग आभूषण पहेरे,

झलकत लेाल कपोल:

वारवार चितवत सबहीतन, बालत मीठे बोल;॥३॥ यहछबि निरख निरख बज सुंद्रि, लोचन भरभर लेहो; फिरफिर झांक झांक मुख देखे, रोम रोम सुख पेंहो. ॥४॥ उतरलाल मंदिरमें आये, मुरली मधुर बजाय; निरख निरख फूलत नंदरानी ्रमुख चुंबत ढिग आय. ॥५॥ अति शोभित करलीये, करत सिहाय सिहाय: श्रीविष्टल गिरिधरनलाल पर, वारत नांहि अघाय. ॥६॥ राग-मल्हार.

आज में देखे कुंवर कन्हाइ, प्रात समे निकसे गायन संग, इयाम घटा जुरी आइ.॥१॥

पीत बसन पहेरे तन सुंदर, कसुंभी पाघ सुहाइ; मुकतामाल सोहत उर उपर, मुरली मधुर बजाइ;॥सा कहा कहुं अंग अंगकी शोभा, मेांपे वरणी न जाइ, श्री विद्वल गिरिधर देखेतें, क्योंहं कल न पराइ. ॥३॥ मुकुटनुं पद--- राग मल्हार कदंबतरे ठाडे हें पिय प्यारी, मोहन के शीर मुकुट बीराजत, इत लेहेरिंया की सारी. ॥१॥ मंदमंद बरषत चहुं दिशते, चमकत बीज छटारी; मुरली बजावत श्री नंदनंदन, गावत राग मल्हारी ॥१॥ लेत तान हरिके संग राधा, रंग होत अति भारी:

श्री विद्वल गिरिधरको रिझवत.

श्री वृषभान दुलारी,॥३॥

पागनां-पद राग-मल्हार

लाल माइ बांधे कसंभी पाघ कसुंभि छडी हाथमें लीये,

भीज रहे अनुराग १ कसुंभोइ कटि बन्या हे पिछारा, कसुंभा उपरना.

कसुंभा बात कहत राधासों, कसुंभे बने दोउ नेना, हरित भूमी यमुना तट ठाडे, गावत राग मल्हार:

श्री विद्वल गिरिधरन छबीला,

इयाम घटा अनुहार;

धरे शिर प्यारे। पीयरी पाग पीतांबर पहेरे अति झीनो.

नीरखी सखी छबीबाग

ते साइ चीर बन्या प्यारी के, चेाली रही उर लाग. श्री विद्वल गिरिधर प्यारी पीय. निरखत चित अनु राग, पाढवानं पद-- राग--बिहागरो सिवयन रुचि रुचि सेज बनाइ रंग महलमें पर गयेपरदा, धरी अंगीठी सुखदाइ सितसमे घीष्म रुत् कीनी, अति सुंदर वर राइ, श्री विद्वल गिरिधारी क्रुपानिधि, पाढे ओढ रजाइ. राग आजावरी तुमारे भाग्य सुना मेरी गापी, भया एसा लाल हमारे. अब चिरंजीवा भाग्य सबनके.

खेलो मेरे तुमारे

हों सुल देखें। तुम सुल देखें।.

रूपावा दुध मलावा,

मेरे लालकी तुम सब भाभी

उवटी नवाय बेठावा, २

तुम लेहु गाद लगावा छाती,

मुख चुंबा ओर खिलावा,
श्री विद्वल गिरिधरन लालको,

गंगा करन शिखावो ३

—;(॰):——

दानतुं पद-राग-विलावस्त्र.

ठाडे लाल सांकरी खार निकसि आय सकळ व्रज सुंद्री. आगे नवल वृषभान किशार १ गिर गिर्ह बांह राेकी सब राखी, नागर नंद किशार. हिस हिस कहत दान सब लेहू, मनिह हरत नयनकी काेर २ आवत जात सदा यही मारग.
अब लालन राखी तुम घेर,
श्री विट्ठल गिरिधर मुसक्याने,
फिर फिर चंद वदन तन हेर, ३

रासनुं-पद- राग बिहागः बनमें रास रच्या बनवारी, यमुना पुलिन मिछिका फूली, शरद रेन उजीयारी. ॥१॥ मंडल बीच स्यामघन सुंदर, राजत गाप क्रमारी, प्रगटत कला अनेक रूप तिहीं, अवसर लाल विहारी. ॥२॥ शीश मुकुट कुंडलकी झलकन. अलक बनी घुघरारी; कंबुकंठ धीवाकी डेालन. छीन लंक लेहेकारी. ॥३॥

धायधाय झपटत उर लपटत,
उरप तिरप गतिन्यारी;
नृत्यत हँसत मयूर मंडली,
गावत शोभा भारी;॥४॥
वेणुनाद ध्वनी सुन सुरतर मुनि,
तनकी दशा विसारी;
श्री विद्वल गिरिधरलालकी,
बानिक पर बलिहारी॥४॥
——•)-(•——

रूप चतुर्दंशीनुं पद राग-देवगंधार

न्हात बलकुंवर कुंवर गिरिधारी,
जसुमति तिलक करत मुख चुंबत,
आरती नवल उतारी ॥१॥
आ नंदराय सहित गापसब,
नंदरानी व्रजनारी;
जलसोंघोर केशर कस्तूरी,
सुभग शिश तें ढारी ॥२॥

वहोरिकरत सुंगार सर्वे मिलि, सबमिल रहत निहारी: चंद्रावलि वजमंगल रसभर, श्री वृषभान दुलारी. ॥३॥ मनभाये पकवान जीमावत, जात सबे बलिहारी: श्री विद्वल गिरिधरन सकल वज, सुख मानत छोटी दिवारी.॥॥॥ इटरीनां पद-- राग कान्हरेा. दीप दानदे हटरी बेठे: नवललाल गावर्द्धन भारी: देगहरी पांति बनी दीपनकी: व्रजशोभा लागत अतिभारी. १ तेसे ही बने नंदके नंदन: तेसी बनी राधिका रानी: मह महतें आइ वज संदरी;

मात जसोदा देख सिंहानी. २

भांत भांत पकवान मिठाइ;
ले ले गांद सबनकी नावत;
आरति करत देत नोछावर;
फिरफिर मंगल गीत गवावत. २
उठकर लाल खिरकमें आये;
टेर टेर सब सखा बुलाये;
श्री विठ्ठल गिरिधरन लालने;
सब गायन के कान जगाये. ३

होरीनुं पद.- राग-धनाश्री होरिके रंगिले लाल गिरिधर रंग मचायो; केहार सुरंग गुलाल अरगजा; मदन वसंत जगायो. ॥१॥ ताल मृदंग झांझ डफ वीना, होरी राग जमायो; सुनी निकसी यह यहतें सुंद्री; भाव भक्ति फल पायो. ३ आवत भावत गारिन गावत, रसभिर लाल खिलायो; श्री विद्वल गिरिधरन जुवतिनसंग, होरि त्योहार मनायो. ३ ——(॰)——

श्री महामभुजीना उत्सवनी वधाइ-राग रामकली.

सुनोरी आज नवल वधायो हे, श्री लक्ष्मणग्रह प्रगट भये हें, श्री वह्नभ मन भायो हे १ वाजत आवज ढोलक महुवर, धनज्यों ढोल बजायो हे; कोकिल कंठ नवल वनिता मिल. मंगल गायो हे. २ हरदि तेल सुगंध सुवासित, लालन उवट नवायो है: नख शिखलो आभूषण भूषित, पितांबर पहरायो हे; ६

असन वसन कंचन मणि माणिक, घर घर याचक पायो है; श्री विडल गिरिधरन क्रुपानिधि, पलनामांझ झुलायो है;

श्रीयमुनांजीनां पदः

रास रस सागर श्री यमुनेज जानी;
बहत धारा तन प्रतिछिनुं नै।तन,
राखत अपने उरमां जु ठानी १
भक्तको सिहभार देतजु प्रान आधार;
अतिही बोलत मधुर मधुरी बानी;
श्री विद्वल गिरिधरनवर वसकीयो.
कानपें जात महिमा बखानी. १
भक्त प्रतिपाल जंजाल टारे.
अपने रस संगमें संग राखत सदा;
सर्वदा जोइ श्री यमुने नाम उच्चारे. १
इनकी कृपा अब कहां लग बरनिये;

जेसे राखत जननी पुत्र बारे.

श्री विट्ठल गिरिधरन संग विहरत. भक्तको एक छिनना बिसारे. २

श्री यमुनाजीको नाम ले सो बडभागी. इनके स्वरुपको सदा चिंतन करत, कलन परत जाय लेह लागी. १ पृथी मारग मरम अतिही दुर्लभ करम, छांडी सगरे परम प्रेम पागी; श्री विद्वल गिरिधरन एसी निध, भक्तकों देत हे बीना मागी. २

कोनपें जात श्री यमुने जुबरनी, सबहीको मन मोहत मोहन,

सो भीयाको मन हे जु हरनी. १ इन बिना एक छिन रहेत नहि जीवन, धन्य व्रजचंद मन आनंद करनी; श्री विष्ठल गिरिधरन सहित आये, भक्तके हेत अवतार धरनी २

(क्रमशः)

(कांकरोली वाळा श्री गीरधरलाळजी महाराज पोताना १२०) वचना मृत पैकी ३१ मा वचना मृतमां आज्ञा करे छे के श्री गुसांइजीए किंचन कयों छे तेमा कोइ स्थळे लिळतादिकनी छाप राखी छे, कोइ स्थळे सहज मीत छाप राखो छे, एक (संस्कृतमां) पेख पर्यक ग्रयनं आ पलनामां पोतानी छाप राखी छे. अन्यत्र श्री विद्वळ छाप छे. श्रो गिरिधरजीये पण कोर्चन कथी छे तेमां अनेक तरेहनी छाप राखी छे.) अस्तु०

आ पद--कीर्तन, श्री ग्रसांइजीनां होवानुं कहेनाय छे, छतां पण ते निश्रयात्मक कही शकाय नहीं, तथापी श्री गिरधरनी महाराज पाताना वचनामृतमां आज्ञा करे छे. के श्री ग्रसांइजीए कीर्तन कर्यों छे, एटछे आपे अवश्य कीर्तन. पद कर्यों तो छेज.

एम पण सांभळवामां छे के श्री गुसांइजीनां सेवक परम भगवदीय गंगाबाइए (के जे श्री नाथजी मेवाडमां पथार्या त्यारे साथे इतां तेमणे) "श्री विद्वल गिरिधरन नी छापथी गुजराती, मेवादी अने द्वज भाषामां सेंकडो पद-कीर्यन बनाव्यां छे.

उपरनी बन्ने वाता उपर विचार करतां जनाय छे के. श्री ग्रुसांइजी अने भ. गंगाबाइनां पद सेळ भेळ थइ गयां छे तेनुं मथक्करण थवुं मुस्केष्ठ छे एटछे केाइएण मकारनो खास मत बांधी शकाय नहीं जेथी दरेके पातानी भावना ममाणे विचारी छेवा विनती छे,

अमारा विचार प्रमाणे ते। आ पद भः गंगाबाइनां होय ते। पण अहीं दाखळ करवा अनुचित नथी. कार-णके भः गंगाबाइ भगवद् लीलानां सखी अने महान् अलाकीक वस्तु होबाधी ते बैष्णवो माटे ते। परम वंद-निय छे. जेनी साथे श्रीनाथजी साक्षात वार्तालाप करे तेने माटे लाकीक वाणीथी कहेबानुं होयज शुः अने एवा महानुंभावीनी वाणीपसाद पण साक्षात् रसात्मक भी कृष्ण स्वरूप होय एटके ते अलाकीक वस्तुने जरुर भावे उच्चस्थानेज पधरावी शकाय!



श्रीमद् गोकुलनाथजी



विञ्वलाधीश्वरना चतुर्थ क्रमार श्री गाकु-छनाथ पशुचरणतुं प्राकटय, संवत् १६०८ ना मार्गशीर्ष भाद्रपद नक्षत्रमां त्रिवेणी तटपर मयागमां थयुं हतुं. आपत्रीना माकटय समयना वर्णननी वधाइओ व्रजभाषामां अनेक भगवदीओए बनावी छे. तेमज गुजराती भाषा**मां पण अनेक धोळ पद रचा**यांछे

आपश्रीनो पाकटय उत्सव पुष्टी संपदायी दरेक यरमां मनाय छे तेमां पण श्रीगाकुल नाथजीना घरना वैष्णवोगां तो पस्तुत दीवसने एक गहा महोत्सव तरीके मानवामां आवे छे. मागसर शुदी १ थी मंडप बनाबीने भिन्न भिन्न भावनात्मक कीर्त्तन, श्रीळ, गाइ-गवरावीने उत्सवतं यथा, स्वरूप प्रगट करवामां आवे छे.

श्री गोक्केश प्रभुना पाकटयना समयमां थयेल आनंदोत्सवना वर्णननुं एक भगवदीय निचे मुजब वर्णन करे छे.

आजतो अंडेल गाम, प्रयाग नगर त्रिवेणी सुखधाम महाराजाधिराज बिराजे श्रीविद्व-लेशरी। तिन त्रिलोकीनाय प्रकट पुरुषोत्तम तहां अद्भुत स्वरूप प्रगटे श्रीगाकुलेशरी ॥१॥ श्री गिरिवरधारी साथ श्री विद्वलेश मद्न मोहन पाछे तें पघारे मथुरेश द्वारकेशरी. दिनदिन अधिक प्रताप तेज आनंद अधिक वस्त्रभप्रिय निजदास मिलो जग बलेशरी ॥२॥

आथी समजाय छे के श्रीमद् अग्निकुमार श्रीविद्य-लेश पश्च चरणे श्री गोकुलेशजीना पाकटय समये श्री गिरिराजधरण आदि स्वरुपाने पधरावी महोत्सव कर्यो हतो.

यज्ञोपवीत अने अध्ययन.

संवत् १६१५ ना चैत्र शुदी ६ शुक्रवारे श्रीगुसांइनीए श्रीगोकुलनाथजीने यक्तोपिकत दान करी संमदायिक
पणाळी अनुसार ब्रह्मसंबंध कराव्युं, त्यारबाद श्रीबिइलेक्स
पश्च अडेलथी द्वारकां पधार्या अने त्यांनी यात्रा संपूर्ण
करी फरीथी अडेल पधार्या, बाद कर्नाकट वासी
उपाध्याय नारायण भट्टनी योजना बालकोने वेदाघ्ययन
कराववा माटे करी अध्ययन शरु कराव्युं, तेमां वेदाध्ययन बाद व्याकरण आदि वेदांगानो अभ्यास संपूर्ण
कर्या पछी दर्शन शास्त्र अने सांमदाविक ग्रन्थोनो अभ्यास
पितृचरण पासे कर्यो.

विवाह अने देवीजीवोद्धार.

योग्यवय पाप्त थतां श्री गोकुलनाथजीना विधिवत विवाह थया आपश्रीनां बहुजीनुं नाम श्री पार्वती वहुजी हतुं. आपना स्वरुपनुं वर्णन करतां भगवदीय गोपाल-दासजी गाय छे के:—

श्री गोकुलपति अति गुणनिधि, तात तणो प्रतिबिंबरे रसना । श्री पार्वती पती प्रेमशुं शोभा,

सकल कुटुंबरे रसना॥

आपश्री आर्यावर्तना तमाम परेशमां विचर्या हता.
आपना अनेक सेवको हता तेमां ७८ महानुभाव अनन्य
भगवदीय थया छे. जेनी नामावळी व्यारावाळा गेापालदासजीए रचो छे. आ ७८ मुख्य भगवदीओमां पण
कल्याण भट्ट अने भरुच निवासी भगवदीय मोहनभाइ
मुख्य मनाय छे. भगवद् सेवापरायण मे।हनभाइजी
गुरुभक्तिना मूर्तिमंत स्वरूप श्रीगोकुलेश मञ्जना अनन्य
सेवक हता. गुरुदेवमां तेमनी असाधारण प्रेम भक्ति
हती. एमना सत्संगथी बीजा पण घणांक वैष्णवोनी
श्रो गोकुलेश मञ्जमां आशक्ति थइ हती के जे ''भरुची
वैष्णव ''ना नामथी प्रसिद्ध थया छे. पाछळथी तेमां

पण भेद पहचा छे. जेवा के भरुबी अने लिमडीया.
भरुची वैष्णवानी ग्रुरुभक्ति आदश्णिय अने प्रशंसनीय छे तेओ अनाभयनी गंध पण सहन करी शक्ता
नथी. कदाच प्रशंग आवे ते। मस्तक शुद्धां आपवा तत्पर
थइ जाय छे. जेना पुरावामां उज्जन निवासी भगवदीय
देवाभाइ, त्रिकमभट आदिना दाखला जगजाहेर छे.

महानुभाव कल्याण भट्टजी.

श्री गोकुळनाथजीना अन्तरंग भगवदीयोमां मठाधिपति श्रीकल्याणभटजी पण छे. ते गिरिनारा ब्राह्मण
हता. संस्कृत भाषाना सारा ज्ञाता होवा उपरांत किं
हता. वार्ता मसंगापरथी जणाय छे के, श्री गोकुँळनाथजीना घरमां गिरनारा ब्राह्मणोनो विशेष आदर हतो.
ज्यांसुधी सेवा कार्य माटे गिरनारा ब्राह्मणो मळे त्यां
सुधी अन्य ब्राह्मणोनो स्विकार थतो नहीं. कल्याण
भट्टजीए संस्कृत, भाषामां "कल्लोल" नामक ग्रन्थ बनाव्या
छे जेमां पुरा चालीस हजार श्लोक होवानुं कहेवाय छे.
जेमां श्री गोकुळनाथजीना लीलामृतोदधिनु वर्णन छे.
सित्राय श्रीमद् भगवद गीता पर एक टीका लखी छे.
जेनी हस्त लिपि "गुजराती" मसना मालीकना पुस्तकाळयमां छे के जे १५००० (पंदर हजार) श्लोकनी छे

एक अद्भुत प्रसंग.

श्री गोक्किंग प्रभुना जीवन चिरत्रमां एक प्रसंग दरेक मनुष्योनुं लक्ष लेंचे छे. तेमांपण माहात्म्य द्रष्टिथी जोनाराओना हृद्यमांते। प्रस्तुत प्रसंग आपश्रीने माटे उंडी छाप वेसाडे छे, अने साम्प्रदायिक इतिहासमां सुवर्णा-क्षरे अंकित थह गयेल छे. जेनु प्रशुंज सुक्ष्म वर्णन अहीं आपवामां आवे छे.

चिद्रूप नामना एक भिक्त मार्गीय विरोधि सन्यासी ए गुजरात आदि प्रदेशमां पाताना अवैदिक मतना प्रचार करी जनताने धर्म विमुख बनाववाना प्रयत्न करी रह्यो हतो. धर्म निष्टा वाळा सज्जनोने आ त्रासदायक आफत रूप थइ पडयो हतो, अने ज्यां ज्यां जतो त्यां त्यां धर्म द्रोहना दावानल सळगात्री मुकतो अने अनेक निर्दोष प्राणीओनी हत्यान कारण वनता.

एक समय फरते। फरते। उज्जेन नजीक जइ पहेंच्यो अने त्यां भर्तृहरीनी गुकामां निवास करो रहा। आ वखते महम्मदतकी नामे उजयनमां मुसलमान पदा-धिकारी हते। तेने चिद्रुपे पाताना वाणी वीलासमां मुग्ध करी धर्मना नास करवामां मृद्रत कर्यो भिकत मार्गनी चारो संपदायने जड मुल्थी उखेडी नाखवामां

साधन भ्रुत वनाव्यो. महमदना अत्याचारथी डरी जड चणाक भीरु माणसीए वाह्य चिन्हनी त्याग कर्यो आ वखते उज्जयनमां श्री गोकुलेश प्रभुना अनन्य सेवको पैकी वे भगवदीओ द्रुट मनना इता. तेमां १ त्रिकमभट अने २ जा देवाभाइ, आ बन्ने धर्माग्रही बैष्णवोए तिलक माळा आदि धर्म चिन्हों ने। बीलकुल त्याग कर्यो नहिं, एक समय तेओ चिद्यनी गुका पासेथी निकळ्या त्यारे ते पाखंडी सन्यासीने नमन कर्युं नहीं आथी चिद्रवे पोता हुं अपमान मान्युं. अने ते बन्नेने पासे बोलाबो जणाच्युं के, तमा तिल रू अम्दियो वैष्मव जनाओ लो अने अहींना हाकेशना हुकम मुजय हज तमोए आ चिन्होनो त्याग कर्यो नथी जेथी तमो गुन्हेगार छो. परंतु जो अत्वारेज भने अः क्षणेज अहींज जो आ चिन्हनो त्याग करशे। तो तमने हाकेमना कोपमांथी वचावी लइशः सन्यामीना आवां अधार्मिक वाक्योपर लक्ष न आपनां वने पोताना घर तरफ चाल्या गया. जेथी सन्यासीनो क्रोध वधी गयो अने एकदम महमद पासे जड वोल्यो.

भविभिर्ग वाद्याई पोतानी हक्कमतमां फर्मान नारी कर्यु छे के जे लोका धार्मिक विन्ह धारण करता होय वेजोने ते छोडावयां अने तेनो पुरेपुरी अमल करवा मने बना आपी छे: जेथी हुं तमने जणाबुं छुं के जो आ हुकपने। अमल तमारा राज्यमां नहीं थाय तो बाद-शाह तमारापर नाराज थशे. ए लक्षमां राखो अने जे प्रमाद चाली रह्यो छे तेनो बंदोबस्त करो कारण बाद-शाही हुकपनो अनादर करनारा में तमारा राज्यमां जोया छे.

महमदे तुर्वज सन्यासी पासेथी हुकमनो अनादर करनारा माणसानी यादी मागी अने ते यादी मुजब तेओने पोता पासे वोलावी तिळक-माळा त्याग करवा फरमान्युं. जवावमां देवाभाइ विगेरेए कहुं के " माला तो गुरुदेवे शिर साटे बांबेळी छे. एट छे तेने तोडवानी सत्ता त्रिभुवनमां कोइने नथी एतो शीर जुदुं थाय तौज माळा पण जुदी थवानी " आथी हाकेमें गुस्से थइ हाथीना पग तळे छंदावी नाखवाना शिक्षा फरमावी, हुकमनो अमल थयो. हाथी लाववामां आव्यो. परंतु वैष्णवोने जोइने दृर नाठा. तुर्तज बीजा मदोन्मत हाथी लाववामां आव्यो तेने मावते अंक्रुशना पहार करी वैष्णवा तरफ हंकार्यी परंतु ते पण फर्यी अने जावा आवनारने चगदी नाखवा छाग्या. महमदने आ अजा-यबीनी कांइ समज पडी नहीं. 'क्षणभरमां ता तेने पण आ धार्मिष्ठ पुरुषे। तरफ पुज्य बुद्धि थइ अने सन्यासी

तरफ धिःकार छुटया, जेथी सन्यासीने पोतानी हद छोडी दइ चाल्या जया कहर्युं. वैष्णवीने मानभर घेर जवा रजा आपी पाते पोताना कार्यमां छागो गया.

आ अपमान थया पछी सन्यासी जहांगीर बादशाह पासे गया. त्यारबाद बादशाई श्रीगाकुलनाथजीने पोता पासे बेलाबी तिलक—माला दुर करवा कहुं, आपे तेम करवा ना कही विरोध बध्या. छेयट शास्त्रार्थमां आपनी जीत थइ. सन्यासीने देशनिकालनी शिक्षा थइ. इत्यादि पसंग अने थयेला शास्त्रार्थ श्री गोकुलनाथजीना माला पसंग नामक ग्रंथमां वहु विस्तारथी वर्णवेल छे एटले तेने अहीं फरीथी बर्णववा जहर नथी.

कहेवाय छे के श्रीगोक्कलनाथनी दररोन रात्रिना सेव-कामां भगवद् चर्चा करता तेमां श्री महापश्चनी तथा श्री गुसांइजीना अनन्य सेवकानां अलाकिक चरित्रोतुं निरुपण करता. ते मसंग दररोज घेर जइ एक वैष्णव लखी राखता. एक पसंगे श्री गोक्कलनाथजीए कहेली वार्ता फरी कहेवाना आदर कर्यो त्यारे ते वैष्णवे भस्तुत् वार्ता एक वस्तत कहेली छे. एम जणाव्युं अने पोताना कथनना पुरावानां पोता पासेना लेख वताव्यो. आ अलाकिक रहस्य लखाय ए आपने योग्य न जणा-वायी वार्ता कहेवी वंध करी. आपे लगभग पचीसेक नाना मेाटा स्वतंत्र ग्रन्थे। रच्या छे. उपरांत व्रज भाषामां एक लाख वचनामृतो छे एम पण कहेवाय छे. अने ते अत्यंत मननीय छे.

आपश्रीनी कुल १३ बेठको छे. आपने ३ लाछजी हता. तेमां द्वितियछ।लजी श्री गेविद्धनजी ने चार लालजी हता. परंतु अमुक कारणसर आपे श्री मुख्यीज निजवंश ले।प थवा आज्ञा करेली छे. अने ते मुजब अत्यारे आपना वंश मुतलपरथी अद्रश्य छे आपश्रीनुं चरित्र अन्यत्र विस्तार पूर्वक हे। बाथी अहीं मात्र दिग्-दर्शन कराव्युं छे. आपे भाषामां घोळ, पद पण घणां क्या छे तेमांथी जुज आ निचे आपवामां आव्यां छे.

पुष्टीमार्गना दश ममंत्रु पद.

पुष्टी मार्गतणा मर्म दश जाणीने;

नित्य आचरण करीने रुदे विचारे;
तो तेने वश थायरे श्रीहरि,

प्रेमनी बेलडी त्यां हां विस्तारे. १
प्रथम एक मर्म श्री महाप्रभु जाणीने,
विश्वास दृढ करी वचन पाले:

अवर साधन सर्व लौकिक कामनां. एहनी कृपा विना फलना भाक्रे. २ वीजो मर्म ते केवळ श्रीगुरु वाक्, विश्वास आचरणे करवं: जे जे वाणी श्री वहुभ उच्चरे. ते ते मन विचारीने मन धरवुं. ३ त्रीजो मर्म ते श्री कृष्णना नामनो, महात्म्य हृदे थाय सफल सारे: अनेक प्रकारना धर्मको उच्चरे, कोटी अंसे नहीरे भारे. ४ चोथे ते मर्म विश्वास आणी करी, प्रभुजी करशे ते अति रुद्धं; राधिका रमण श्री ब्रज बिहारी, हरि भजन करवुं अन्य जाणी कुडुं. ५ पांचमो मर्म श्री कृष्ण शरणागत, लोकवाद सर्व परित्याग भावे: निरपेक्ष भाव ते सर्वत्र परी पीए. त्यारे श्री कृष्णने द्या आवे. ६

छट्टो मर्भ ते केवळ नाथनो, सर्व परित्याग ग्रण गान करीए: गान द्वारा करी सर्व लीला खरी, श्री व्रजनाथने रुदे धरीये. ७ सातमो मर्म ते अंतर सेवा. वरणात्मक व्रजमांहे फरीये, भावनात्मक त्यांहां वपुरे पोता तणुं, सखी भावे थइ सह वरीये. ८ आठमो मर्स ते कीडा रस भावना, अंतरमां ते अनुभव करवो; जेम जेम सखी संग कोंडरे कीडतां, तेम तेम ते आचरवो. ९ नवमो मर्भ ते द्वेत सभावना. ताप कलेश रुदेमां लावे: जे फळ सदा वजसुंदरी भागवे, तेम तेम एउने अनुभव करावे. १० दशमो मर्भ ते दीनता भावना,

सर्व प्रकारे करी रुदे दुःख आणे;

अवर साधन नाहांना विध छे घणां,

कृष्ण कृपा विना कांइ ए न माने. १२

ए मर्न दश जे कोइ गायने अनुभवे,

तेहने श्री कृष्ण आधीन थाय;

श्रीमद वस्त्रभ निपट करुणा करे,

पाताना दासनी वांद्य साह्य. १२

वेठे हरिराधा संग कुंज भवन अपने रंग।
कर मुरली अधर धरे सारंग मुख गाइ॥
मोहन अतिही सुजान परम चतुर गुणनिधान।
जान बुझ एक तान चुकके बजाइ॥
प्यारी जब गृद्यो बीन शकलकला गुणप्रबीन॥
अति निवन रुप सहित वही तान सुनाइ।
वहाम गिरिधरनलाल रीझ दइ अंक माल।
कहत भये भलें लाल सुंदर सुखदाइ॥

श्री रघुनाथ लाल जी.

श्री ग्रसांइजी ना पंचमलालजी. श्रीरघुनाथ-आक्रिक लालजी जुं पाकटय संवत् १६११ ना कार्तिक श्रदी १२ ना मंगल ग्रहूर्तमां थयुं छे. आपना पाकटयना संबंधमां भगवदीय गोपाल-दासजीए श्री बल्लभारूयानमां गार्यु छे के:—

श्री रघुपति अति गज गति,

रति पति करुं बलिहार ।

जानकी जीवन ए सदा,

मधमणि रत्नम्य हार. ॥ आ सिवाय वथाइतुं बीज एक पद निचे मुजब गवाय छे. राग सारंग.

जयित रघुनाथ ग्रुणगाथ विख्यात, जीत पंडितनको शरन लीने । शास्त्र सब जान अभिमान कर व्रजभुवन, आयो मद गर्व सब खंडकीने.॥ कपट पट दूरकर प्रकट लीलाधरी, भक्ति नव भावयुत दशमि दीने; । जानकी रमण गुण कोन किव किह शके, सरस संगी सबे चित्तछीने ॥

आपने दायभागमां श्री गोकुळचंद्मांजी माप्त थया छ जे अत्यारे श्रीकामवनमां विराजे छे. अने ते श्री पंचमपीठ अथवा पांचमुं घर कहेवाय छे. आपना सम-यना आप एक अद्वितिय विद्वान हता. आपे अनेक विद्वाने।ने वादमां परास्त कर्यो छे श्री विद्वनमंडन ग्रंथ मां श्रो गुसांइजीए आपनेज मध्यस्थ निम्या हता एज आपनी महान विद्वतानी कसे ही हती, जेमां आप सर्वांगे संपूर्ण फळीभ्रत थया छे,

आपे संस्कृतमां घणा ग्रंथो रच्या छे. जे मुळ ग्रंथो अने तेना उपर टीका टिप्पण विवरण इत्यादि थइने केटलाक छपाइ मसिद्ध पण थइ गया छे. केटलाक उपर तो चार चार पांच पांच टीकाओ पण थयेळ छे. छतां पण इन्न विषेश विवेचन थवानो अवकाश रहे छे.

आपने त्यां (१) श्रीदेवकीनंदनजी सां १६३४मा. ग्रु. ७ (२) श्री गाेेेपाललालजी सां. १६३७श्रा व. ६ (३) श्री जयदेवजी सं. १६४५ मा. ग्रु. १२ (४) श्रो यशोदानंदजी सं. १६४८ चै. सु. ३ (५) श्री द्वारका-नाथजी सं १६५० भा. सु. १२ एम पांच बालको तुं प्राकटय यसुं इतुं.

आपना द्वितिय कुमार भी गेापाललाछजी एक वखत श्रीगोक्कलनाथजीना चाडा पर स्वार थइ ग्रजरात मां पधारेष्ठ ते वखते श्री गोकुलेशना भरूची सेवकोए श्री गेापाललालजीना सत्कारने बदक्के घोडानी मावजत करवा लागी गया, ते एटली हद सुधी के घाडानी छाद पेशाव अधर झीलवामां आवे, घोडाने सारां सारां पक वान्न खनराववामां आवे चमर थाय. मखमळना बीछाना थाय अने छेवट घाडानी आरती करवातुं पण चुक्या नही अने श्रीगापाललालजी माटे कांइ पण सगवड करवामां न भावी. आयी आप घणाज अप्रसन्न थया परंतु आ बनावधी आपे पण तेवा प्रकारना पाताना पण चुस्त अनन्य सेवको बनाववात्तं भनपर लोधुं अने त्यांथी काठी-आवाड वां पथार्या. अही छे।हाणा, दरजी, सोनी, छहार, अने केटलीक जातिना वाणीआ विगेरे जे वष्णवो इता ते बधा श्रीवल्लभ वंश्वमां समानता माननारा हता एटखे आपे कंसारा, वांब्रा (वणकर) अवोटी इत्यादी ज्ञाति-ओने श्वरणे कर पोतानो जुदो पंथ स्थाप्यो, तिककतो, श्रा गा इलनाय नीनी श्रष्ट जेवुं (बेडमीछिकिर) राख्युं परंतु कंडी घांसनी (झडा) बंधावी, तेळ कंकु इ यादि केटलीक किया पण भक्ष्वीओना जेवीज राखी अने जुदी सृष्टि स्थापी, भक्ष्वीओ जय श्री कृष्णने वद्षेष्ठे ज जे श्री गोकुलेश बोले छे, तेम आ नवीन सृष्टि अरस परसमां " जे गोपाछ" कहीने बोलाववा लागी.

कीर्त्तनमां पण प्रथमनां अष्टसखा इत्यादिनां बना-वेलां कीर्त्तनोमां अमुक फेरफार करी जुदां पुस्तको लखी काढ्यां. जदाहरण तरीके:—

श्री गोवर्द्धनलीलानां पदमांथी ''गोद बैठे गोपाल कहत व्रजरान सें।''ए पद मंदिरोमां गवाय छे तेमां आ प्रमाणे फेरकार कथीं के '' गोद बैठे गोपेन्द्र कहत गो-पाल सें। '' इत्यादि प्रकारे जुरी शाखा अत्यारे पवर्ते छे अने ते जेगोपालीयाना नामथी ओळखाय छे, तेओ पण शरण मंत्र अरसपरस वंटणवा द्वारा छेवदेव करे छे. अने भरुचीओ करतां पण कांइक विशेष महामभुजीना वालको भने वैष्णवोथी तटस्थ रहे छे आ शाखामां पण हवे कांइक पेटा भेद थवा लाग्यानुं जणाय छे. ॥ अथ श्रीगोकुलेशाष्ट्रकम् ॥

नंदगोपभूपवंदाभूषणं विदूषणं, भूमिभृतिभृरि भाग्य भाजनं भयापहम् ॥ श्रेनुधर्भ रक्षणावतीर्ण पूर्णविग्रहं,

नीलवारिवाहकांति गोकुलेशमाश्रये १ गोपबाल सुंदरीगणावृतं कलानिधिं,

रासमंडली विहारकारिकाम सुंदरम् पद्मयोनिशंकरादि देवबृंद वंदितं,

नीलवारिवाह कांति गोकुलेशमाश्रये २ गोपराज रत्नराजि मंदिरानुरिंगणं,

गोपबालबालिका कलानुरुद्ध गायनम् , सुंदरी मनोजभाव भाजनांबुजाननं,

नीलवारिवाहकांति गाकुलेशमाश्रये ३ कंसकेशि कुंजराज दुष्ट दैत्यदारणं,

चेंद्रसृष्टवृष्टिवारि वारणोक्ट्रताछलम्; कामधेनु कारिताभिधानगान ज्ञोभितं, निलवारिवाहकांति गोकुलेशमाश्रये. ४

गापिकायहांत ग्रप्तगव्य चैार्यचंचलं, दुग्ध भांडभेदभीतलजितास्य पंकजम्; घेनुधूलिधूसरांगशोभि हारन्परं, नीलवारिवाहकांति गाकुलेशमाश्रये वत्सधेनु गापबालभीषणास्य वन्हिपं, केकिपिच्छकल्पितावतंस शोभिताननम्; वेणुवाचमत्त्रघेष सुंद्रीमनोहरं, निलवारि वाहकांति गाकुलेशमाश्रये ६ गर्वितामरेंद्र कल्पकल्पितान्न भोजनं, शारदारविंदबृंदशोभि हंसजारतम्: दिव्यगंधळुब्ध भृंगपारिजात मालिनं, नीलवारिवाहकांति गाकुलेशमाश्रये ७ वासरावसान गोष्टगामिगागणानुगं, धेनुदोहदेहगेहमोहविस्मय कियम: स्वीयगाकुलेश दानदत्त भक्त रक्षणं, नीलवारिवाहकांति गाकुलेशमाश्रये ८

श्री द्वारकेशजी (भावनावाळा)

श्रीगुनांइजीना ३ मा लालजो श्री बालकृष्णलालनी ना पथम पुत्र अने श्री द्वारकांधीय (श्रीटाकोरजी) ना टीकायत श्रीद्वारकेश पश्चनं पाकटय श्रीमतिमात्रश्री

श्रीकमला वहुजीनी कुखे संवत् १६२९ ना वैशाख सुदी १४ (श्री नृसिंहजधंति)ना शुभ दिवसे श्री गोकुल्रमां थयुं छे. आपने बीजा पांचभाइ श्रो अने एक बेनीजी हतां. आपे संवत् १६३७ मां यज्ञोपिवत ग्रहण कर्या पछी विद्याध्ययन करी श्रीशुध्धाद्वेतनुं परिपुर्ण पालन कर्युं छे, तेमज श्री द्वारकांनाथजीनी सेवाना अवकाशमां एतन् मार्गीय ग्रंथो विचारवा अने लखवामां काल क्षेप करता.

आपनी सेाळ वर्षनी नानी वयमांज पितृचरण कीलामां पधारवाथी आप श्रीदारकांधीशनी गादीपर विराज्या अने संवत् १६४७मां श्री गोकुछमां, शय्या-मंदीरनी वेठकमां नवुं मंदिर वंधावी श्री-ने श्री गिरि-राजजीथी पथरावी आव्या अने नया मंदिरमां धाम धुमशी पाटोत्सव कर्यो, परंतु आ मंदिर निचे गुफा बनावी प्रथम एक योगी धुणी लगावी पंचारिन तापी तप करते। हते। आ योगी श्रीनाथजीनो एकांतिक भक्त हते। तेने त्यांथी खसेडी पाया नाख्या जेथी आ कृत्य श्रीनाथजीने रुच्यु नहीं, जेथी ज्यारे श्रीद्वारकां-धीशजीने राजभोग धरावे त्यारे तेमां कृमी पडी जाय. आ उपद्रव त्रण दिवस चाल्या एटले आ खबर काकाजी श्री गोकुलनाथजीने पहांचाड्या जेथो श्री गोकुलनाथजी त्यां पधार्या अने उपद्रव पत्यक्ष जोया एटले श्रीनाथ जीने पार्थना करी त्यारे श्रीनाथजीए आज्ञा करी के मारा भक्तना अपराध हुं केम सहन करी शकु? परंतु हवे उपद्रव न थतां शान्ति थइ जशे.

आपने श्री गोपालजी तुं संपुर्ण इष्ट इतुं जेथी आप अष्ट महर केशरी वस्त्र धारण करता तेथी श्री ग्रसांइजी आपने श्रीकेशरीयालालजी कहेता तेमज आप तुं माकटय श्री नृसिंह जयंतिना दिवस हो बाथी बोर्जु नाम श्री बागधोशजी हतुं.

अ।पने १ श्री अनिरुधळाळजी तथा २ जा श्री गिरिधरजी एम वे पुत्र तथा एक गंगावेटीजी नामे वेटीजी इतां. आप पुत्र माकटय समये कुळरीती अनुसार मंगळ स्नान-नंदमहोत्सव खुब आनंदथी करावता.

संबत १६६० मां श्रो गिरिधरजीने यज्ञोपवित

करीने आप सिंध प्रदेशमां प्रधार्या अने सेवामां जे कांड़ द्रव्यादिक प्राप्त थयुं ते सर्वे श्रीनाथजीने भेट करी दीयुं. एक वस्तत मेवाडाधिपती महाराणा जगत्सिहजी यूज यात्रा करवा आव्या हता, त्यारे तेओश्री द्वारकां-योशना दर्शने श्री गोकुलमां आव्या. दर्शन करीने वहु प्रसन थ्या एटले आपने जीज्ञास तरीके ५-७ प्रश्न पुछ्या. जेना आपे यथोचित्त जवाब आपवा साथे केटलीक वाबतामां धर्म संबंधे राणाजीना मनसुं घणुंज समाधान कर्युं, जेथो राणाजी प्रसन्न थइने आपने शरणे आव्या.

आपे श्रीगोकुछमां ७२ वर्ष विराजी श्रीनी अत्यंत भावपुर्वक सेवा करी तथा सेवा मकरण आदि भावना ना ग्रंथो लख्या, जे आजे पण " श्री द्वारकेशजीनी भावना" ना नामथी सुमसिद्ध छे तेमज व्रज भाषा तथा गुजराती भाषामां घणाज घोळ, पद, बनाव्यां छे नेमांथी थे।डां अहीं आपवामां आवे छे.

१ श्रीनाथनीतुं पदः देख्योरीमें इयाम स्वरुप । वाम भुजा उंचेकर गिरिधर, दक्षिण करकटि धरत अनूप; मुष्टिका बांध अंग्रष्ट दिखावत, सन्मुख दृष्टि सुहाइ.

चरण कमल युगल सम धरके, कुंज द्वार मन लाइ,

अति रहश्य निकुंजको लीला,

हृदय स्मरण कीजे;

द्वारकेश मन वचन अगोचर,

चरण कमल चित्त दीजे १

----(°)

२ श्री नवनीत वियाजीतुं पद.
नंद आंगन क्रीडत सुखद स्वरुप,
गार वर्ण दक्षिण कर माखण,
घुटरुन चलत अनूप,
वजयुवति प्रतिबन्ध नेक नहिं,
सव देखत उर लावे;
इारकेश प्रभुकूं ले गोपी,
तनको ताप न सावे. १

३ श्री मथुरेशजीतुं पद. सब व्रजको रस स्वरुप। चार भुजां चारोंकर आयुध, कमल स्वामिनी रुप॥ चक्र तेज चन्द्रावली जूको, शंख श्री जमुना जाणो। गदा कुमारी श्याम वरण,

> द्वारकेश मन आणा ॥३॥ ——(॰)——

४ श्री विद्वलनाथजीतुं पद देख्यो अद्भुत रूप सखीरी, सूर सुताके साथ। विवश भये देखकर सुन्दर, कटि पर रहि गये होउ हाथ॥ ताते गार चित्र स्यामल तन, कहत न आवे गाथ। द्वारकेश प्रभु यहविध देखी, में तो करलियो जन्म सनाथ॥४॥ ५ श्री हारिकांधीशजीतुं पदः
अज हरि बिहरत कुंज निकेत।
दुरि मुरि आय युगलहग भीचे,
प्यारी जि उपज्यो अति हेत॥
हस्त कमल तारीदे मोहन,
दोउ भुज रस उर लेत।
हारकेश प्रभु स्याम वरण वपु,
अद्भुत भलो बना संकेत॥५॥

६ श्री गोक्कनाथजीतुं पदः

त्रजपति तुम विन के।न करे।

उत मघवाको मान भंग कर,

इत त्रज गोपिन गोप भरे॥

वेणु वजावत करपर गिरिवर,

वाम भुजा ले शंख धरे।

द्वारकेश प्रभु गौरवर्ण वपु,

निगम प्रशंसित विपद हरे॥६॥

----:(o):----

७ श्री गोकुलचंद्रमाजीनं पद.

अंग छिब निरखत लजत अनंगे।
दरण किट श्रीव कूं निमतकर,
नन्दसुत देतरस दीन लिलत त्रिभंगे॥
पृष्टिपथ स्थाप मर्याद उहुंघकर,
चिन्ह प्रकृटित विविध अंग अंगे।

प्रेम आसक्ति स्नेह मूर्छा विवशः

विविध परिवेशजीये वेणु संगे ॥ इयाम सुकुमार तन चितवन ललित, अवनिपर लटक जब चलत तब मान भंगे। परम मोहन द्वारकेश प्रभु मधुर अति, गोकुलाधिश उछलित तरंगे॥७॥

८ श्री मदनमोहनजीनुं पदः

वेणु बजावत सुंदर बदन । सुनत ही ते दौर आई, पूछत है कयों छांडे सदन ॥ धर्म छांड निज धर्म कियो हम, तुमकयों गार भये नंद नंदन। इारकेश हम सब जानत न्याय, कहत हो मन्मथ कंदन॥८॥

> मूळ पुरुष प्रारंभ, राग विञावळ.

मुळ पुरुष नारायण यज्ञ,
श्रुति अवतार भये सरवज्ञ;
शास्त्रा तैत्तरीय गोत्र भारद्वाज,
तैलंगकुल उदित द्विजराज
(छंद) द्विजराज तें हरि आय प्रकटे,
सोमयज्ञ कीयों जबें;
कुंडतें हरि कही बानी, जन्मकुल तुद्धारे अबें.
चिक्त ततक्षण भये सबजन,
पसी अबलों भइ कबे;
सुनतही मन हरख कीनो,
धन्य धन्य कह्यो सबे १

तिनके पुत्र भये गंगाधर,
तिनके गणपित सुत वहुभवर.
श्री लक्ष्मण भट्ट अनुभव टेव,
शुद्ध सत्व ज्यों श्रीवसुदेव;
(छंद) सत्वगुण विद्या पयोनिधि,
विशद कीर्ति प्रकटइ;
गाम कांकरवारमें रही,
जाति सब हरस्वित भइ.

पर्व पर सकुटुंब लेकें, चले प्रागकुं साथ ले; स्नान दान दिवाय द्विजकुं, चले काशी पातले. कल्लुक दोन रहीके चले सब दक्षण,

आनंदीत तनु सकुन सुलक्षनः चंपारण्य महीं जब आये, एलमागारु गर्भ, श्रवित जताये.

(छंद) श्राव जानि तहां तें, नगर चौडा में बसे; जगतमें आनंद फेल्यो, दश दिशा मानो हसे. चेन हे सुनिचले काशी, फेर वहि बन आवहि; अग्नि चैंाधा मध्य बालक,

देखी सनमुख धावहि. ६

मारग दियों जानी जीय माता,

लिये उच्छंग मोहे दियोहे विधाता;

तात सुनत दौरी कंठ लगाये,

तिहि छिन मंगल होत बधाये.

(छंद) मंगल बधायो होत तिहुंपर,

देव दुढुंभी बाजहि;

जोतसाको लग्न पूछत, प्रथम समयो साधही.

धन्य संवत् पंद्रहा, पंतीस माधव मासहें;

कृष्ण एकादशी श्रीवस्त्रम,

प्रकट वदन विलासहे. ४

श्रीवल्लभकुं ले आये काशी,

सुंदर रुप नयन सुखराशी;

सात वरस उपवित्त धराये,

तबते विद्या पढन पठाये.

(छंद) पढे चारु वेद अरु,

खटशास्त्र महिना चारमें;

तातकुं अचरज भयो, यह कोन रुप विचारमें. नींद आइ कह्यो प्रभु, संदेह क्यों तुम करतहों. प्रथम बानी भइहे सो,

प्रकट जानो अब भयो. ५

जागपरी कह्यो पत्नि आगें,

ये हें पूरण ब्रह्म अनुरागे;

श्रीमुख बचन कहे श्रीवछम,

माया मत खंडन भये सुह्रभ.

(छंद) सुलभन्नें दक्षिण पधारे,

ग्यारे वरसको वपु धरें;

देख मामा हरखकें, आदर कीयो आवो घरें.

विद्यानगर कृष्ण देवराजा,

बहुत मतही जहां मीले;

जीतकें कनकाभिषेकसुं,

पढे आवत इहां पहिले. ६

रामानुज अरु मध्वाचार्य,

विष्णुस्वामी निमादित्य हरिभज; शंकरमें अनुसरत ओरमत. युक्ति बळतें आज सबळ अति. (छंद) सबळ सुन आपुही पधारे,

द्वारपें पहुंचे जबे;

श्रत्य दैं।री प्रताप बरन्यो, राय आवो इहां अबे, राय आय प्रणाम किना, सभामें जु पधारियें; सुनहो बिनती कृपासागर, दुष्ट मतहि विडारीए. गज गति चाल चले श्रीवस्लम,

इनकी कृपा भये सब सुलभः रिवके उदय किरण ज्येां बाढी, तैसी सभा पांत उठी ठाडी.

(छंद) ठाडे सब स्तुति करे जब,

किया मायामत खंडन; शब्द जे जे हात सब मुख,भक्ति पंथ भुव मंडन स्तुति करें द्रिज हाथ जारें

राय मस्तक नावही;

परम मंगल होतहें, कनकाभिषेक करावहीं ट पाछे जलसों न्हाय विराजे,

विनति करी रायें मन साजे;

द्रव्य सबे अंगीकृत करिये, प्रभु बोले यह नांहि प्रहिये.

(छंद) यहिये न हिन स्नान.

जलवत् बांट सबको दीजीये; बांट दिना करी बोनती, माहि शरण जु लीजीए.

क्रपा करके शरण लीनो, थार भरी महोरे धर्यी;

सप्त लेकें कह्यो देवी, द्रव्य अंगीकृत कर्या.

तहांते पंढरपुरजु सिधारे,

श्रीविद्वलनाथ मिलनकां पधारे;

भीमरथीके पार मिले जब,

देाउ तनमें आनंद बढ्यो तब.

(छंद) बढयो आनंद करी बीनती,

आपकेां यह श्रम भयेां;

कही श्री विद्वलनाथजीने मित्रता पथ प्रगटिया. फेरी श्री गाकुल पधारे, निरख यमुना हरखहीं;

फरा श्रा गाकुलपंचार, ानरल यमुना हरलहा; संग दमलादिक हते. तिनपें क्रुपारस बरखहीं. एक समे चिंता चित्त आइ.

देवी किहिंबिध जानी जाइ.

आसुरीसेां सब मिलित सदाइ.

भिन्न होय से। कोन उपाई.

(छंद) भिन्नको जब चित्त धर्या.

तव प्रभु पधारे तिहिं समें.

मञ्र रुप अनंग मे।हित. कहत सुध कीने हम

करे। अबतें ब्रह्मको संबंध देवो सृष्टिसां.

पांच देश न रहे ताके. निवेदन करे। बृष्टिसों.

वचन सुनी हरखे श्रोवहाम,

यह आज्ञा ते परम अति सुलभः कंठ पवित्रा ले पहेराये.

मिसरी भोग धरी मन भावे.

(छंद) भयो भायो चित्तका तब,

पुष्टि पथकुं अनुसरे;

शरण जे आवत निरंतर, काल भयतें ना डरे. प्रकट सब लीला दिखावत.

नंद नंदन जे करी,

अवनिषर पद पद्म राखी, परिक्रमा मिष उर धरी.

फेर पंढरपुर जब आये, श्री विष्ठलनाथ कही मन भाये;

करि विवाह बहु रुप दिखावा, मेरा नाम सुवनका धरावा.

(छंद) धरे। चित्तमें बात यह,

काशी विवाह जु होयगो;

में कह्यो द्विज आय बीनती, करे चरण समायगा:

आय वहांते विवाह कीया,

अधिक मंगल तब भयो;

नाम धर्यो श्री महालक्ष्मी,

देखी जारि दुःख गयो, १३

परिक्रमा त्रीजी चित्त आइ,

निकस चले श्री वहुभराइ;

झाडखंडमें प्रभुने जताइ, अबके मोहि मिलेा मनभाइ. (छंद) मिलेंगे हरिदासपें,

जहां तीन दमन कहावही; इंद्र नाग जु देव दमन,

सौ मेरा नाम जतावहीं.

फेरके जब वृज पधारे, पांच सेवक संगहे, सद हे आन्योरमें, तहां द्वारपें ठाडे रहें.

सद्र कहे स्वामि क्छू खेंहे,

मेघन कहि सेवकको लेहें,

इतने प्रभु गिरि उपर बाेले.

लाइ नरा दूध अनवाले.

(छंद) बाली नरेा यह पाहुने,

आये तीनहीकां बेठारिये.

प्रभु कहत माहे बेर लागत,

भली चित्त बिचारीधे.

ले गइ पय प्याय आइ, देख श्रीवल्लभ कह्यो; बच्यो हें कछु हमें दीजे, बेाल पेहेलोंहि गह्यो. देख नरा बाली हां वारी.

नाम दीजीये गर्व प्रहारी.

नाम दीना पूछी वे कहां हे, कहि पर्वतपर जाओ तहांहे.

(छंद) तहां देखे प्राणपति तब,

ूहुलिस देाउ तन फुलही,

वही समें सुख कहि न आवे,

पंग्र गति मति भुलही.

हिंस कह्यों सकुटुंच आवा, निकटरही सेवा करे।; मानी वचन प्रमाण कीना,

सासुरे दिश पग धर्या.

कळुक दिन रही संगले आये,

बसे अडेलमें निज हरखाये;

संवतपंद्रहा सडसठ आयो,

आसे। वदी द्वादशी शुभ गांयो.

(छंद) गायो श्री गापीनाथजी,

जब जन्म लीने। आयकें, जानि बलको रुप हरिखत, देतदान बढायके. फेरकें चरणाट आये, कल्लुक दिन रहें जानके, धन्य संवत् पंद्रहा, धन बहोतरा शुभ मान कें. पेष कृष्ण नामी जब आइ,

घर घर मंगल होत बधाइ;

श्री विद्वलनाथ जन्म भयो सुनिके,

कहत फिरत आनंद गुणगनिके,

(छंद) आनंद बाढयो चहुं दिशा,

छिब देख श्रीवल्लभ हसे;

वेउ कछु मुसकाय चितये,

देाउ हसन मेरे मन वसे.

तिलक मृगमद छिप्या हरिवत,

कहांळेंा गुण गाइए.

क्रुपातें उछित निजरस, छिपत नांहि छिपाइए श्री गाकुलमें वास सुहायो,

रुक्मिणी पद्मावती पति गायेा; श्रीगिरिवरधर जिनहीं छबीलो,

श्रीनवनीतप्रिय अरवीलो.

(छंद) प्रिय श्री मथुरेश श्री विष्ठलेश श्री द्वारकेशजुः

श्री गावर्द्धनघर श्रीगाकुलचंद्रमा श्रीमथुरेशजु.

श्री मदन मोहन अष्ट इहि विधी, रमण श्री विद्वलनाथके, तातका चित्त जानी सेवा, विस्तरी सब साथके. पंद्रहसें सत्ताणुं कार्तिक,

विमळ द्वादशी मंगळ नित ढिगः प्रथम पुत्र प्रगटे श्रो गिरिधर, षटगुण धर्मी धर्म धुरंधर. धुरंधर ऐश्वर्य गावींद पंचदश नन्यानवेः उर्ज शामल अष्टमि शुभ,

युरु सुदीन प्रकटे जबे; रूतु वियत शंगार आश्विन, असित तेरस भ्राजही

श्री बालकृष्णजी महा पराक्रमी, वेसुख साले राजही.

किवसह सुदि सातें श्रीगाकुलपति, यद्दा स्वरुप माळास्थापित रती सारहसें अग्यारह कार्तिक सित अर्क बुध रघुनाथ श्रीसहित. (छंद) हेतु निज अभिधान प्रकटे,

तात आज्ञा मान के तिथी कला बुध मधु छठ विमल ज्ञान वखानके श्री यदुनाथ प्रकटे रह्यो

विरह श्री घनइयाम स्वरुपके सह कृष्ण तेरस रविज रिक्ष

सत कळा श्रीविष्ठसमुपके ॥ २१ भामिनी रानी कमळा बखानी

पारवती जानकी महारानी कृष्णावति मिलि साते। कहाये

यह अलौकिक रूप महा ये महा अलौकिक अग्निकल

सव अलौकिक अष्ट छापहे अलौकिक सव भक्तजन जो शरण लीने आपहे यथामति कछु वरनिआइ जानियो यह दास हें श्री द्वारकेश निरोध मागे यही फलकी आस हें श्री महामभुजीना माकटयनुं घोळ तत्त्व ग्रण बाण भुवि माधवासित तरणी प्रथम भागवत दिवस प्रकट लक्ष्मण सुवन धन्य चंचारण्य बन त्रिलेाक जन

अन्य अवतार होय न एसो भुवन लग्न वसु कुंभ गति केतु किन इन्दु सुख भान बुध उच्च रिव बेर नासे मंद वृष कर्क ग्रह भाम युत तम सिंधे योग ध्रुव करण बव यश प्रकाशे रिष्ट धनिष्टा प्रतिष्टा अधिष्टान बदनानलाकार हरिको.

एहि निक्चे द्वारकेश इनकी शरण और श्रीवस्त्रभाधिश शरको.

----o)-(o----

श्री गुसांइजीना माकटय समयतुं पद. राग सारंग

चक्षु मुनितत्त्व विधु सहस भृगु असित निधि जाँम गुण समय भुवि प्रगट वस्त्रभ तनुज धन्य चरणादि धन्यधन्य देवी भाग्य सकल सोभाग्य गापीश भ्राजत अनुज १ लग्न वृष मिथुन ग्रुरु सहज गत राहु

शुभ चंद्र पंचम सुत स्थान राजे, भोम कविमंद बुध भाँन युत

वसूधर्म यहकेतु संकेत साजे. २ हस्त शोभन याग करण तैतिल,

धरत वर्ण नीरद अंग रूप साहें: इारकेशाधिपति श्रीविद्यलेशाधीश प्रभुनन्द सुत प्रीतिकों ओरको हें.

आश्रयनां पद.

आसरा एक श्रीवल्लभाधीशको

मानसी रीतकी मुख्य सेवा व्यसनः लेक वैदिक त्याग शरण गोपीसको. आसरेा. दीनता भाव उद्बोध अरु ज्ञानरसः,

घेाषतिय भावना उभय जाने; श्रीकृष्ण नाम स्फुरे पलन आज्ञा टरे, कृत वचन विश्वास मन चित्त आणे. भगवदी जानि सत्संग कों अनुसरे, न देखे देाष अरु सत्य भाखे. पृष्टीपथ मर्म दसधर्मयह बिघि कहे, सदा चितमें श्रीद्वारकेश राखे.

प्रात समे स्मरं श्रीवहःभ

श्रीविद्वलनाथ परम सुखकारी.

भव दुख हरण भंजन फल पावन कलिमल हरण प्रताप महारी.

शरण आये छांडत नहीं कबहुं बांह गहेकी लाज विचारी.

त्यजा अन्य आश्रय भजा पद पंकज द्वारकेश प्रभुकी बलीहारी.

श्री जम्रुनाजीतुं पद राग रामकली. जयति श्रीयमुने प्रकट कल्प लतिके. अष्टिबंघ सिद्धि अद्भुत वैभव सकल

स्वजन विख्यात स्वाधिन पतिका. केलिश्रम सुरत पयरुप व्रजभूपको पुत्र पयपान दे विश्व माता. अंग नूतन करत पुष्टी तब अनुसरत त्रिदल रस केलिकी अमित दाता. रहत यम द्वारतें मुक्त सुख चारतें नाम त्रय अक्षर उच्चार कीने. उभय लीला विष्ट व्रज प्रिय कुमारिका तुर्या प्रिया वदत रश रंग भीने. अनांवृत ब्रह्मतें सदावृत वहें रही कनक छाया विटप शामवही. सदा प्रफूछित द्वारकेश अवलोकके. नित्य आनंद आभीर पह्ली.

श्री ठाइरजीनी चारी. शाम सखी सर्वे अंगको चोर. नेन चेार चेारत मन सबको, अवर अधर रस ओर ओर. १ चारत चपल पराया गारस,
छीपत रहत ब्रज ठार ठार;
चीतवनी चार चार सब संगी,
हसत फीरत मन पार पार. २
आलीरी मेरा सर्बे चोर लीना,
यार्थे कछु ना जार जार;
श्रीहारकेश कछु ना छुए ते,
करत नंद्रें शार शार. ३

श्री ठाकोरजी तथा श्री स्वामिनीजीना चरण कमछना चिन्हना भावनुं पद.

जुगलमें जुगल जुगलके नाम.
चाप त्रिकोण मीन गापद नभ
अर्द्ध इंदु घट बाम. १
जंवू ध्वज रेखा अंकुश यव
स्वस्तिक वज्र सराज;
अष्टकोण ये दक्षिण राजत
देखत लजे मनोज. २

इत हे अंकुश छत्र चक्र ध्वज इंदिवर यव रेख:

गदा अंबुज रथ कुंडल बेंदी

रैोल शक्ति झख देख. ३

ब्रह्मादिक सनकादिक शंकर

ध्यान न आवत जेव;

ते ई श्रीबछभ प्रतापतें द्वारकेश नित्य सेव. ४

---:(॰):----हींडोरानां पद. राग सोरट.

लचक लचक झुले चमक चमक जात, खचीत रचीत साहे चटुली थहेरीया; लरज लरज अवे दामीनी सोहाइ लागे, गरज गरज घटा आइहें छेहेरीया. हरख हरख गावे परख परख रीझे भीजे, द्रारकेश सांघे महेर महेरीया; फहरे फहरे करे प्यारेको पीतांबर, लहेर लहेर करे प्यारीको लहेरीया.

सफेद घटानुं---पद राग काफी हेरि सखी शरद चांदनी रात, घटा छिटक रही लटकसेां. रंग सावन मास हिंडोरे: हेरी सखी इवेत हिंडेारे। शोभा देत. न्टवर झलत उंमगसो—रंग १ हेरी सखी काछनी परम रसाल, पहेरे सबग्रन आगरे. रंग २. हेरी सखी देखन सब मीलजाय. चला जूथ जूरी आगरी. रंग ३ हेरी सखी देखा सुंदर इयाम, सीस मुकुट हीरा सोहही. रंग ४. हेरी सखी कुंडल मकराकार, कोटी कीरण रवी गुंगरी. हेरी सखी श्वेत हिंडोरो देख, श्वेत खंभ देाउ राजही. रंग ६ हेरी सखी श्वेतिह मरवा मयार, डांडी कलसा राजही. रंग ७

20

हेरी सखी आइसवे व्रजनार,
नँद नंदनके दरशको. रंग ८
हेरी सखी सावन घटा शोहाय,
तामध्य बीज़्री चमकही. रंग ९
हेरी सखी द्वारकेश झुलाय,
गिरिधर पीय मुख नीरखही, रंग १०

___(c)___

गाय खिलाववानुं—पद राग—सारंग

गाय खिलावन चले गापाल वागो सेत तासको पहेरे,

गोकर्णकृति छोगालाल ॥ १ करहरात पीतांबर करमें,

दुरिमुरि देखत सब वृजवाल ।

चोरी धुमरी काजर पीरी

गाय बुलाई टेरत ग्वाल ॥ २ जाको बछरा ताहि दिखावत.

अरवराय देारी तिहिकाल।

हसत परस्पर द्वारकेश प्रभु अति आनंदित गोप गुवाल ॥ ३

---(°)----

भवोधिनि-राग विलावल

आज प्रबोधिनी देव दिवारी। वागो अतलहा पीरो सोहे,

आभूषन कुलहि सिरधारी ॥ १

बाबानंद जगाय देवके,

कीनी तुलसीकी पूजारी।

करि विवाह निरांजन करके,

सब द्विजकेांदीनी दछनारी ॥ २

तबही जसुमति कह्योबधुनसां,

आज रात जागरनकी तैयारी। यह सुनि बोले द्वारकेश प्रभु,

हमहू रात जगे भैयारी ॥ ३

सेवा प्रकरणमां भावनान, विश्विप्त गुढ वर्णन, ——(॰)—— राग—कान्हरो

एक अनुपम अद्भुतनार । त नवन (?) चोवीस चोगुने

सारह चरन बदन हे चार ॥ १

चतुराननसा प्रतीति नियति

ताको इक रस दूने नेन।

इयाम श्वेत आरक्त हरित,

पद चलत तबे बोलतहीवेन ॥ २ राजस सास्विक तामस निर्धण,

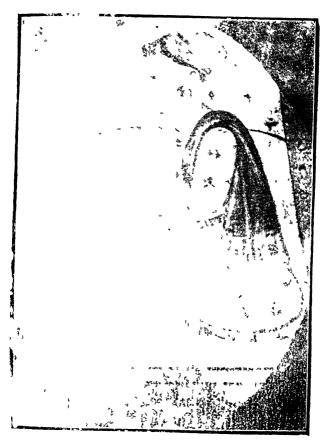
एक युग्म द्र्शनको आवत ।

मग्न भये सायुज्य मुक्तिफल.

त्रिविध रूप देखे सचुपावत ॥ ३ इह विध खेल रच्यो त्रज मंडल,

दीप दिवारो प्रगट दीखाई । नुर्य रूपके यूथ विराजत, छवीपर द्वारकेश बलजाई ॥ ४

श्रोशुद्धाद्देत भक्ति प्रवर्त्तक सस्ती ग्रंथमाळा.



श्री हरिरायजी ,मा. सं १६४७ ना भादरवा वद ५



श्री हरिरायजी (रसीक)

श्री ग्रह्मां इजी-श्री विद्वन्नाथजीना द्वितिय कुमार श्री गोविंदरायजीना पुत्र श्री कल्याणरायजीने शुभग्रहे संवत् १६४७ ना भादरवा बद ५ ना मंगल मुहूतमां श्रो हरिरायजीनुं भाकटय थयुं छे.

आप वाल्यावस्थाथीज अति कोमळ अने दयाळ स्वभावना हता. उपवीत ग्रहण कर्या पछोतु पाथमिक शिक्षण पितृ चरण श्री कल्याणरायजी पासेथी मेळव्युं हतुं. अने ब्रह्मसंवंधनुं दान श्री गोकुलेश पशु पासेथी लीधुं. तेमज विशेष भागे श्री गुरुदेव-श्रीगोकुलेशनीना सहवासमां रही एतन मार्गीय ग्रन्थोनुं अध्ययन करता.

वास्तविक भगवदु वार्तानुं स्वरुप!

ु आपने श्री भगवद् वार्ता करवानुं अनहद व्यसन हतुं. जेथी आपना अंतरंग सेवकोने लड़ने हमेशां श्री भगवद् वार्ता करवा विराजता अने एकांतिक भक्तो साथे पशु लीलाना गुप्त रहस्यनी चर्ची करता जेमां केटलीक वखत रसावेशमां मस्त थइ जता अने गादीपर हळी पडता एटले भगवदीयो उठीने चाल्या जता. कोइकोइ तखते आप तिरहाकुळ थइ चक्षुथी अश्रु वर्णावता अने बे, बे-त्रण, त्रण दिवस सुधी एकांतमां गाळता. आवो मकार जोइ एक वैष्णवे श्री कल्याण-रायनी पासे जड़ निवेदन कर्यु. जेथी श्रीकल्याणरायजीने फीकर थड़ एटले पासे बोलावी कर्युं के "एवा प्रका-रनी भगवद् वार्ता न करवी जोइए के जेमां देहानुंसंधान पण न रहे. वेष्णवो साथे तो प्रमाणसर वार्ता करवी जाइए. ' आ सांभळी आप चुप थइ रह्या, परंतु भगवद् वार्तानो समय थतां प्रथमनी माफकज मञ्ज-लीला-रस-सागरमां निमरन थइ गया-रसावेशमां मत्त थइ गया. आ खबर श्रीकल्याणरायजीने थवाथी जे बेठकमां आप विराजता हता. त्यां पधार्या अने वेष्णवोने रजा आपी बेठक बंध करी पाळा पोतानी बेठकमां पधारीगया.

आ वखते श्री हिरिरायम्भुने भारे विरह थयो.

पश्च संबंधी विरह एटले अलैकिक अग्नि. आपनी
अलैकिक विरहाग्निए एकदम देदिप्यमान रुप ग्रहण
कर्यु तेना प्रकाशमां बेठक शुद्धां प्रकाशित थइ गइ. आ
अचानक एकदम तेज पुजशी श्री कल्याणरायजीए
आपनी बेठक खोली नाखी के अंदर एक तेजनो गोलो
जावामां आव्यो. तुर्तज श्री कल्याणरायजीना नेत्रमांशी
हर्षनां अश्च-विंदु सरी पडयां गद्गद् थइ विनति करी

क्षमा मागी. आप श्रीपित चरणना चरणमां लोटी पडया श्रीकल्याणरायजीए आज्ञा करी के हवेथी आपने योग्य लागे ते प्रमाणे वर्ती हुं कांड्पण कडीश नहीं

मिय भगवदोओ! आ प्रसंगथी कोइए एम समजवानुं नथी के श्री हरिरायजी श्रेष्ट! अने श्रीकल्याणरायजी न्युन हता. नहीज! (आत्माना जायते पुत्रः) पिता
पुत्र एकज रुप छे. परंतु आ प्रसंग वैष्णवोने वोध छेवा
माटे आपे उपस्थित कर्यो हतो. आथी आपे वताव्युं हतुं
के आनुं नाम ते प्रभु विरह! अने आवा प्रकारनो विरह
ताप थवो तेज पुष्टी मार्गमां प्रभु मेळववानो मुख्य मार्ग!
श्री हरिरायजीए करुणा करी जीवने आ प्रसंगथी स्वमार्गनुं सिद्धांत समजाववा प्रयन्न कर्यो छे. तेनुं गुढ
तात्पर्य तो जे आपना महानुभावि अंतरंग सेवको हता ते
समजी गया दरेकने एक सरखो अधिकार होतो नथी.

वैष्णवो आपना श्रीमुख्थी श्री भगवद् वार्ता सांभ-ळ्या पछी वहार जइने एक चेातरापर वेसी तेनी चर्चा करता आ चर्चा मसंगे एवो आवेश आवी जता के वैष्णवो देहानुंसंधान भुली जइ कोइ हसवा, कोइ रोवा, कोइ नाचवा, अने कोइ मुक्तवत् बनी जता. आ चेातरा नजीक कोइ एक अन्य मार्गी रहेता हतो ते मार्डी राते आ वनतो बनाव जाइ भुतावळ थवानुं मानी हरतो. आथी तेना एक मित्रे वधी बीना जाणी छइ
तमाम वर्तमान श्री हरिरायजीने निवेदन कर्या. जेथी
आप एक वखत रातना गुपचुप ते चेतिरा नजीक जइ
जुए छे तो समग्र मंडळी रस सिंधुमां गरकाव थइ गइ
छे, अने वचमांश्री गेावर्द्धननाथजी बिराजमान थइ वंसी
वजावी रह्या छे. आ इक्य जोइने आपनुं हृद्य भराइ
आव्युं अने निचेनुं पद गायुं. "हों वारी इन वछभीयन
पर " जुओ पद आठमुं. पछी आपे पहेळा अन्यमार्गीने
रहेवा माटे अन्य सगवड करी आपी. अने मुळ जग्याने
पश्च विनियागमां लीधी.

निष्कंचन सेवा काने कहेवी?

एकवार आप सिंधमां पथार्या त्यां एक शहरमां आप पधार्या त्यारे त्यां एक निष्कंचन वैष्णव मजुरी करी निर्वाह चलावतो हतो तेणे कांइक शुभ आज्ञार्थी एटले पश्चने कोइ वस्तते विनियोग थइशके तेवा हेतुथी पाइ-पैसो करीने रुपीआ वे एकटा कर्या हता. ज्यारे आप पधार्या त्यारे अन्य वैष्णवोने त्यां पधरामणीओ थती ते जोइने तेमनी इच्छा पण आपने पथराववानी थइ, परंतु अन्य वैष्णवो तरफथी थती भेटनी रक्षमो जोइने तेमना विचारो शान्त थइ जता.

परंतु मनमां ताप-क्षेश बहु थाय. रात-दिवस एकज शोच के जा पशुए मने पुष्कळ द्रव्य आप्युं होत तो हुं पण आजे आ अमुखो रहाव छेत. वैष्णवोना खरा दिल्थी थतो आर्तनाद पश्चना लक्ष बहार जता नथी. एढळे आ साचाःभगवदीनी इच्छा पश्चए जाणी अने पूरी पण करी. एक दिवस आप ते वैष्णवने घेर पथार्या अने वे रुपिआ सेवामां मागी छीधा. आ बनावथी पहेल्ला वैष्णव तो प्रेम घेला थइ गया अने नाचवा लाग्यो. देहनुं भान पण रहां नहीं. आप एक कंतानना थेळा उपर विराजी गया परंत्र आ निष्कंचन वैष्णवनो प्रेम जोइ आनंद मग्न थइ गया अने ते वैष्णवना भाग्यनी सराहना करता करता स्वस्थानके पधार्या अने ते वे रुपिआनी सामग्री सिद्ध करावी प्रभुने आरोगावी. महापसाद रात्रे भगवद मंदलीमां वांटी दीधा. जे जे भगवदीओए आ महा-पसाद लीघो इता ते तमामने रात्रे स्वप्नमां महा अली-किक अनुभव थया.

मेम ए एक न्यारीज वस्तु छे. लक्षाधीपति इजारो रुपिआ धरे छतां तेने श्री-मद होवाथी ते मञ्जना साक्षात् विनियागमां न आवे. परंतु जा कोइ गरीब छतां शुद्ध मेमथी रंचक सेवा करे ते पण मञ्ज मेमथी स्विकारे छे. माटेज सुरदासजीए कहुं छे के:—

^{&#}x27;' राइ जितनी सेवाको फर्छ मानत मेरु समान "े १२

आपनी, श्रीमहाप्रभुजीना स्वरुग्मां अ यंत आसक्ति हती. अहर्निश एमना स्वरुपनो विचार कर्यो करता. अने जे समये जेवुं स्वरुप जणाय ते वखते तेवुं पद वनावीने बोळता. आवा प्रकारना दीनता-आश्रयनां आपनां बनावेल घणा पदो छे. आप संस्कृतना प्रगाह पंडित हता आपना अनेक ग्रन्थो विद्यमान छे. तेमांथी लगभग दोहसो उपरांत मुद्रितथइ गयाक्रे. हजु अनसिद्ध पण घगां छे आपे पोडश ग्रन्थ उपर टीका पण करी छे. अने संस्कृतमां पद रचना पण करता जेमां पोतानी र्गनता दर्शाववा " इरिदास " छाप रुखता आपनुं क्रिक्षापत्र तो नित्य नियमसर गामे गाम दरेक भगवद मंडलीओमां वंचाय.छे भाषामां पण दश-बार ग्रन्थ गय लखाणना इरो.सिवाय ब्रजभाषा कान्यमां आपनुं साहित्य एट हुं वर्ष छे के जेनो एकत्र संग्रह करवाथी एक दळ-दार पुस्तक वने. अमोए आ पुस्तकमां पण लगभग ८० पानां मथम भागमांज रोक्यां छे. वाकीना अमारी पासे भाटो संग्रह छे ते आ पुस्तकना बीजा भागमां आपवामां आवशे जेनी अंदर आपनी बनावेल-धमार कीरीन इत्यादीनो पण समावेश थशे.

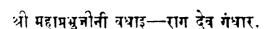
अत्ये भुतलपर १२० वर्ष जेटला दीर्घ समय पर्यत विराजी बैष्णवोने एतन् मार्गना रहस्यनुं घणुंत गुढ तत्त्व समजाव्युं छे. आपना सेवको पण महा समर्थ हता एवं केटलाक प्रमंगा परथी जणाइ चुक्युं छे. आप भाषामां रसिक छाप राखता. आपनी सात बेटको अत्यारे प्रसिद्ध छे. आपनुं चरित्र यथा स्वरूपमां लखवामां आवे तो एक स्वतः ग्रन्थ लखाय परंतु अत्र स्थानाभावथी मात्र परिचय आपीनेज संतोष मान्यो छे.

आ पुस्तकना सम्पादकनी अनुभवी भगवदीया प्रत्ये विनति.

संवत् १९६१ थी संवत् १९६४ दरिमियान एक समय श्री गिरिराजनीमां मने श्री महलाल नीना वयो-दृद्ध मुखिआनीए वार्ता मसंगमां कहेल छे के, धेाळ, पद इत्यादिमां, गोस्वामी बालको तथा वहु बेटीनीओए जुदां जुदां उपनाम धारण कथा छे. तेमां श्रोहरिरायनी रसिक, श्रीकोभामानी— हरिदास (तेमने श्रीहरिरायनी छे ब्रह्म संवंध हतुं.) श्री गिरिराजवाळा श्री द्वारकेशनी रसिकदास तेमना पुत्र श्री महल्लालजी—रसिकदासनन इत्यादि छापथी मसिद्ध छे. (श्रा सिवायना बीजा बालकोनी पण जुदी जुदी छाप छे.)

परंतु अत्यारे वैष्णवोमां मोटे भागे एवी मान्यता छे के, '' रसिकदासजन '' छाप आवे छे. ते श्री मटु-ल लजीनां पद छे, अने बाकीनां रसिक के रसिकदास इत्यादि छापनां तमाम पद श्री हरिरायजीनां बनावेलां हे. एटलुंज नहीं पण रसिक ितमनी छाप पण श्री हिरायजीनीज छे. जेथी अमोए अहीं विशेष विवादमां न उतरतां. रसिक-रसिकदास-रसिक ितम-रस सिंधु इत्यादि छापवाळां पदनो श्री हिरिरायजीनी कृतिमांज समावेश कर्यो छे. ज्यांसुधी अमने बीजां पबळ प्रमाणो न मळे त्यांसुधी एम करबुं उचित जणायुं छे परंतु कोड पण अनुभवी भगवदीय अमारा उपर अनुग्रह करी जा संबंधमां विशेष खुलासो करशे तो तेनो महान आभार मानवा साथे बीजा भागमां ते अनुभव प्रसिद्ध करवामां आवशे. के जेथी खुलासो करनार बैष्णवोनो तमाम बैप्णव समाजपर महान अनुग्रह थयो मनाशे.

सम्पादक.



भूतल महा महोत्सव आज। श्री लक्ष्मण यह प्रकट भये हैं,

श्री बल्लभ महाराज॥?

आज्ञा दई दयाकर श्रीहरि,

पुष्टि प्रकट वे काज।

कलिमें जन्म उबार्यो तन छिन, बूडत वेद जहाज॥२ आनन्द मूरति निरखत नयनन. फूले भक्त समाज। नाचत गावत विवश भये सब, छांड लोक कुल लाज ॥ ३ यरघर मंगल बजत बधाई, सजत नये नये साज। मगन भये तन गिनत न काहू, तीन लोक पर गाज॥ ४ ळीळा सिंधु महारस अबते, बांधी प्रेमकी पाज। रसिक शिरोमणि सदा बिराजी. श्री वल्लभ शिरताज ॥ ५

——(॰)—— श्री ग्रसांइजीनी वधाइ—राग सारंग, श्री लक्ष्मण सुतके सुत, प्रकटे श्री विद्वलनाथ अनूप। परम द्याल कृपाकर केशव,

धया अःभुत स्वरूप ॥ १

धन्य संवत् पंद्रहसे बहोंतेर,

्सुभग है पेष मास।

कृष्णपक्ष तिथि नवमी के दिन,

भृगुवार है खास ॥ २

हस्त नक्षत्र शोभन योग हैं,

परम सुखद हे काल।

देवी जीव उद्घारण कारण,

प्रकटे दीन द्याल ॥ ३

माया मतको खंडन करके,

भक्ति मार्ग प्रकाश।

ज्ञान दीपक प्रकटायो जगमें,

अज्ञान तिमिर किया नाश ॥ ४

आनंदित है सब व्रजवासी,

आनंदित सब लोक।

परम आनंदित भये दैवीजन,

मिटचो हृदय को शोक॥ ५

परम उदार श्रो लक्ष्मण नंदन, देत दान अतुल। कंचन पट मणि सानिक भूषण. हीरा मोती अमूल्य ॥ ६ जो जाके मन होती कामना, सो सबहीनने पाये। नंद नंदन श्री विद्वल प्रकटे, भये सबके मन भाये॥ ७ कहा कहुं में एक रसना, कहेते पार न आवे। गिरिवरधरकी छीला गावत, हृदय तुप्त न थावे. ॥ ८ रसिक सदाए श्री वल्लम प्रभु, रिसक श्री विङ्गलनाथ। धरत नानोविध रुप अनुपम, विहरत रसिकन साथ ९

रिसक सदा व्रजभूमि कहियत, रिसक है भक्त समाज। श्री वह्नभ वंशज है जगमें,
रितकन के शिरताज ॥ १०
श्रुक सनकादिक शारद नारद,
ज्यास रटत है जाको ।
शेष सहस्त्र मुख जपत निरंतर,
पार न पावे ताको ॥ ११
आनंद सिंधु बढयो अति जगमें,
शोभा कही न जाय ।
रितक दासके स्वामी प्रकट,
श्री गोवर्द्धनधर राय ॥ १२

श्री गुसांइजीनी बघाइ २ जी—राग कान्हरोः नाथ प्रकट भये आज हमारे, मोहन नंद कुमार ललारे । श्री वस्त्रभ ग्रह प्रकट होय के, अनेक देवी जीवनको तारे ॥ ? कलियुग जीव उद्धारण कारण, द्विज कुलमें वपु थारे । कृपा सिन्धु श्री बह्नभ नंदन,

मेरे प्राणजीवन धन प्यारे ॥ २
पुष्टि भिक्तको प्रकट करके

मायावाद निवारे।
सेवा रीति प्रीत वज जनकी,

जनहित सदा विस्तारे ॥ ३
परम द्याल महा करुणानिधि,

शरण आये सोई तारे।
रसिकदासके स्वामी श्री विद्वल,
श्री वह्नभराज ललारे ॥ ३

श्री गुसांइजीनी वधाइ—३ जी.

પોસ કૃષ્ણ ધન્ય નવમી આજ કે, આનંદ અતિ ઘણા રે લોલ; શ્રીવલભ ઘેર વધાવા કે, શ્રી વિકૃલ પ્રકટના રે લોલ. ધન્ય શ્રી અક્કાજીના કૃખ કે, એવા પ્રભુ પ્રકટિયા રે લોલ; સાહે મૃગમદ તિલક સુ ભાલ કે, જગમગ જોતિયા રે લોલ; શું કહું વદન કમલની કાંતિ કે, કાંદિ રવિ વારણે રે લોલ; જે પર શ્યામ કેશ લધુ બ્રમર કે, આવ્યા મધુ કારણે રે લોલ. સુંદર ગંગાતટ ચરણાટ કે, જ્યહાં પ્રભુ પ્રકટિયા રે લોલ. શ્રી વલ્લભરાજ મહાઉદાર કે, ઘણું મન હરખિયા રે લોલ.

આવ્યાં વજસુંદરી સહુ ત્યહાં કે. ટાેળેટાેળે મળી રે લોલ: અંગે સાજ્યા નવસત શુંગાર કે, રત્ન મણિ ઝલમલે રે લોલ. પહેર્યા ચોલી ચરણાને ચીર કે, સહુ એક જાતના રે લોલ; પગ નૂપુર કટિ કિંકણી નાદ કે, ચાય બહુ ભાંતના રે લોલ. કરમાં લીધી કંચન થાળ કે, ગંધાક્ષત તણી રે લોલ; ગાયે મંગળ ધાળ તે ગીત કે, મળી સર્વે જણી રે લોલ. આવ્યાં શ્રીઅક્ષાજીની પાસ કે, કુવરને દીઠડા રે લોલ: સુંદર નખસિખ પરમ સ્વરૂપ કે લાગ્યા અતિ મીઠડા રે લોલ. અગર ચંદન લીપ્યાં સહુ ધામ કે, કેસર છાંટણા રે લોલ; વ્યાંધ્યા મંડપ વિવિધ વિતંગ કે, પુલ ચાેસર ઘણાં રે લોલ. ધ્વજા પતાકા તારણ દ્વાર કે, એ પણ સાથીયા રે લોલ; પૂર્યા માતી કેરા ચાક કે, કુંકુંમ થાપીયા રે લોલ ળાંધ્યાં ઝુમર રતન જડાવ કે, માતીનાં ઝૂમખાં રૈ લોલ. ઉપર મેલ્યાં દક્ષિણ **ચીર કે, ′લુમકે લુમકાં** રે લોલ∶ ઉપર કલા કરાતા માર કે, પ્રકાર ખહુ ભાંતના રે લોલ: પચરંગ રેશમની ડારી જોઇ કે, પુલ્યાં મન ભાવતાં રે લોલ. ઉામલ ગાદી વસ્ત્ર ખી<mark>છાવો કે, પોઢાડયા લાલને</mark> રે લોલ: ંકરારી ળાંધ્યા સુંદર ગાત કે, કુલેહ લસે ભાલને રે લોલ. કરતુરીનું તિલક લલાટ કે, સાહે અલકાવલી રે લોલ: માતી લર સિરપેચ જડાવ કે, મયુર ચંદ્રાવેલી રે લોલ. લટકન સીસપુલ ને પાન કે, વેણી કઢિપર છુટી રે લેાલ: કંડલ મોતી કાને જોઇ કે, મન્મથ ફ્રોજ લુંડી રે લોલ. નાંક નકવેસર મણિ લાલ કે, માતી ચરહરે રે લોલ: લડપચીયે જગમગતી જ્યાત કે, જોતાં મન હરે રે લોલ. વાજી બેરખાં સોહે બાંહે કે, પુમક લટકતાં રે લોલ: પહેાચે પહેાચી સુંદર કડાં કે, સાંકળાં લટકતાં રે લોલ.

શ્રીહસ્ત માંહે કૂલ જડાવ કે, અનુપમ જોઇએ રે લોલ; દશ આંગળીએ વેઢ ને વીંટી કે, સુંદર સોહીએ રે લોલ. ત્પુર આંઝર પાયલ કામલ કે, ચરણે વાજતા રે લોલ; અનવટ ખીધ્રુવાને પગપાન કે, સુંદર વાજતા રે લોલા કિટ કેહરિ કિંકણી ૨વ નાદ કે, ચાય સાહામણાં રે લોલ; સાંભળીને સર્વે નિજજનનાં કે, મન હરખ્યાં ઘણાં રે લોલ. સુંદર કંઠે કંઠાભરણ કે, લટકે માતી તણી રે લોલ; સાહે કંઢમાલ ને પ્રુમતાં કે, ઉર કૌસ્તુભ મણિ રે લોલ. સાહે હાંસડી હાર હમેલ કે, મણિમાલા ઘણી રે લોલ: પદક પાન ને વાલ નખ કે, ઉર હીરા મણિ રે લોલ. ચંદ્રહાર વૈજયંતી માલ કે, ગુંજ સાહીએ રે લોલ; થાક વિચિત્ર કુંદની માલા કે, જોઇ મન માહીએ રે લોલ. લાચન આંજણ આંજ્યા બ્રુકુટિ કે, બિંદુક સાહીએ રે લોલ; કેસર કમલપત્ર એ પલક્રે કે, જોતાં મન હરે રે લોલ. નહાની નહાની દંતુડી ચાર દુધની કે, સાેહે હસે કિલકિલ કરે રે લોલ; અધર પ્રવાલ તણી લાલતા કે, શાભાને હરે રે લોલ. કરપદના નખ કાટિક ચંદ્ર કે. તેની જ્યાતને હરે રે લોલ. રાજે નવસત ચિન્દ્ર સમસ્ત કે પરસતાં અધ દૂર કરે રે લોલ: સાેહે નખસિખ પરમ સુદેશ કે, શાભા અતિ ઘણી રે લોલ. નિરખી શ્રીવક્ષભરાજ ઉદાર કે. વારે મણે મણે રે લોલ: ચટાવે માખન મીશ્રી વાટે કે, મેવા બહુ ભાંતના રે લોલ; મીઠાઇ દૂધ કુલ તે : પકવાન કે કર્યાં બહુ ભાતના રે લોલં. ઝારી શ્રીજમાના જલ બરી શીતલ કે. રતન જડાવે જડી રે લોલ. ખીડાં ભાંધ્યાં વિવિધ સુત્ર'ધ કે ધર્યા લઇ તબકડી **રે** લોલ. રમકડાં સુંદર અનેક પ્રકાર કે. રતન જડાવના રે લોલ; સાનાં રૂપાં ને વળી કાચનાં કે. હાથી દાંતનાં ધણા રે લોલ.

રમત રમાડા શ્રીઅકાછ માત કે, હાલર દે હુલરાવીને રે લોલ: સુંદર ચૂસની દર્ધ કરમાંહે કે, બહુ મુખ સુમીને રે લોલ. ક્યારેક લેઈ ઉછંગે કરાવે કે, ઘણાં સ્તનપાનને રે લોલ; પદ અંગુષ્ઠ લેઇ મુખ મેલે કે, હરે મન માનને રે લોલ. મંગલ સ્વસ્તિવાચન કરાવે કે. પ્યાક્ષણ સહુ આવીયા રે લોલ; લાક વેદની રીત સર્વ કે, વાંચી સંભળાવીઆં રે લોલ. રેવ પિતૃ શ્રીવક્ષભ પ્રભુજીને કે અતિ **ઘર્ણ હરખીઆં રે લોલ**; આપ્યાં દ્વિજજનને બહુ દાન કે, મેધ પેરે વરખીઆ રે લોલ. દીધી ગાય અનેક સુશીલ કે, રૂપ બહુ ગુણે ભરી રે લાેલ; વાછડા વાછડી સહુને સાથ કે, વસ્ત્ર ઉપર ધરી રે લાેલ. ખુર રૂપાંની તાળાંની પીડ કે, સાેને શીંગડી રે લાેલ: ગળ ઘંટાને ધુધર માલ કે, માતીની પુંછડી રે લાેલ. કંકમ કેરા થાપા અંગે કે ખહુ દૂધે ચડી રે લાેલ; માપે શ્રીવલભરાજ ઉદાર કે, વેદ મંત્ર પઢી પઢી રે લાેલ. આશીર્વાદ સહુ મળી આપે કે. વેદ મંત્રો ભણી રે લાલ; અમને મનવાં છિત સહુ આપી કે, વધામણી અતિ ઘણી રે લાેલ. ત્યાતિષ નિપુણ જ્યાતિષા ગર્જ કે, મહામણિ આવીઆ રે લાલ: જન્મપત્રિકાને લખી લાગી કે. તે સંભળાવીઆ રે લાેલ. સંવત્ પંદરસા ખહાતેર નામ કે, છે શુભ અતિ ધણાં રે લાલ: શાક ચૌદશેને સડત્રીશ કે, રવિ ગતિ દક્ષિણના રે લોલ. ધન્ય સંક્રાતિ પાેષ વદિ નવમી કે, વાર ભૃગુ જાણીએ રે લાેલ: હરત નક્ષત્ર યાગ શુભ જાણી કે, કરણ શુભ માનીએ રે લાેલ. દિવસમાં બીજા પ્રહર જાણી કે, વૃષ લગ્ને સહી રે લાેલ: ^{ક્ષી} લક્ષ્મ**ણસુત શ્રીવક્ષભ** ધેર[ે]કે, સુત પ્રકટયા સહી રે લેાલ. નામ શ્રી વિક્રલનાથ અનાય કે, છવતે તારશે રે લાેલ : ખુડયા છે ભવસાગર માંહે કે ઝાલીને કાઢશે રે લાેલ.

જન્મકુંડલીમાં પ્રહ સારા કે, અતિ ઘણું આવીઆ રે લાેલ; ખીજે અમર ગુરૂ વળી રાહુ કે, ત્રીજે જોઇએ રૈ લાેલ. પ! ચમે ચંદ્ર કે સાતમે ભૌમ કે, શુક્ર શનિ સાહીએ રે લાેલ; આઠમે રવી સુધ ને બલિ નૌમ કે, કેતુ જોઇએ રે લેાલ. સર્વે ગ્રહ છે બહુ બલવાન કે, માયા મત ખંડશે રે લાેલ; કલ્પિત કરે બહુ પાખંડ કે, તેને દંડશે રેલોલ. કરશે વેદમાર્ગ વિસ્તાર કે, પુષ્ટિ પ્રકાશશે રે લેાલ; રાજા મહારાજા મળી સર્વ કે, ચરણને સેવશે રે લેાલ. યાશે ઘણા સુંદર વિવાહ કે, સુખ સાહામણાં રે લાેલ; સાત પુત્ર ને કન્યા ચાર કે તેને સુત **ચ**રો **લખ્યા**રે રે લોલ. સાંભળી શ્રીવલભરાજ ઉદાર કે, પત્ર કરમાં લઈ રે લોલ; મનવાંછિત દીધાં બહુ દાન ઢે, લીધાં આશીશ દઇ રે લેાલ. વાગે ઝાંઝ પખાવજ આવજ કે, કીન્નરી સોહીએ રે લાેલ: ખંજરી વીચા વેચ રસાલ કે, સારંગી મન માેહીએ રે લોલ. મંજીરા સર્ણાઇ મુરજ કે, ડીમ ડીમ ઝાલરી રે લેાલ; તંખૂરા સુરસાટા સીતાર કે, વાગે કરતાલરી રે લોલ. ધંટા શંખનાદ શ્રી મંડલ કે, સહુ સાહામણાં રે લોલ; વાગે દેાલક ઢેાલ નિશાન કે, ભેર ખેરખા ઘણાં રે લોલ. નગારાં નાેેેબત ઘૂમે દ્વાર કે તુરમાદલ વા**ગે ધ**ણાં રે લેોલ; દમામા ધાંસાં અવર અપાર શબ્દ કે, ગહેરા ગાજે ઘણાં રે લોલ. આવ્યા ગ્વાલ ગાપ સહુ ત્યહાં કે, કાવડ ખાંધે ધરી રે લોલ; હળદર તેલ ભેળવીને ગાગર કે, દધિ દૂધે ભરી રે લોલ. ^{ટાળે} શ્રીવક્ષભરાજને શીસ કે, ઢાલે ગાઢા દહી રે લોલ; ચાપડે માખણ સર્વે અંગ કે પ્રેમવિવશ થઇ રેલોલ. ગાપા ગ્વાલ મળી સહુ નાચે કે, મુખ જે જે કહી રે લોલ; ^{ફેહુદશા} ગઇ સહુને વીસરી **કે**, આનંદ <mark>અતિ સહી</mark> રે લોલ.

આંગણે વાધ્યા છે ખહુ કાચ કે, દધી કાદવ તણા રે લોલ; ગુરીએ સરિતા ગારસ તણી કે, વાધી અતિ ઘણી રે લોલ. મીકાઇ લૂંટી ઝૂંટીને ખાય કે પરસ્પર સહુ મળી **રે** લાેલ; નાચે કૃદે ગાયે ગીત કે, લાગી ગલી ગલી રે લાેલ એવા ઉત્સવ અનંત અપાર કે, શ્રીવક્ષભ વારણે રે લેાલ; અમર વિમાન ચઢીતે આવ્યા કે. જોવા કારણે રે લોલ. શ્રીવિકુલનાયજી તણાં મુખ જોઇ કે, અતિ મન હરખીયાં રે લાેલ; વગાડે દું દુભિ દેવનિશાન કે. કુસુમ ઘણું વરખીયાં રે લોલ. ગંધર્વ ઉચ્ચરે સંગીત સુગાન કે, તાનરસ ભીંજીયા રે લાેલ: અધ્સરા જીત્ય કરે બહુ ભાંત કે શ્રીવક્ષભ રીઝયા રે લાેલ. પ્યક્ષા શિવસનકાદિક નારદ કે, શુક્રમુનિ આવીયા રે લોલ; ક્તુતિ કરે કરતે જોડી કે, બહુ મન ભાવીયા રે લાેલ. માગધ ભાટ જાચકતે ખંદી કે, ખહુ જશ વિસ્તારશ રે લાેલ: કલિમાં વિના સાધનના છવ કે, તેને નિસ્તારશે રે લાેલ. સાંભળી ગાવર્ધનથી ઢાઢી કે, આવ્યા હરખતા રે લોલ: આવ્યા શ્રીવલલરાજની પાસે કે, કુંવર મુખ નિરખતા રે લાેલ. જોતા આનંદ થાય અપાર કે, જસ વરણન કીધું રે લોલ; એ છે પૂરણ પ્લભ અખંડ કે, રૂપ દિજતનું લીધું રે લાેલ. 'વર્મની રસા કરવા કારણે કે, ચહુ જાુત્ર અવતરે રે લાેલ; દશવિધ રૂપ ધરીને આવ્યા કે, ભક્તિ નિર્ભય કરે રે લોલ. સત્યયુગ શ્વેતવારાહનું રૂપ કે, ધરી પ્રભુ આવીયા રે લેાલ; હિરણ્યાક્ષતે મારી પૃથ્વિ કે, દંતે ધરી લાવીયા રે લોલ. ત્રેતાયુગ દશરથ ધેરે પ્રક્રી કે, રામ કહાવીયા રે લેાલ; રાવણ મારીને સીતા વિમાને કે, ખેસાડીને લાવીયા રે લાેલ. દ્રાપરયુગ મથુરા પ્રભુ પ્રક્રી કે, ગાકુલ આવીયા રે લાેલ: યુતના માસીના પ્રાણ શાધીને કે, શક્ટ તૃણુ મારીયા રે લાેલ.

ચાૈદે ભુવન ખગાસાં લેતાં કે, દેખાડયાં માતને રે લાેલ; ક⁄ોધાં બાલચરિત્ર અપાર કે, દીધાં સુખ માતને રે લેા**લ**. સાત દિવસ ધરિયા ગિરિરાજ કે, વામ હસ્તે કરી રે લોલ; બેદ્યા ઇદ્રતણા અભિમાન કે, હસ્ત સિરપર ધરી રે લેાલ. માર્યા કંસાદિક સહુ દાનવ કે, ભાર ઉતારિયા રે લેાલ: ક્**રી આવી વસીયા વજમાંહે કે, સદા રસ રાસીયા** રે લેાલ. શ્રીવૃંદાવન શ્રીયસુના તીર કે, જહાં નિતપ્રતિ વસે રે લાેલ; ગાવદ્ધ'નની ઉપર કે, રસલીલા રસે રે લેાલ. લડેકે વજ ભકતજનાની સાથ કે, કરે વજમાં બહુ રે લાેલ. નૃત્ય દાન ને માન અનેક કે. કરે લીલા સહુ રે લેાલ; કલિયુગમાં શ્રીવક્ષભ ઘેર કે, એ પ્રભુ પ્રકૃદિયા રે લાેલ. સેવકજનના સર્વ કાલના કે, તાપ ત્રય મેટિયા રે લેાલ: ત્રજમંડલથી યમુના તીર કે, શ્રી ગાેકુલગામ છે રે લાેલ. ત્યહાં જઇને એ કરશે વાસ કે, પૂરણ કામ છે રે લેાલ; શ્રીગાવ**ર્ધ'નધરની સ**ંગ કે, ગાવર્ધ'નપર વિહરશે રે લેાલ. કરશે નિત્ય નૂતન ટ્રાંગાર કે, ભાગ બહુ અર્પરા રે લાેલ; ત્રહતુ સમય સમયની સેવા કે, વિવિધ પ્રકાશ**રો રે** લોલ. તે ટાણે મંગલ ભાગ :સાજી કે, પ્રભુને જગાવશે રૈ લેાલ; ^{ગારી} શ્રી યમુ**નાજલ ભરીને કે, આપ પધરાવશે રે** લેાલ. પછી શય્યાજીને સમારી કે, સુગંધજલ અચવાવશે રે લેાલ; કોમલ વસ્ત્ર**થી** શ્રીમુખ પોંછી કે, બીડાં આરોગાવશે રે લેાલ. મંગલા આરતી કરતાં સહુતે કે, દર્શન આપરો રે લેાલ. ^{ડરત} પખાલીને વળી લુઇને કે, ટેરા ખેંચશે રે લેાલ. રાત્રિના : શૃંભાર : પ્રભુતા કે, સહુ ઉતારશે રે લોલ; વિવિધ સુગંધ ઘણા લઇ તેલ કે, પ્રભુતે લગાડશે રે લાેલ. કરશે સુગધ તહોા ઉવટના કે, ઉષ્ણજલ ન્હવડાવશે રે લેાલ;

અંગવસ્ત્રશું અંગ પાંછીતે સાંધા કે, કપાલ લગાડશે રે લાલ. મુંદર કુંકુમ કેરાં તિલક કે, ભાલ લગાડશે રે લાેલ: કરશે **મુકુ**ટતણા ૃંગાર કે કાછની સોહીયે રે લોલ. ત્ત્રયન પીતાંળર રંગ જોઇ કે મનમાં માહીયે રે લાલ: સાહે નખરિષ્ય સહ આભૂષણ કે રતન જડાવનાં રે લાેલ. ખંટા ઝારી ને વળી બીડાં કે ભાગ શુંગારના રે લોલ; ગુંજા માલ પુષ્પની માલ કે, ધરાવે વાંસળી **રે** લોલ. દર્શન ખાલીને કાચ દેખાંડે કે, પરસ્પર હળી મળી રે લોલ: ચરહ્ય છ્રુપ્ટને હસ્ત પખાળી કે, વાંસળી વડી કરી રે લાેલ. ડેરા ખેંચી માલા ઉતારી કે. ગાદી પર ધરી રે લેાલ: કરી દર્શન ખાલાવી આપ કે, ઝારી ભરી આવશે રે લાેલ. ટેરા ખેંચીને વળી ભાેગ કે, ગાપીવલ્લભ લાવશે રે લોલ; આચમન મુખવસ્ત્ર ખીડાં ધરી કે, ભાેગ સરાવશે રે લાેલ. મંદિર ધાઇને વળી પાંછી કે, ગ્વાલ આરોમાવશે રે લાેલ; ઝારી ભરી આચમન મુખ પોંછી કે, બીડાં ધરાવશે **રે લે**ાલ. ક**ર્યા**ન ખાેલી ચરણસ્પર્શ કે, તુલસી સમર્પરો રે <mark>લ</mark>ોલ; ભાગ ધરાવીને ચોકી બીછાવીને કે, ધૂપ દીપ અપ^{*}શ રે લેાલ. પછી ટેરા ખેંચી રાજબાેગ કે, આપ પધરાવશે રે લોલ; ચમચા સહ ડળરામાં તુલસી કે, શંખજલ છાંટશે રે લેાલ. પ્રેમે ધણી મનુહાર કરીને કે, પ્રભુતે જમાડશે રે લાેલ પછી પાઠ કરીને માલાના કે, હેલા પડાવશે રે લાેલ. આચમનની ઝારી ભરી માલા કે, બીડાં લાવશે રે લાેલ: કમાડ ખાલી ભીતર જઇ કે. આચમન કરાવશે રે લાેલ. ત્રીમુખ પેાંછી સુંદર બીડી કે, કરી આરોગાવ<mark>રો રે લ</mark>ેાલ; ખંટા બીડાના ધરીને પાસ કે, ભાગ સરાવશે રે લાેલ. મ'દિર ધાષ્ઠ પોંછીને પ્રુલની કે, <mark>માલા ધરાવશે રે લ</mark>ોલ; વેજાવેત્ર કરકમલનાં પુલ કે, ખહુ ધરાવશે રે લાેેેેેેેેેેે

ખે પાસે તકીયા ગાદીની ચાેકી કે, આગળ પધરાવશે રે લોેલ: ઝારી ખંટા પડઘીએ મૂકી કે, ત્રસ્ટી ધરાવશે રે લોલ. દર્પણ દર્શન ખાલી દેખાડી કે હૃદયે લગાડશે રે લાેલ, રાજભાગ આરતી કરતાં રૂપ કે, હદયમાં પધરાવશે રે લોલ. વારણાં લઇ દંડવત કરી હસ્ત કે, પખાળી આવશે રે લાેલ; કરી દર્પણ પ્રભુતે દેખાડી કે, મહાસુખ પામશે રે લોલ. શૈયા મંદિરમાં જઈ ભાેગ કે, ખંટા ધરાવશે રે લોલ; ઝારી બીડાં <mark>ને માળાની થાળ કે, આપ પધરાવશે રે</mark> લોલ. ત્રસ્ટી ચોકીએ ચોખટ સાજ કે. પેંડા ખીછાવશે રે લેાલ; બહાર આવીતે જમણી પાસ કે રમકડાં મુકાવશે રે લોલ. ગેંદ ચાગાન ગાયોના તખતા કે, આગળ મુકાવશે રે લોલ; અતાસર દંવત કરીને ખહાર કે, આપ પધરાવશે રે લોલ. માળા ! પહેરી ખીડાં લઇને કે કમલ કર ઝાલશે રે લોલ; ખહુ સુખ નિજ્જનને આપી કે. ત્યાંથી આવશે રે લોલ. લડેક શ્રીગાવર્દ્ધનથી ઉતરી કે, શિલા શિસ નામશે રે લાેલ; પાછે આપ બીરાજે ચેાતરાપર, જઇ પરણામશે રે લાેલ. ત્યાંથી ભાજન કરવા માટે ખેડ} પધરાવશે રે લાેલ; ભાજન કરી **બીતરથી ખહાર કે, આપ પધરાવશે રે** લાેલ. આચમન કરી મુખ હસ્ત પાંછી કે. બીરી આરોગશે રે લાેલ; નિજ જનને અધરામૃત આપી કે, લગારેક પાેંઢશે રે લાેલ. તીજે પહેારે જાગીતે કે નહાય કે. અંગાઅંગે પાંછશે રે લાેલ: ધોતી કોમલ કિટ પર ધરી કે, ઉપરના એાઢશે રે લેાલ. કુંકુમ દ્રાદશ અંગે તિલક કરી કે. આપ પધારશે રે લાેલ; ગાપીય દનથી ખટ મુદ્રા રે, ચાેસક છાપ છાપશે રે લોલ. કેસર ખાર કરીને કે, વાંકો, અંબાડા વાળશે રે લોલ; સુદર આબૂષણ પહેરીને કે, સુગંધ લગાડશે રે લાેલ.

ળીડી કરમાં લઇ મુખમાં મેલી કે, ત્યાં**યી** પાઉ ધારશે રે લેાલ: દંડવત્ શિક્ષાને આપ કરીને કે, ઉપર પધારશે રે લેાલ. સુંદર શંખનાદ કરાવીને કે, તાળાં ખાલશે રે લોલ; આતુરતાથી હસ્ત પખાળી કે, કપાળે પરસશે રે લેાલ. દંડવત કરી જમુના જળ સીતલ કે, ઝારી ભરાવશે રે લોલ; માળા ખીડા ત્રસ્ટી અનેાસર કે, ભોગ સરાવશે રે લોલ. દર્શન કરાવીને ભાગ કે. ઉત્થાપન લાવશે રે લોલ; ઘડી એક રહી ઝારી ભરીને કે, આચમન કરાવશે રે લેાલ. સુંદર મુખ મુખવસ્ત્રે પોંછી કે, ખીડા બંટા ધરાવશે રે લોલ; ભોગ સરાવીને ને પુષ્પની માલ કે, આપ પધરાવશે રે લેાલ. વેંહ્યુવેત્ર ઉભા કરી ચોકી આગળ કે, આપ પધારશે રે લોલ; દર્શન ખાલાવીને કે, સુંદર સેજ સંવારશે રે લોલ. તાલ તંખૂરા રાગ પખાવજ કે, થાળી વગાડશે રે લેોલ; ઝારી ભરવા પધારે ત્યારે કે, વીણા વગાડશે રે લોલ. ઝારી ભરિ ષ્યાવીને મુરલી કે, છડી વધાવશે રે લેોલ; ટેરા ખેંચી સંધ્યા ભાગ કે. આપ પધરાવશે રે લાેલ. પછી ઝારી ભરી જલ આચમન કે, પ્રભુને કરાવશે રે લેાલ; ડેરા બહાર આવોને કે, પાત્ર સંવારશે રેલોલ. મુખવસ્ત્ર કરી બીડાં ધરીને કે. ભોગ સરાવશે રે લેાલ; દર્શન ખાલાવીને મુર**લી કે, છડી ધરાવશે રે લો**લ. ચોક') પધરાવી સંધ્યા આરતી કે લઇને વારશે રે લોલ; વારણ જઇ દંડવત્ કરી હસ્ત કે, પખાળી આવશે રે લોલ. મુરલી છડી વધાવીને ચાેકી કે, તકીયા ઉઠાવશે રે લાેલ; ડેરા ખેંચીને લુંગાર કે. સહ વધાવશે રે લોલ. શિર પર પાગ બાંધીને વાધા કે, કટિએ પહેરાવશે રે લોલ; પછી સહમ કરીને શૃંગાર કે, ગ્વાલ બાલાવશે રે લોલ.

ડખરા ગ્વાલ ભાેગ ધરીતે ઝારી **કે. ભ**રવા પધારશે રે લાેલ: <mark>ઝારી ભરી આવીને જલ કે. આચમન કરાવશે રે</mark> લેોલ. મુખવસ્ત્રથી મુખ પેાંછીને કે, બીડાં લઇ પધારશે રે લોલ: અગર સુગંધના ધૂપ ઉતારી દીપ ઉતારશે રે લોલ. હસ્ત પખાલી ચાેકી માંડી કે, શયનભાેગ લાવશે રે લાેલ. પ્રેમિવિવશ થઇ વિનતિ કરીને કે. આપ આરોગાવશે રે લોલ: વડી એક રહીને બીજો ભાગ કે, આપ પધરાવશે રે લોલ; હસ્ત પખાલી માલા સંવારી કે, રસોઇયા બાલાવશે રે લેાલ. આચમન ઝારી બીડા માલ કે. લંઈ પધારશે રે લાેલ: કમાડ ખાલી ભીતર જઇને કે, આચમન કરાવશે રે લાેલ. મુખવસ્ત્ર કરી સુંદર બીરી કે, કરી આરોગાવશે રે લોક; પુષ્પમાલા ધરીને ચાેકી કે. આગળ પધરાવશે રે લોલ. દર્શન ખાલાવીને સગંધ કે. બીરી લઇ આરોગાવશે રે લોલ: વેહ્ય ધરાવી શયન આરતી કે, પ્રભુ પર વારશે રે લેાલ. વારણાં લઈ દંડવત કરી હસ્ત કે, પખાલી આવશે રે લાેલ. મુરલી વડી કરી ગાદીની કે, ઉપર પધરાવશે ,રે લેાલ. ટેરા ખેંગીને વસ્ત્રમાલા કે, ઉપર પધરાવશે રે લેાલ; ચોક′ા પેંડા બીછાવી પ્રસુતે કે, સેજ પાઢાડશે રે લાેલ. અનુસર બાેગ ને ઝારી ખીડાં કે, માલા પધરાવશે રે લાે**લ**; તાલા મંગળ કરીને ખહાર કે, આપ પધારશે રે લાેલ. માળા ધરી બીડાં લઇ હાથ કે, લટકે ચાલશે રે લેાલ; શ્રીગાવર્દ્ધન પર્વતથી ઉતરી કે શિલા શિસ નામશે રે લાેલ. ત્યાંથી સખ્યાવંદન કરવા કે, બેડક પાઉં ધારશે રે લાેલ: સંખ્યાવંદન કરીને ભાજનપ્રહમાં કે. આપ પધારશે રે લાેલ. ત્યાં વાળ કરીને કરી બહાર કે આપ પધારશે રે લોલ: <u> પહાર આચમન કરી બીરી લઇને કે. ગાદી પર બિરાજશે રે લાેલ.</u>

પુસ્તક ચોષ્ટી પર પધરાવી કે, કથા મુખે વાંચશે રે લોલઃ અમૃત શ્રી ભાગવત રસરૂપ કે, સહ ધ્યાવશે રે લોલ. એ વિધિ સેવા ગિરિધરની કે, જગત્ પ્રકાશશે રે લોલ; આપની સેવા આપ કરીને કે, સહુને શિખાવશે રે લાેલ. સાત સ્વરૂપ પ્રભુના આપ કે, ગાકુલ પધરાવશે રે લાેલ; સેવા ખહુ પ્રકારે કરીને 🕻, ઘર્ષ્ટ કરી રીઝાવશે રે લાેલ. શ્રી નવનીત પ્રીયા શ્રી મ**શુ**રેશ કે, શ્રી વિઠ્ઠલના**ય**છ રે લેાલ. શ્રી દારિકાધીશ શ્રી ુગાકુલનાથ કે, શ્રી ગાકુલચંદજી રે લાેલ. ત્રી ખાલકષ્ણજી શ્રી મદનમાહનજી કે. શ્રી નટવરલાલજી રે લાેલ; ળીજાં છાટાં માટાં સ્વરૂપ કે. બાલગાપાળજી રે લાેલ. એવાં ચરિત્ર અનેક અપાર કે કહેા કેમ વરણીએ રે લોલ: રાય સહસ્ત્રમુખ ગણી નવ શકે કે. એવા કોઇ ધરણિપરે રે લાેલ. ત્રીવલભલાલ તણાં જસ સાંભળી કે, અતિ **ઘણું હરખીયાં રે લો**લ. કાંઈક મંદમંદ સુસકાઇ કે. કુંવર મુખ નિરખીયાં રે લાેલ. વસ્ત્ર આભૂષણ મણિ માણેક હીરા કે હય ગજ ધન ઘણાં રે લોલ: આપે શ્રીવ**લભરાજ ઉદાર કે. તેને શી મણા રે લે**ોલ. દીન વચન મુખ ઢાઢી ખાલ્યા કે, માગું એટલું રે લાેલ: દરખીને બાલ્યા શ્રી વક્ષભરાજ કે, જોઇએ લાે જેટલું રે લાેલ. માેક્ષ ચાર પ્રકારના .અલ્પ કે, તે તેા નવ જોઇએ રે લાેેલ: ન જોઇએ સ્વર્ગ લોકતું રાજ કે, તેથી નવ માહીએ રે લોલ. ન જોઇએ ત્રાનયાગ વિષય સખ કે. તે ખહુ અલ્પ છે રે લાેલ: ન જોઇએ દુઃખડાં કેરી લાક કે, જીવવું શત કલ્પ છે રે લાેલ. લવા આપ તણી ઉચ્છિષ્ટ કે, પીવા જલ ચરણનું રે લાેલ; ચરેલું કમળ કેરી રજ શિષ કે, દર્શન મુખ કમલનું રે લોલ. ટહેલ આપના ઘરની સદા કે, સર્વદા દીજીએ રે લાલ: મુજબે દાસ દાસની દાસી કે કૃપા કરી કીજીયે રે લાેલ.

સાંભળી શ્રીવલ્લભરાંજ ઉદારકે, ઘણું મન હરખીયા રે લાલ; મનવાંછિત કલ સહુ આપીને કે, મહારસ વરષીયા રે લાલ. મુવસ વસા શ્રીવલ્લભરાય કે બહુ આશિષ દઇ રે લાલ; શ્રાવિડ્રલનાય સદા યિર જીવા કે, શ્રીગાંકળમાં રહી રે લાલ. રોમ રોમ પ્રતિ રસના અનંત કે, કોઇ નવ કહી શકે રે લાલ. રોમ રોમ પ્રતિદાપ અનંત કે, ખતિ વિષયી ઘણા રે લોલ. રોમ રોમ પ્રતિદાપ અનંત કે, તે તા નવ ગણા રે લાલ. રોમ રોમ પ્રતિદાપ અનંત કે, તે તા નવ ગણા રે લાલ. જેવા છું તેવાજ સદા કે, કહાવું આપના રે લાલ. મુજને દર્શન આપે આપ કે, દીન જાણી આપના રે લાલ. અવ દે વિધાસ કરીને કે, નિત પ્રતિ ગાવશે રે લાલ. શ્રવણ કરી શીખી શીખાવીને કે, અવર સભળાવશે રે લાલ; મનવાંછિત કલ ઇહલાક પરલાક કે, તેમાં સહ પાંમશે રે લાલ; શ્રીવિકેલનાથના ચરણની રેણ કે, પૂરણ કામ છે રે લાલ. શ્રી વલ્લભ શ્રી વિકલ શ્રી ગુરૂચરણ પ્રતાપથી રે લાલ; ગાયે રેસિક દાસનાં દાસ કે, કરી નિત પ્રેમથી રે લાલ;

श्री जमुनांजीनुं घेाळ

श्रीमहाराणीजीनां पान करने तुं प्राणीरे. टेक ए छे अधम उद्धारण जाणी— महा. १ एमनुं महात्म्य छे पद्मपुराणे रे, पृथ्विपर श्री वाराहजी वखाणेरे; ए तो वजवासी सुख माणे महा. २ सुंदर मथुरांजी निकट बिराजे रे,

मंदमंद महाधुनि गाजेरे;

एमनां दर्शनथी दुःख भाजे—

महा. ३
विश्राम घाटे ते आरति थायरे,

सामा प्रभुजीना मुगट धरायरे;
चोबा हाथीनी गर्जना थाय— महा. ४
त्यांतो वैष्णवनी भीड भरायरे.

त्यां कंइ आरित धोळ गवायरे, त्यांता जयजय शब्द उच्चारायरे— महा. ५ जे कोइ पयपान श्री यमुनानां करशेरे,

तेनो जम किंकर भय टळहोरे, कहे छे रसिक राधेवरने वरसेरे- महा. ६

राग भैरव.

भोर भये भावसें। छे श्री वह्नभ नाम । हे रसनां तुं ओर वृथा बके क्यो निकाम ॥ सेवारस स्वाद पार्वे निश्चदिन गुण गावे, ओरसब विसरावे यहमन आठेांयाम ॥ १ रितकन कछु ओरकरें इनहीन भाव धरे, अतिरस अनुपान करें ओर कपट वाम। हरिवश छिनहीमें होत सगरो भक्ति मारग, रुप हृदय वसें अरुरस समूह धाम॥ २

राग केदारो.

हरियह कोन रीति कटी॥ दास दुःखी सुख होत विमुखन, बडी लाज घटी॥ वेदपंथ श्री भागवतकी बांधी मेंड कटी। देखयहविधि सबनकी, मति भजन तें उचटी॥ कर कुसंग सुसंग जाके, विषय जाय घटी। कुमति पाव सकूप जलतें, आवतें उबटी ॥ करण वारे कहा भूमि, जात गति न हटी। कहा फलकी चीठी सबकीये, कहीबेर फटी॥ चरणपर जे रहत तिनकी, होत मति उलटी। कहा गीता भागवतमें कही बात नटी॥

हमारी यहवेर मनसा, दान हुं तें हटी। रसिक कहि कहि जीभ तुमसो, छुलत छुलत छटी॥

हों वारी इन वह्नभीयन पर । मेरे तनको करों बिछोना, शीश धरों इनके चरणन तर॥ १ नेह भरी देखें। मेरी अखीयन, मंडल मध्य बिराजत गिरिधर। यहतो मेरे प्राणजीवन धन. दान दीयो हे श्री वस्त्रभवर ॥ २ पुष्टि प्रकार प्रगट करवेकों, फिर प्रगटे श्री विद्वल वपुधर। रसिक सदा आहा इनकी कर, व्हिभीयनकी चरण अनुसर ॥ ३

-(°)----

नव विलासनां पद.

मथम विकास-राग मालव.

प्रथम विलास कीयो श्यामाजू, कीनो बीपीन बोहारी जूं। उंनके विधकी शोभा वरनो, कहत न आवे पार जूं॥ १ वाके युथकी गणना नाहिं, निर्शुण भक्त कहावे।

ताकी संख्या कहत न आवे, शेषह पार न पावे॥ २

घेाष घेाष प्रति गलिन गलिन प्रति, रंग रंग अंबर साजें।

कीयो शृंगार नख शिख अंग, . युवति ज्यों करनी मध्य राजें॥ ३

बहु पुजा ले चली वृंदावन, पान फ़ल पकवाने।

ताके युथ मुख्य चंद्रावलि, चंद्रकला वासी वाने ॥ ४ पोहोंची जाय निक्रंज भवनमें, दरसी बूंदा देवी। ताके पद वंदन करी माग्यो, इयाम संदर वर एवी ॥ ५ तिहीं छीन प्रभुजी आप पधारे, कोटीक मन्मथ मोहे। अंग अंग प्रति रुपरुप प्रति, उपमा रवि शशि कोहैं।। ६ हेजुग जाम स्याम स्यामा संग. केली विविध रंग कीने। उठत तरंग रंग रस उछलित, दास रसिक रस पीने ॥ ७ ----o)-(o----

द्वितिय विश्वास—राग गालव, द्वितीय विलास कीयो स्यामाजु, खेल शमस्या कीनी । ताकी मुख्य सखी लिलताजु, आनंद महा रस भीनी ॥ १ चिल संकेत विहार करन, बिल पुजा साजी संपुरन |

बहु उपहार भाग पायस,

बांह हळावत मूरन ॥ २

मंदिर देवी गान करत यश,

आय मिले गिरिधारी 🕸

मनका भायो भया सबनको,

काम वेदना टारी ॥ ३

रयामाके। शृंगार रयामका,

लिलता निवी कोली।

ळीळा निरखत दास रसिकजन,

श्रीमुख इयामा बेाली ॥ ४ ——(॰)——

वृतीय विलास-राग मालव.

तृतीय विलास कीयो स्यामा जू प्रवीन । खेलनको उच्छाइ सखी एकत्र कीन ॥ १ तिनमे मुख्य सखी विशाखा जू एन।
चिल निकुंज महेलमें कोकिला ज्यों बेन॥ २
भाग धरी सँवार बासोधी सनी,
कुसुंप रंग अनेक यही कामनी. ॥ ३
गान स्वर कीया वन देवी विहार,
नवित्रयाको कोटि काम वार ॥ १
ढिंग आसन कराय प्यारीको बेठाय,
दोउ एकत्र कीने निरखत लेत बलाय ॥ ५
यह लीलाको ध्यान मम हृद्य ठहराय,
देखत सुरनर मुनि भुले रिसक बल
बल जाय॥ ६

वेाथे। विलास-राग मालव.

चाथा विलास कीयो स्यामाजू, परासाली बन मांही। ताकें हुम वृक्ष लता वेली, तन पुलकित, आनंद न समाइ॥१ चंद्रभागा मुख्य यूथावली, अपनी सखी सब न्योति बुलाइ। खंडा मंडा जलेबी लडुवा,

प्रत्येक अंगका भाव जनाइ॥२ साज कीया पुजन देवीका,

बहु उपहार भेट ले आइ। खेलन चली बनी तिहीं शोभा,

ज्यां घनमें चपला चपलाइ ॥ ३

पाहांची जाय दरस देवी तब,

व्हे गये श्याम कीशोर कन्हाइ। मनका चित्यो भयो लालन को,

हास विलास करत कीलकाइ॥ ४ इयामा इयाम भुज भर भेटे,

त्रण तेारत ओर लेत बलाइ। कही न जाय शोभा ता सुखकी, कुंजन दुरे रिसक निधि पाइ॥ ५

पांचमो विकास-राग माछवः पांचमो विलास किया इयामा जू, कदली वन संकेत। ताकी सखी मुख्य संजावली, प्रिया मिलनके हेत ॥ १ चली रती उमगी युवती सब. पुजन देवी नीकसी। भ्रप दीप भाग संजावली. कमल कलीसी विकंसी ॥ २ आनंद भर नाचत गावत, वधू रसमें रस उपजाती। मंडलमें हरि ततछीन आये, हिलमिल भये एक पाति ॥ ३ द्रेयुग जाम स्याम स्यामा संग; भामीनी यह रस पीनो । उनकी कृपा द्रष्टि अवलाकत, रसिकदास रस भीना ॥ ४ -(•)-----

छट्टो विकास-राग मालव.

छट्टो विलास कियो स्यामाजु,

गोधन वनको चली भामाजुं। पहेरे रंग रंग सारी.

हाथन पुजा थारी।

ताकी मुख्य सहचरी राइ,

खेलनको बहुत सुधरोइ॥१

(छंद) चली वन वन विहंसि सुंदरी,

हार कंकण जग मगे।

आय मंदिर पुजी देवी,

भाग शिखरन सगमगे ॥ २

ता समय प्रभु ओप पधारे,

कोटिक मन्मथ मेाहहीं।

निरख सिखयन कमल मुख,

माना निधन धनजो साहही॥ ३ खेलका आरंभ कीनो,

राधा माघा बिच कीये।

वाकी परछांइ परी तब, रसिक चरनन चित्त दिये ॥ ४

(0)----

सातमो विलास-राग माछव.

सातो विलास किया इयामाजू, गहवर बनमें मतोज कीन। ताकी मुख्य कृष्णावती सहचरी, लघु लाघव अतिही प्रवीन ॥१ वनदेवी हे गुंजा कुंजा, पाहोपन गुही सुमाल । चंद्रावली प्रमुदित विहसत मुख, ज्यों मुनिया लाल॥ २ रच्या खेल देवी ढिंग युवति, कोक कला मनाज। अति आवेश भये अवलोकत, प्रकटे मदन सराज ॥ ३

११३ काउ भुजधर कर चरन उर. काउ अंगा अंग मिलाय। कुंवर किशोर किशोरी रसिक मणि, दास रसिक दुलराय ॥ ४ ---(°)-----आठमो विलास-राग मालव. आठमो विलास कियो इयामाजु, शांतन कुंड प्रवेश । उनकी मुख्य भामा सारंगी,

लेखत जनति आवेश ॥ १ सूरज मंदिर पुजन कर मेवा, सामग्री भाग धरी।

आनंद भरो चली वृज ललना, क्रीडन वनको उमंग भरी॥२ भद्रवन गमन कियो वन देवी,

पुजन चंदन वंदन लीने।

भाग स्बच्छ फेनी एनी सब, अंबर अभरन चीने ॥ ३ गावत आवत भावत चितवत,
नंदलालके रसमाती।
कृष्णकला सुंदर मंदिरमें,
युवति भइ सुहाती॥ थ
देखि स्वरुप ठगी लजना ते,
चकचोंधींसी लाइ।
अचवन द्रग न अघात दासः

रसिक विहोरन राइ ॥ ५

नवमो विलास-राग मालव.
नवमो विलास कियोजु लडेती,
नवधा भक्त बुलाये।
अपने अपने सिंगार सबे सज,
बहु उपहार लिवाये॥ १
सब श्यामा जुर चली रंग भीनी,
ज्यों करिणी घन घारें।
उयों सरिता जल कुल छोडिकें,
उठत प्रवाह हिलेगरे॥ २

वंसीवट संकेत सघन वन. काम कला दरसाये। माहन मूरति वेण मुकुट मणि, कुंडल तिमिर नसाये ॥ ३ काछनी कटि तट पीत पिछोरी, पग नूपुर झनकार करे। कंकण वलय हार मणि मुक्ता, तीन याम स्वर भेद भरें ॥ ४ सब सखियन अवलाक स्याम छिन, अपना सर्वस्व वारें। कूंज द्वार बेठे प्रिय प्यारी; अद्भुत रुप निहारे॥ ५ पूवा खावा मिठाइ मेवा; नवधा भाजन आने। तहां सतकार किया पुरुषात्तमः अपना जन्म फल माने ॥ ३ भाग सराय अचवाय बिराधर; निरांजन उतारे।

जय जय शब्द होत तिहुं पुरमें,
गुरुजन लाज निवारे॥ ७
सघन कुंज रस पुंज अलि गुंजतः;
कुसुमन सेज सँवारे।
रितरण सुभट जुरे प्रिय प्यारी,
काम वेदना टारे॥ ८
तव रस रास विलास हुलासः;
गृज युवतिन मिल किने।
श्री वहुभ चरण कमले कृपा ते,
रिसक दास रस पीने॥ ९

दञ्च उल्लास-राग-मूळ पुरुष प्रमाणे.

(१)

श्री पुरुषोत्तम करूं प्रनाउ, इनको उल्लास परमरूचि गाउं। श्री वल्लभ कृपा अनुग्रह करही, मो मतिहीन शारद शुद्ध धरही;॥ एक समे प्रभु अतिही उछासा, देख स्वरुप नख चंद प्रकाशा। सारभ सुगंध तुलसी दल आयो, इच्छा रमण है रूप मन भायो॥१

(बलण.)

उच्छा भइ है रूपकी। तब कोटि मन्मथ मोहही;
अकल कळा सान्दर्य सीमा। वाम भागज प्रकटही,
देख पशु उन रुप अद्शुत। रमण चित्त विचारीयो;
दक्षिन भागज ओर ललना। रसमें रस निर्धारीयो।
जुगल रसको रस बढावन। मध्य रूप प्रकाशही;
अधिक वढतो घाट आवे। घाट बढतो जासही।
साम दाम जा भेद उनके। मध्यको अधिकार है;
यह उल्लासनि रास रसमय। रसिक मन निर्धार है.

स्वइच्छा के महेल बनाये॥
उनकी शोभा वरनी न जाये॥१
वाके गुन नही होत हे न्यारे।
एक एक महेल छ रुतु अनुसारे॥
रत्न जटीत के छाजे तिवारी।
हाटिक स्फाटिक की फुलवारी॥२

(बलण).

फुळे हक्षलता वेळीहुम। निविद कुंजन रच पची; हंस कोकिल कीर कलरव। पांती वगदल अतिमची, वहत मंद सुगंध शीतल मोर। कुंहुंकनी अति बनी; रटत पिय पिय सुखद चातक। चकोर चंदा चक्षनी, चकवाक चकइ तीर सरिता। नीर जहां इरनां झरे; श्रीपतिको कहा सदन शोभा। स्वइच्छा कोन सरभरकरे, निज धामको गोलोक कहीयत। गाय बछरा अतिघने; शब्द होत हे मथनको यहा उछास रसिकन मन गमे.

(३)

सखी यूथको है बिस्तारा । वाकी गीनती न आवे पारा ॥ मेघ बुंद ओर रिवकी कीरनी । श्रीपुरुषोत्तम लीला को न बरनी ॥ १ रोष महेरा न ध्यान समाधा । कविजन रंक कहा करे सांधा ? ॥ यूथ मुखीकी संख्या कर ही । तुच्छ बुद्धि केसें चित्त धरही ? ॥ २

(वलग),

धरुं केसे चित्तमें जु । वानी हू थकी जात है, अमाकृत लीला माकृत चातक । सवधन केसे समातहेः कोटि साडे तीन मुखीया । पुरुषोत्तम निज दास हे, ओरकीको गीने संख्या । यह चरन रजकी आस हे, चरनको झंकार सखीयन । घोष शब्द जु गाजही; चलत अति उत्साह सखीयन । रिसक सिरता भ्राजही, श्री पुरुषोत्तम उल्लासको । कहुं बेद पार न पायही, मृद केसे चित्त लावे ? । रिसक मन न समावही.

(8)

वाम भाग सिंगार बखाना।
एक रसना मुख कहत न आना॥
उनके बसन नीलांबर सारी।
इयाम कंचुकी लहेंघा लाल कीनारी॥

(वळण).

ज्याम कचुंकी लाल लहेंघा। फुंदनां मखतूले हे; नीवी कटिपर कबी रही। किंकिनी नग बहु मूल हे, देख रूप स्वरुप सुंदर। रमा कोटिक वारने; श्री पुरुषे।त्तम उल्लासको। रसरसिक चित्त विचारने. (4)

केसर आड सुभाल मनेहर। बीच मुक्ता बिंदुमानो शशीहर॥ नेन बिशाल श्रकृटी मिसबिंद। बदन कमलके ढींग अलीफंद॥ श्रवन तरु कली मनिकी ज्योति। बेनी जटित झंघालो पोती॥ द्रेलरी तीलरी पंचलरी मनि मुक्ता। रत्न जटित नग हार उर युक्ता॥

(बक्रण).

रत्न पदकरू हरिचोकी । भीर भूखन फबी रही;
केशके बीच मिन मुक्ता। जबी झुंमल सू गुही,
वाजु बंध जराव फुंदना । जुरीयनकी पंक्ति बनी;
नाक वेसर बलय कंकण। मुद्रिका दर्पन अनी.
जेहर तेहर पायळ अनवट। बीछवन महावर चित्रकीये;
हस्त मेंदी मुकुर दीने। चंद्र नख लख श्रशी जीये,
नख सिखलें। सिंगार कहांळो। बानी हू थकी जात है;
श्री पुरुषोत्तम चल्लासको। रस रसिक मन ललचात है.

(&)

नीत्य लीलामें प्रभु बिराजे।
ज्यां जलधार तुटत न समाजे॥
ज्यां सिरता प्रवाह नही थांमे।
अविच्छिन्न धार चलत तट आवे॥
कबहुक नृत्य कर कलगाने।
कबहुक भक्त करत सन्माने॥
कबहुक रास कीडा उद्योती।
कबहुक जल कीडा कर पोती।

(वलण).

पेतमें हरि यूथ बेठे। खेवट आपु कहावही; चलत इतउत विहंसी मुख । बीतम प्यारीकों रीझावही, प्यारीको मुख देख बिन मश्च । ओर कल्ल न सुहातही, चकोर चंदा निरखके ज्यें। पलक नेन समातही. कबहुक रुदुको सरदको जस । गान सलना स्वर भरे; पूरन बहा स्वरुप सुंदर । सकल कारण अनुसरे, कबहुक तांबृल आप श्रीमुख । भक्त मुखमें मेस्नही. श्री पुरुषोत्तम उल्लासको । रस रसिक रसमें झेस्नही, (9)

योग शक्ति को आवरन करही। उन भीतर लीला सब धरही॥ गेालाकृत ज्यों रिवकी ज्योति। त्यों मायाको तेज उद्योती।

(वस्रण).

तेन पुंजको जानके । निराकार मतकेां अनुसरेः मायासंगी जीव दुष्टी । भरम भूले पचमरेः न जाने जो ईश्व ब्रह्मा । वेद हू नित गावहीः श्रीपुरुषोत्तम उछास रस तज । गणितानंदको ध्यावहीः

(2)

परमानंद उल्लास बढ्यो जब ।
सुजस वंदीजन गान करे सब ॥
रूचि उपजी हरि जुको भायो ।
नीकसी ऋचा स्वरुप मुख आयो ॥

(बलज).

नीकसीरूचा स्वरुप भीमुख । सुयश्चगान सुनावहीः आप सुनीयत मग्न बहेकें । बर मांगो ज दीवावही, तब रुचा रुप कहे वरज देहु । यह लीलाकों अनुभवेः श्री पुरुपोत्तम उल्लासको रस । रसिकको चाहन छहें.

(9)

वाको प्रभु जु वरदीनो । मेरो ही व्रज मोही रस भीनो ॥ प्रगट होय तुम द्वारा रसमानो । पाछे ते मोही आया जांनों।।

(वलण).

जांनो जा आयो मोहीको। अवयह लीला सुख तुम देहहू, श्री गेविद्धन यसुना वृंदावन। रसमें यस हैं। नित रहुं; ओर सखी खट दश हजारे। वाको वर दीनों जवें; बेहु मगढ जु होयगी तव। तुम इनको सुख देहो सबे. कल्प सारस्वत व्रजकी लीला। पंछी जन लख आसहे, ताही देवी सृष्टि रसिकन। श्री पुरुषोत्तम उल्लास हे.

(%)

देवी सृष्टि उद्धारन कारन।
श्रीवस्त्रभ प्रिया मुखी सुधारन॥
बतीस लक्ष जीवकी गीनतो।
लीला रस ते भक्त प्रतीती॥
वहे चिंताकरि तपत बुझावन।
आज्ञा भइ वस्त्रभ मन भावन॥

(बलण)

आज्ञा भइ निज वल्लभकों। ब्रह्मसंबंध तुमज्ज करावहुं, सकल दुष्कृत दूर करि। सेवा प्रयत्न जतावहुं. श्री गावर्द्धन गिरिकंदरामें। देव दमन कहावही. आपु सेवा करो करावा। पगट लीला दीस्वावही. पवित्रा माल उरधार वशकर। जीय बत्तीश लक्षवरे, गिरिराजधरको रुप सुधारस। पीवत नेना दुःख हरे. श्री गावर्द्धनधर जुकी लीला। मेरे हृदय में रमी रहो, श्रीपुरुपोत्तम उल्लासको। रस रसिक जन मिलनित कहो.

श्री टाकोरनी श्री जसादानी मत्ये. श्री वहुमकुळनी सेवा-भावना वर्णवे छे.

(राग नट).

रबा मोही श्री वल्लभ गृह भावे,

मृन मैया तुं मो डर, माखन दृध दह्यो छीपावे, १

त् अती कुर कपन हुं हहा कहुं, नीत प्रती मोही खोजावे,

मेरे पान जीवन धन गोरस, नीत प्रती मोहां भावे. २
स्वीर खांड पक्यान वीवीध छे, प्रातही मोही जगावे,

तेळ सुगंध ळगाय पीतसों, ताते नीर नहवावे. ३

भूषण वसन वीवीध मन भाए, पछटी पछटी पहेरावे,

नन आंजी तीलक मृगमद करी, द्पन मोही दीखावे.

खटर्स व्यंजन मोही जीमावत, हीतसेां बीरी खवावे, भारा चकड़ वीवीध खीलोना. लेकर मोही खीळावे. ५ बीवीध कुसुम अपनेंकर गुहीकें, ले माळा पहेरावे, र्मुं तद पर्यक संवारी मृदुल अती, तापर मोही सुवावे. ६ उत्थापन भयो पहर पाछले, व्रजजन दरस दोखावे. संध्या भोग धरत अती हचीसेंा, सेन भाग धरी लावे. ७ गादोहन म्बालन संग करकें, ग्रुरली करही गहावे, गैयन मीलवत वच्छ बुलावत, रुजनन मोद बढावे. ८ जन्म दोवस जब आवतमेरी, आंगन मातीन चाक पुरावे, वाजन बाजत बहु वीध द्वारे, वंदन बार वंधावे. मेरे गुन गुनीयन पर मोकां, सुरन सुशब्द सुनावे, हरद द्व अक्षत दथी कुम्कुम्, मंगळ कलश भरावे. १० धेतु दीवाय द्वीजनकुं मोपे, आञ्चीर्वचन पढाचे, केतीक बात कहुं में हीतकी मोपे कहत न आवे. ११ पछनां ब्रुष्ठावे वीवीध खीछोना, रंग रंग के छावे, दधी कादो अती करत मीतसीं, फूळे अंग न मावे. १२ रावलमें राघा जब मगटी, मनमें मोद बढावे, श्री राधा मंगल कीरती जस, सुर सुवधाइ गावे. १३ वामन रुप धर्यो भूव उपर, बळीके द्वारे आवे, तीन पेंड पृथ्वी मागी, सो हरी कबहु न समावे. १४ लीखादान महा रजमीमें, करी सीर मुकुट धरावे, दानीराप नामधर मेरी, करमें छक्कट धरावे. १५

नव दीन नये भोगधरी मेाकं, वीधीसें भाग धरावे, सांझी चीत रतन थारीमें, वारत सांझी गावे. १६ वीजय करनकुं दीन दशमीको, राम छंक पर धार्वे, यव अंकुर शीर उपर धरकें, वीजय मुहुरत सजावे. १७ पून्यो शरद रासदीन मेरी, नटवर भेख बनावे, मार मुक्ट पीतांवर काछनी, रास वीलासही गावे. १८ धन तेरस दीन धन धावनमीस, धन एक मोही जनावे, वीवीध सींगार भाग रस अर्पत, हुज भक्तन मन भावे. रुप चतुर्दश दीस मंगल छखी, अग अंग उलटावे, वीवीध भांत पकवान मीठाइ. छे छे भोग धरावे. २० मुरभी वृंदन ज्योति कुहुंजीश, सुरभी कान जगावे, दीप दान दे नीस इटरीमें, चोपर मोही खीलावे. २१ मात समय गाेेें पूजन करी, मल्हरा हाथ गहावे, वीधि सेां अन्नकूट रची मोकें।, गाधन लीखा भावे. २२ भाइदुज भाव यम्रना सेंा, वीधी सें। न्याती जीमावे. ब्हेन सहोद्रा तीष्ठक करतहे, आर्दार्वचन सुनावे. २३ गोप अष्टमी गाय चराइ, म्बाडन के संग धावे, थोरी धुमर गांग बुकाइ, म्रुरली मधुर बजावे. २४ कारतीक श्रद एकादशी के दीन, इश्च कुँण बनावे, पाट सुरंग वसन पहेराए, परभ मबोध मनाबे. २५ धनुर्मासको भोगवीवीध रची, चार पहर अस गावे, व्रतचर्या लीका रस अनुभव, ग्रुप्तसो मगट दिखावे. २६

पुत्रमास नामीको शुभदीन, उत्सव मेा मन भावे, दैवीजन उद्धारे मेरे; द्वीतीय स्वरुप धरावे. २७ रुतु वसंत जान जीय अपने, रची सुगंध छीरकावें: वसंत बनाइ लीए ब्रजकलना बहु वीध खेल मचावे. २८ डांडा रोपन करी पूनो दीन, सरस धमारही गावे, बहुवोधी हीलगोछ चांचर खेले, छीरके ओर छीरकावे. सरंग गुलाल अवीर इमडुमा, युका वंदन लावे, सातम पाट उत्सव दीन, मेरी, केसर रंग छीरकावे. ३० अग्यारस कंत्र बनाइ भीतसीं, माथे मुकुठ बनावे; चोवा चंदन छीरकत कुंजन, खीला अद्भुत गात्रे. ३१ पुन्यो होरी जहां तहां मगटी, ग्रमक चेतन गाने, रात दीवस रस होहोहो कही, गृारी भांड भुँडावे. ३२ परीवा डेाल इलाय भीतसें।, भारी खेल खीलावे, भाग राग बहु रचत डेालपर, झोटा देत दीवावे. ३३ द्वीतीया पाट सींघासन रचीके. तापर मोही वेठावे, मर्यादा चीत छाइ श्री बल्लभ, दान देत हरखावे. ३४ वीवीध फूछ रची करत मंडली, अद्भुत् महेल बनाबे, कोमल गादी करी ता पर, तहां मोकुं पधरावे. ३५ चैत्र श्रुद नैामी को श्रुभ दीन, रामचंद्र ग्रह आवे, मात कै। शल्या कुख पथारे, जन्म जयंति गावे. ३६ वदी वैशाख एकादशी मगटे, श्रीवल्लभ मन भावे. मात एलंमा करत वधाइ, वल्लभ नाम धरावे. ३७

भुदी वैशाख नृतींह दीनचतुंदशी भक्तन पक्ष द्रढावें. जन महलाद राखी संकट ते, वेद वीमल जस गावे. ३८ शुदी वैशाख अक्षय त्रतीया दीन, मीतल भोग धराचे. चंदन भोग करत अंग अंग शती, पंखम बायु हुरावे; ३९ जेब्रा पुन्यों स्नान यात्रा, जल्डस्तान करावे 🖰 सीतल भोग धरत मन भाए, मोमन ताप नसावे. ४० शुदी अचाड द्वीतीया पुष्य नक्षत्र रथ ही मोही बेटावे, तरंग चलत अवनीपर चंचल, राग मल्हारही गावे. ४१ द्रज भक्तन के घरघर दे सुख, भोग अनूपम छावे गोपीजन मन मान्यो करकें. सजी आरती उतरावे. ४२ वरखा पुष्टी परम अनूपम, कमुंवीसाज सजावे; 🖫 वरस्वत मेह घोर चहुंदीयते, लीला सरस जनावे. ४३ हींडोरा सावनमें गृह गृह रची, छलीतादीकन झलावे. पचरंग वागे वस्त्र रंगरंग, आभरन बहुत धरावे; ४४ उकुरानी तिज हींडारे झुछे वरसाने मन भावे. कुंजन कुंजन झुछ झुछावत, सरस मधुर सुर गांव. ४५ पवीत्रा एकादशी नीश, आझा मन भावे: ब्रह्म संबंध कीए श्री ब्रह्मभ, मीश्री भाग धरावे. ४६ दैबी जन उद्धार कीए सब, पवीत्रा छे पहेरावे: भयो पगट गारग वल्लभको, त्रज्ञन मोद बढावे. ४७ राखी बांधत बेन सहोद्रा, मोतीन चेाक पुरावे; तीलक करत रोरी अक्षत ले, आरती बारत भावे. ४८

यह विध नीत्य नैातन सुख मोक्कं. बल्लभ लाड छडावें; मे जाणुं के यल्लभ जाणे, के नीज जन मन भावें. ४९ अती मतीमंद करम जड कलीके, जे मीथ्या करी गावे; रसीक कहे श्रीवल्लभ क्रपावीन, यह फल कबहु न पावे.५०

नित्य लीला भावना.

प्रात समय उठिके बुजबाला,

99

गावत मंगल गीत रसाला १
किर श्रृंगार मथनियां धोवें,
अपनो अपनो दह्या विलोवें. २
मथन करें मोहन यस गावें,
सुमिर मुमिर हरिग्रन सुचुपावें ३
माखन मिश्री दही मलाई,
ओटयो दूध कपूर मिलाई. ४
कल्लुक मनोरथके पकवान,
थार सजावित सुन्दर वान ५

नये वसन भूषण हरिलायक, ले जु चली सुन्दर सुखदायक, ६ अतिही सुरँग खिलैाना लीने,

विविध मनोरथ मनके कीने. ७

उठे ग्वाल खिर्कन को चले,

अति आतुर गायन सों मिले ८

टेर करत सुरभी समुदाई,

कारी पिरी धोरी आई ?

काजरि धूमरि और मजीठी,

सब गुण पूरण सबै अनूठी १० वंटानाद करत सब डेालें,

अपने अपने बछरन खेाहें. ११ श्रृंगनाद खिरकनमें साहे,

श्रवण सुनत सबको मन माहे, १२ मंगल शब्द कानन जब पर्यो,

सकल साज करमें लै घन्या १३ इहि विधि सब घर घरते चली,

नँदनंदन को देखन अली १४

सुखशय्या पाढे हरिराय, वारम्वार यशोदा माय. १५ फिर झांके फिर फिर के आवें. कमल नैन की नाहिं जगावें. १६ ताही समय आई ब्रज बाला, मनो मत्त गयन्दकी चाला. १७ भूषण की धुनि सुनि नंदराई, चैंाकि उठे तब कुमर कन्हाई. १८ निकट आय यशुमति माय, वदन देखिकै लेत बलाय. १९ विथुरी अलक लटपटी पाग, पीक कपाल मुख अंजन लाग. २० चंदन ऊपर बिन गुणमाल, भूषण इत उत परम रसाल २१

यह शोभा निरखत बृजबाल, रसमसे नैन देखे नँदलाल २२ यशुमति धाय उछंगहि लीनो, चूमि बदन उर शीतल कीनो. २३ मंगल भाग आनि कै राख्यो,

श्रीगिरिधरलाल स्वाद सूं चाख्यो. २४ माखन मिश्री मात खवावे,

धोरी की पय अतिसो भावें २५ द्धिकीछींट लगी तन शोभित,

माने। उड़गण अंवर ओपित. २६ लपटानों मुख यशुमित देखे,

अपनो जन्म सुफलकर लेखे. २७ दोंकि वदन अंचलसों जोदे.

रंचक यमुना जलसें। घोवै. २८ टुनि अचवाय खवावै बीरी.

शकल साज सज लिये अहीरी २९ मंगलकी आरती उतारी,

शोभा देख रहीं ब्रजनारी ३० कनक पीठा बैठे मन मेाहन,

लागि रही यशुमित अति गाहन. ३१ कोऊ हरिकों तेल लगावे,

परसत अंग परम सुख पार्वे. ३२

काऊ हरिकों उवटनें। करें,

विविध मनोरथ मनमें धरें, ३३

कोऊ बेनी ले करमें गहैं,

ताऊपर पुनि कंगइ करें. ३४

कोऊ कनक घटजल लैरहे,

कोऊ पदअंबुज करगहे. ३५

कोऊ जलसें। स्नान करावै,

अंगवसन करि अति सचुपावें. ३६

कोउ तनिया अंग पहिरांवै,

कोऊ सूथन सरस बनावै ३७

कोऊ वागा पदुका करें,

कोऊ विधिसों भूषण धरे. ३८

कोऊ कुलह सुरंग धरे शीश,

पाग बंधावहु गोकुल ईज्ञ. ३९

तुमतो हो ब्रजराज लड़ेते,

सब लरिकन में गुणन बड़ेते. ४०

मोर चन्द्रिका गुञ्जाहार,

ब्रजभक्तन के प्राण अधार. ४१

काऊ नैन अंजन अंजवावै,

कोऊ मृग मद तिलक लगावै. ४२ पुहुपमालले कंठ लगावै,

संकेत सदनकी ठौर बतावै. ४३ रतन जटित मुरली कर दई,

माहन परम प्रीत सों लई. ४४ तब आई बृषमान दुलारी,

छिब पर बारों काटि कुमारी ४५

अंजन दग केशर की आड़,

सब जुवतिन में लाड़ली लाल. ४६ हठकरी हरि श्रृंगार करावें,

बहु बिधि भूषण बसन बनावें. ४७ नखिशखलेां श्रृंगार करांवे,

देख ग्रपाल परम सुखपावै. ४८ मधुमेवा अरु बहुत मीठाई,

मुदित यशोमित गाद भराई. ४९ सन्मुख आय रही ब्रजनारी, दर्पण देखहु कुंज बिहारी. ५० वेतौ हरिमुख कमल निहारें,

हरि राधे बिधु बदन निहारें, ५१

सोभा देखिरही बुज नारी,

हंसि हंसि देत परस्पर तारी. ५२

श्रीगापीवल्लभ भाग धर्यी,

सोता भुवन भुवन प्रतिकर्या. ५६

वरी दही सधाना शाक,

माखन बूरेा बहु विधि पाक. ५४

सबहीं के मन रंजन कारन,

प्रेम सहित लीनों मन भावन. ५५

भोग सराय बीरा जब दीनों,

विविध भांति मनारथ कीनां. ५६

मनसा पुरण नंद कुमार,

ठाडेहें यशुमति के द्वार. ५७ - ॐ----

मैया मथिमथि घैयाप्यावे,

बारबार उर अंतर लावे. ५८

वेनी बढ़ें लाल पय पीजे,

इतनो कह्यो हमारो कीजें. ५९

धौरी को पय परमरसाल,

सातघूट जेा पीजै लाल ६०

बदनधोय बीरा जब लीनां,

मैया तवहि खिलौना दीनेां. ६१

ठाडी रही रोहिणी रानी,

मीठी बात कही मनमानी. ६२

खीर सिरात स्वाद् नहिं आवे

यास द्वैक मुख अंतर लावै. ६३

अतिहित सेां तब भाजन कीनां,

तबही मात खिलोना दीनों. ६४

खेळत फिरत सखा संगळीने,

खिरक खोरि गिर गहवर भीने. ६५

अति प्रवीन यशुमतिको पूत,

सबहिन को मन लीनों धूत. ६६

चोरी करी सबहिन सुख देत,

गापिनको सरवस हरि छेत. ६७

करि संकेत बुलाइ गापी,

इनते। सब मरजादा लोपी. ६८

सबहिनको कीयो मन भायो.

ता कारण यह वृजमें आयो. ६९ यसुमति सखीयनसां जु बुलावे,

कमल नैंनकू कहूं नपांवे. ७० देखोरी ग्रुपाल कहां खेलत,

कहों जाय यशुमित ताय बालत. ७१ तब माताकी जानी प्रीत,

आय गये गिरधारी मीत ७२ वैठे आय कनक आसन पर,

नंदराय पकरे करसों कर. ७३ भाजन के। बैठे नंदराय,

तुम संग भोजन करहुं आय. ७४

कनक वरन झारी जमुनां जल,

भरलीनी यशुमित मन उज्जवल. ७५ पनवारेा जाेर्यो विस्तार,

्तापर धर्यो कनक को थार. ७६

वेंला छोटे माटे धरे,

चमचा रत्न जटित तणं खरे. ७७

अगर धूप कीनो ता ठोर, हितसों प्रभुजी लीनां कै।र. ७८ मिरचन के कीने बहु शाक, हितसों रें।हिणी कीने पाक. ७९ ठाडे मंग और दार बनाई. ताके पास कढ़ी है आई. ८० अति सुगंधि चामर को भात, श्रीति धर्यो है यशुमति मात. ८१ शिखरन भात दही को भात, खाटो ओर बड़ी को भात. ८२ तीन भांतकी तुरई करी. पापर भूँजे और तिलवारी करी. ८३ भरता बेंगन चकता करे, अरवी सूरन समे है धरे. ८४ करेला सुरेला ककोका करे. खडवा खडवी गलकाधरे, ८५ बहुतभांति की भाजी धरी,

बहुतभांति की कचरी तरी. ८६

शकरकंद को मीठा शाक, पेठामें मिश्री को पाक. ८७ रायता कीने इकीस भांति, सधाना की केतिक पांति. ८८ विलसारू कीना जो बनाय, जेमत हरिको मन न अघाय. ८९ व्यञ्जन बहुबिधि गिनेन जाय, बारम्वार यशोदा माय. ९० पूरी राटी लीटी करी, मीसीराटी घीसूं भरी. ९१ माखन बूरा पास धरायी, छचई है सिखरन सेां खायो. ९२ सेंव बहुत बूरासेां करी, सोता लाय निकट ले धरी, ९३ वडामठाके सुंदर कीने, तीनकूंडा अतिही रसझीने. ९४ मैया माकूं शिखरन भावे,

वेला भरि भरि रेाहिणी लांवे. ९५

सुरभी घृतसों वेळा भर्यो,

सोतो भात शिखरन पर धर्यी. ९६ ओटग्रो दूध दही के। बेला, मीठे आम अरु सुंदर केला ९७

आंब को सीरा जु कीनों,

सोतो प्रभु नें रुचि सों हीनों. ९.८ खरबूजा और आहो मेवा,

बहु विधि यशुमित कीनी सेवा. ९९ छोंक्यो मग परम रुचिदायक,

सोतौ केवल हिर जु लायक. १०० इह विधि लालन भोजन कीनों,

मात यशोमतिकुं सुख दीनों. १०१ करि आचमन ठाडे आंगन में.

अति सुगंध बीरा आनन में. २ श्री कर में बीडा बहु लिने,

सोतो वांट सखन को दिने. ३ थाक विचित्र कुंदकी माला,

रु आइ पहरें नंदलाला ४

कर मुरली और बैत गहाई, ब्रज वनिता देखे सुख पाई. ५

ब्रज वानता दख सुख पाइ. ५ नीरांजन बहु विधिसों कीनों,

नाराजस पहु ।पापरा पापा; हो।भा निरख वारनें। लीनेंा. ६

जब लगि हिर भाजन करि आवें,

तब लगि सहचरी कुंज बनावें ७ झोली भर भर पुहुप लै आवें,

परम प्रीति सें। सेज बिछावैं. ८

फ़ुलन की शूट्या है रचे,

तिकया गेंदुआ फूलन के सचे. ९

सेजबन्द फूलन के करें,

रंग रंग फूलन सों भरें. १०

फ़ुलन के महल खंभ चैावारे,

फूलन कलशधरे अति भारे. ११

अंग राग के बेला भरे,

अति सुगंध बीरा वहां धरे. १२

पुहुपमाल ले सुन्दर करी,

सो तो प्यारी उरपर धरी. १३

फुलनके पंखा लै आवै,

सोती कमल नैन को भावें. १४

पौढे पिया प्यारी के संग,

विविध भांति वरषत रस रंग. १५ सकल पदारथ लै आंगे धरे,

विविध मनोरथ मन में करे. १६ विविध भांति पियके संग खेली.

रस मरजादा सब है पेही. १७ श्रमकन सुभग अंगपर आई,

रस भरि पाढे कुमर कन्हाई. १८ जालरन्ध्र हु सहचरी देखें,

अपनेां जन्म सुफलकर लेखे. १९ घंटानाद भई सबठार,

संखन की धूनि भई चहुँ ओर. २० धूनिसुनि श्री गावर्द्धनधर जागे,

मानों प्रेम शिंघुमें पागे. २१ काकरी वीज खोवा अरु पना, केला आम खरबूजाघना. २२ फल फलेरी सों भोजन भरे,

सो ले कुंज भवन में धरे. २३ ग्वाल आपनी सुरभी देखी,

फिर कछु मन में मनसा लेखी. २४ वेणुवेंत ले चले कन्हाई, देख सहचरि अति सचुपाई. २५

आगे गौधन पाछें ग्वाल,

मध्य बिराजत गिरधरलाल. २६ च सम्बद्ध है गा

गारज मंडित करवर कैसा,

शोभित है अति सुन्दर वैसा. २७ मणि माला गुंजफलगरें,

गौरीराग वेणुमें करें. २८

संझा भाग है वाही को नाऊं,

सोता लीनां तहांइ ठाऊं. २९

व्रजवनिता आइ चहुं ओर,

श्री मुख निरखत भये। प्रमाद. ३० अति विरहन जे ब्रज की बाला, घेरलिये तब मदन ग्रपाला. ३१ कळुक मनोरथ उनको कीनेां,

गाविन्द गापिन को सुख दीनां, ३२ करि सतकार चले आगें ते,

करि संकेत रहे पाछेते. ३३

नन्द भवन में ठाडे आय,

प्रमुदित भई यशोमित माय. ३४

विविध भांति आरती उतारी,

करमें लिये कंचन की थारी. ३५

भीतर भवन पधारे लाल,

जुर आई सब ब्रजकी बाल. ३६

कोऊ तो श्रृंगार बढ़ावे,

कोऊ तेल फुलेल लै आवै. ३७

कोऊ मर्दन मंजन करे,

अंग बसन ले आगे धरे. ३८

वेणुवेत सेली कर लीये,

हरि जू तवहि खिरक में गये. ३९

सहज श्रृंगार किये अति शोभित,

निरखत तन मन अतिसे लोभित. ४०

धारी धूमर गंग बुलाई,

काजर पियरी देौड़ी आई. ४१

विविध भांति हरि दे।हन करें.

भोजन हे रसशों भरें. ४२

वतो ब्रजवनितन संकेत.

वे सव हिनको बाले लेत. ४३

व्रज वनिता की जानी प्रीति,

ग्वाल भाग लीयो रसरीत. ४४

सवहिनको कीया मन भायौ.

ता कारणें यह ब्रजमें आयो. ४५

यशुमति भाजन कीनों साजि.

वेग आइयौ मोहन आज. ४६

यमुना जलशों झारी भरी,

ले उठाय हरि पासें धरी. ४७

दोऊ भैया भाजन कूं आये,

यशुमति कनक थार लेथाये. ४८ दारभात मिरचन की शाक,

हितसेंा राहिणी कीना पाक. ४९

दूग्ध ओदन अति मोकुं भावै,

बेला भरि भरि यशुमति लावे. ५० इति विधि समस्य भेपन्य कीनें।

इहि विधि लालन् भोजन कीनों,

मात यशोमित कुं सुख दीनां. ५१ व्यारू करी उठे मन मे।हन,

लागि रही यशुमति अति गाहन. ५२ ओटचो दूध कपूर मिलाई,

डवरा भिर के रोहिणी लाई. ५३

इच्छा भोजन कर सुख पायौ,

तब रानी आचमन करवाया ५४ अति सुगंध बीरा मुख करी,

पुहुपमाल श्रीकंठ है धरी ५५

करि आरती श्रीमुख जब देख्यो,

अपनेां जन्म सुफल कर लेख्यो. ५६ रुनझुन करत अंग्रिरयां गहें,

मात यशोमति सब सुख लहे. ५७ सुखशय्या पाढे हरिराय,

चांपत चरण यशोमति माय. ५८

भांति भांति की कहानी कहें, हरि हुंकारी फिर फिर देहे. ५९ नित्य लीला कहो कैसे कहें,

सोतो व्रजजन मनमें लहें, ६० नन्द भवन की लीठा कहें,

मानुष देह धरि सब सुख लहें. ६१ श्री गिरिधर की लीला गांवें,

रतिक चरण कमल रज पावे. १६२

श्री दान लीला प्रारम्भ.

राग विनावल.

तुम नंद महर के लाल मेाहन जानदे। रानी जसुमित प्रान आधार मेाहन जानदे।। श्री गावर्दन की शिलरतें मोहन दीनी टेर। श्रंतरंग सें। कहतहें ग्वालिन राखा घेर॥ नागरि. ग्वालिन रोकी ना रहे ग्वाल रहे पविहार। श्रहो गिरधारी दे।रिये। कहा न मानत ग्वार॥ नागरी.

चळी जात गेारस मदमाती माना सुनत नहीं कान । दोरि आये मन भामते सा राकी अंचल तान ॥ नागरी. एक भुजा कंकन गहे एक भुना महि चीर। दान छेन ठाडे भये गहवर क्रंन कटीर ॥ मोहन. बहुत दिना तम बचि गई हो दान हमारे। मार । आजहां छेहां आपना दिनदिनको दान संभार ॥ नागरि. रस निधान नवनागरी निरख वचन मृद् बोल । क्यों मुरि टाडी होत हे घुंबट पट मुख खोल ॥ नागरि. हरख हिये हरि करिंच के मुखते नील निचाल। पूरन मगटचो देखिये माना चंद घटाकी ओल ॥ मोहन. छित वचन सम्रुदित भये नेति नेति यह बेन। उर आनन्द अतिही बहुचा सा सुफल भये मिलि नेन । ना. यह मारग हम लित गई कवह छन्या नहिं कान। आज नइ यह होत हे सो मांगत गारस दान ॥ माहन. तुम नविन नवनागरि नृतन भूषण अंग। नया दान हम मांगना सा नया बन्यो यह रंग॥ नागरि. चंचल नयन निहारिये अति चंचल मृद् बेन। कर नहीं चंचळ कीजीये तजि अंचल चश्चल नेन ॥ मेहिन. सुन्दरता सब अंग की वसनन राखी गोय। निरख निरख छिब लाहिली मेरो मन आकर्षित होय॥ ले लक्कांट ठाड़े रहे जानी सांकरि खार ॥ मुसकी ठगारी लायके सकत 😺ई रति जोर ॥ माइन. .

नेक दृरि ठाडे रहे। कछ ओर सकुचाय। कहा किया मन भावते मेरे अंचल पीक लगाय। माहन. कहा भया अंचल लगी पीक हमारी जाय। याके बदले ग्वालिनी मेरे नयनन पीक लगाय ॥ नागरि. सुधे बचनन मांगिये लालन गारस दान। भ्रों हन भेद जनाइके से। कहेत आनकी आन ॥ मे।हन. जैसें हम कछ कहतहे ऐसी तुम कहि छेहु। मन माने सा की जीये ये दान हमारा देहु ॥ नागरि. कहा भरे हम जात है दान जो मांगत लाछ। भइ अवार घर जानदे से। छांडो अटपटी चाल ॥ माहन. भरे जात हो श्रीफल कंचन कमल वसन सा ढांक। दान जा लागत ताही को तुम देकर जाहु निसांक।। ना. इतनी विनति मानिये मांगत ओली जोड। गारस को रस चालिये छाछन अचछ छोड ॥ माहन. संग की सखी सब फिर गइ छुनिहे कीरति माथ। भीत हीये में राखिये सा भगट किसे रस जाय ॥ माहन, काल्ह बहोरि हम आइ हैं गारस छे सब ग्वारि। नीकी भांति चखाइ हे मेरे जीवन है। बलिहार ।। माहन. स्रिन राधे नवनागरी हम न करे विश्वास। कर को अमृत छांडि केका करे काल्हि की आशा ।। नागरि. तेरा गारस चांखवे मेरा मन छलचाय। पूरन शशि कर पायके चकोर न धीर धराय ॥ नागरि.

माहन कञ्चन कछिसका लीनी शीश उतार। श्रमकन बदन निहारिकें सा ग्वालिन अति सुकुमार ॥ मा. नव विजन गहि लाछ जू श्री कर देत हुराय ॥ श्रमित भई चळो कुंज में नेंक पछोड़ं पाय ॥ नागरि. जानत हो यह काँन हे जैसी ढीठ्यो देत। श्री द्रषभान कुमार हे तोहि बीचको छेत॥ मेाहन. गोरे श्री नंदराय जू गारी जसुमति माय। तम याही ते सामरे असे छिछन पाय।। मोइन. मन मेरी तारन वसे आर अञ्जन की रेख। चेाली पित हिये बसे याते सावल भेखा। नागरि. आप चाछ सो चालिये यहे बडेन की रीति। ऐसो कबहुं न की जिये हँसे लोग विपरीति ॥ मोहन. ठाछे ठूछे फिरत हो और कछ नहिं काम। वाट घाट रोकत फिरे आन न मानत इयाम ॥ मोइन. यही हमारे। राज हे त्रजमण्डल सब ठार। त्म इमारी कुमुदिनी इम कमल बदन के भींर ॥ नामरि. ऐसे में कोच आइ हैं देखे अदभुत रीति। आज सबे नंदलाल जू मगट होयगी पीति ॥ मोहन. ब्रज वृन्दावन गिरिनदी पशु पंछी सब संग । इनसें कहा दुराइए प्यारी राधा मेरी अंग ॥ नागरि. अंस भ्रजा धरि छे बछे प्यारी चरन निहोर। निरखत छीला रसिक जू जदां दान की ठेार ॥ मोइन.

राग काफी.

श्री त्रजराजके धाम बधाइ बाजही। धुनिः सुनि उठी अकुलाय मेघन ज्यों गाजही॥ जहां तहां ते चली धाय अटिक नंद पारपें। वे गावत मंगल गीत उंचे स्वर घोरपे॥ नौतम सहज सिंगार किये अंग अंगमे। वसन लेहेरीया भांत बहु रंग रंगमें॥ धूम मची सिंघद्वार हेरी देदे गावही। प्रेम उमगि व्रजनार गिने नहीं कावही भ कोऊ नाचे काऊ गाय काऊ कर तारी दे। कोऊ सिरतें द्धि माट फारकर डारी दे॥ बाबा नंद नचावत ग्वाल नाचे बड भूपही। सब तन्यों रसबेस भये एक रूपही॥ जाचक गुनी अनेक जुरे नंद धाममें। मने। वांछित फल देत हीरामनि दानमें॥ देत असीस जीयो वजराजको लाडिलो। चंद सूरजको तेज तपे सुख बाढिलो॥

श्री वस्त्रभके चरन शरन सुख पावहीं। तेापें रसना रसिक रसाल सदा ग्रन गावहीं।। राग देवगंधार

ञ्जलो पालने नंदनंदा। यं खं खं खं चूरा बाजे मनमें अति आनंदा ॥ दं दुं दुं दुं घूघरु बाजे तनन तनन सी बंसी। नेन कटाक्ष चलावत गिरिधर मंदमंद मुखहंसी॥ खटखट खटखट लकुटी वाजे चटक चटक वाजे चुटकी। नंदमहर घर शोभा निरखत मोहन मनमें अटकी ॥ कुहु कुहु कुहु कोकिल बोले भनन भनन बोला भोंरा। पी पी पी पंपैया बोले संगीते सुर दोरा ॥ झु झु झु झुनझुन वाजे फिरक फिरक फिरे फिरकी। गुड गुड गुड गुडकी बाजे प्रेम मगन मन निरखी ॥ ढों ढों ढों ढों ढोलक वाजे गुनन गुनन गुन गावे । राधा गिरिधरकी बानिकपर रसिक सदा बिल जावे॥

क्रमशः

श्री चन्दाबेटीजी कृत.

शरद निशा सुखकारी। चहुंदिश फूल रही फुलवारी॥ छबी देख रसिक रस भीना। रास रमनका हरि मन कीनो॥१

मन किया हरि जब रास रमनको, सुंदर रसनिधि वपु धरे,
तिही छिन उडुराज उदचो । चर्षणी कारज सरे.
अपने करसेां पाची दिस । मुख अहन रंग छेपन करे,
जैसे पियतम पिया बदनकों । मंडित कर आनंद भरे.

अखंड मंडल छिब छाई। चहुं दिस कुमुदिनी विकसाई॥ नव कुमकुम की अरुनाई। रमा मुखकी मानो चुति दमकाई॥

दमकाइ द्यति मानो रमाम्रुखकी। कोमल रिक्स वन रम्मो, देख नवल निकुंज नायक। रिक्स रंगमें रग मन्यो. मदनमोहन कोमल करसों। छे मुरली अधरन धरी, सुने तिनके ४न हरनको। मधुर गान कियो हरि.

सुन्यो गीत अनंग रंग कारी। तव वे विवस भई व्रजनारी॥ अति आतुर पिय पें धाइ। कुंडल लोल कपोल छबि छाइ॥

काहू दोहत तजी दोहनी। काहू ओटत पय तज्येाः कोइ पियही परेासत भाजी। सेवा तज मियतम भज्येा. काहू प्यावत शिश्च छोडे। काहू भाजन तजी दिया, उबटना कोड करत भाजी। मंजन हू नाहीं किया.

> एक एक लोचन अंजन सारे। वस्त्र भूषण कहूं के कहूं धारे॥ सब आयी पियके पासा। देखतही मन भयो हे हुलासा॥

देखत ही मन भया हुस्नासा। मुकुट छिब मनमें वसी. कान कुंडल अलक अस्रकें। कपोस्नन उपर बसी, वंक भांह विशास लोचन। अनियारे रंगरस भरे, नासिका गज मोती शोभित। इस्न अधरन मन हरे.

> हीरनहार मणि मातीन माला। बोजु पहोंची सुंदर रसाला॥

कटि काछनी किंकिनी राजे।
चरनन नूपर विछूवा बाजे॥
त्रपुर विछुवा राजे चरनन। पीताम्बर घन दामिनी;
सुंदर पियको निरसी शोभा। मत्त रसमें कामिनी,
अति प्रसुदित मन चरन परसत। निकट देखी सुंदरी,
तब व्रजचंद मवीन धारे। मोहक वचन कहे हरि.

क्रमशः

श्री भा मि नी व हु जी.
श्री वह्नम श्री विद्वल श्रीजीरे रमवाने आवो,
श्रीनवनित प्रियाजी न्हानारे संगे तेडीने लावो.
श्री बालकृष्णजी बालुडारे बेलडीए आवो,
श्रीनटवरलालजी प्राण प्यारारे,
एमने तेडी लावो.

रमवुं जमवुं रंगेरे, वहालाना संगे, कह्यां अमारा मानोरे, शुं थाओ छो ढंगे. श्री गोसांइजी महाराज, तमने कहुं छुं रे गुजरात पथारो,

त्यां सरवेने दर्शन देइनेरे, पुष्टि मार्ग वधारो. सहने समर्पण आपोरे, तेवां अमने आपो, सह वैष्णवने तायीरे, एवां अमने तारो. मध्यराते मंदिरमांहेरे, वांसलडी वागी, भरनिंद्रामां सुतीरे, झवकीने जागी. ओचिंती अजाणीरे, बारणे आबी, पाडेाशणने पुछ्युंरे, मोरली क्यां वागी. जो तहारा मंदिरमांरे, वांसलडी वागी, श्रीयमुनांजीने तीरेरे, मोरली त्यां वाग़ी. श्री पुरुषोत्तमजी महाराज, तमने कहु छुंरे, श्रीजी द्वार पधारो. भामिनो बहुजी दासीरे,जमुनापान करवा पथारो. चर्ण शर्ण अमने राखोरे, एटछुं छे कामजी, अहोनिश दुर्शन देजोरे, देउ तमारुं नामजी.



॥ श्री शाभामाजी. ॥

प्र स्तुत् माजी महाराज विशे अमने नीचे मुजव वे जुदां जुदां प्रमाणा मळ्यां छे. जेथी आ के वे पैकी क्यां शोभामाजीनी आकृती छे, ते अनुभवीओ जणावशे तो अमो कृतार्थ थर्थ अने पुनराहितमां सुधारी करीथ

- ? सदाचार चंद्रोदय नामक एक नाना ग्रन्थमां जणाच्युंछे के,श्रीमशुरेशजीना टीकायतनी शाखामां श्रीहजरत्नजी महाराज थयाछे के जेमनां बहुजीनुं नाम श्रोभावहुजी हतुं. तेनुं मंदीरश्री गेाकुछमां श्रीमदन मोहनजीनुं छे. आप छै।किकमां कशुं देखतां नहीं (महा चश्च हतां) छतां शृंगार अने सेवानुं बधुं कार्य करी शक्तां. आ चहुजीए श्रीमद् भागवतना गुजराती भाषामां सुंदर धोळ बनाव्या छे जे आजे आपणा बैरांओमां गवाय छे.
- २ श्री कांकरे। छीवाळा श्री गिरिधरंजी महाराजना १२० वचनामृतमां जणाच्युं छे के श्री शोभावहुजी पोरवंदरवाळां ए भाषामां धोझ बनाच्यांछे अने श्री सुवोधिनीजी अनुसार भागवतना द्वादशस्कंध पर्व-

तनां घोळ १६ बनाव्यां छे. उपरांत घणां घोळ, पद कर्यां छे अने " इरिदास " छाप राखी छे. आपने श्री इरिरायजीतुं ब्रह्मसंबंध इतुं. तेथी गुरू भाव दृढ करवा इरिदास नाम राख्युं छे. अस्तु०

खु ला सी.

हरिदासनी छापनां घणांज धोळ, पद इत्यादि छे अने हरिदास नामना घणा बैण्णव किव ओनी ते रचनाछे एउळे जे जे धोळमां हरिदास छाप आवे ते तमाम मस्तुत् माजी महाराजनां नथी. आपे पोतानी कृति अन्य हरिदासोमांथी जुरी पडी जाय एवी चतुराइ वापरीछे. एटछे आपना धोळ-पदने छेळे शोभा अने हरिदास एम बन्ने नामना चळेख छे एक पण पद एवं नथी के जेमां उपरोक्त बन्ने नाम न आवतां होय—माटे दरेक भगवदी-योने विनति छे के जे पदमां शोभा अने हरिदास बन्ने शब्दो होय ते तमाम शाभा माजीनां समजवां सिवा-यनां नहीं.

शोभामाजीनां धोळ-पदना अंतमां "शोभा" अने " हरिदास " एम वे शब्दोना योग अवश्य आवे छे, हरिदासना नामथी अन्यान्य पद, धोळ पण रचायलां छे. परंतु तेमां उपर जणाव्या मुजब वे शक्रोना योग थता नथी ते खास स्रक्षमां छेवा सर्वेने विनती छे.

॥ श्री महाप्रभुजीनां घेाळ. ॥ राग आशावरी.

श्री लक्ष्मण भद्दने घेर ए कूळ दीवोरे। भले प्रकटचा श्रीवहाभराय ए घणुं जीवोरे ॥१ एउना सुत छे बेउ अतिसे रुडारे। नहिं नामे एमने शीष ते जन कुडारे॥ २ श्री अंकाजी कुखे अवतर्या सुखकारीरे। गेापीनाथ श्री विद्वलनाथ ए पर वारीरे ॥ ३ वळदेव श्री गोपीनाजीने जाणारे, श्री कृष्ण श्री विद्वलनाथ ए ब्रजराणोरे ॥ ४ श्री पुरुषातमजीने प्रेम धरीने गायरे। तेना जन्मो जन्मना प्रायश्चित सर्वे जायरे॥५ श्रीविद्वलनाथजीना सात कुंवर सुखदातारे। कलियुगमां पुष्टि प्रकाश करे विख्यातारे ॥६ श्री मथुरानाथ मनोरथ पुरे मननारे। समरी श्रीनटवरलाल जाय दुःख तननारे ॥७

श्री गिरिधरजी गुणवंत सहुने गमतारे। जइ जुवो श्रीजी नवनीत प्रियाजी शुं रमतारे॥ श्री गोविंदराय रस मग्न रस भरी निरखोरे। एमने मंदिर श्रीविद्वलेशराय जोइजोइ हरखारे श्री वालकृष्णजी कृपा करीने सुख आपोरे। श्री द्वारकांनाथजीनां रुप हृदेमां स्थापोरे॥ श्री वहःभ गोकुळनाथ सेव्या गिरिधारीरे। जेणे राख्यो माला प्रसंग ते पर वारीरे॥ श्री रघुपति रुडला जोइने मनडुं मोहेरे। एमने मंदिर श्री गोकुळ चंद्रमाजी सोहेरे ॥ श्री जदुपतिजी छे जुगते जोवा जेवारे । एमने मंदिरेश्रीबालकृष्णजीनी सुंदिर सेवारे॥ श्री घनश्याम पूरण काम इ घणूं रसीयारे । श्रीमदनमोहनजी महाराज महारे मन वसीयारे ए शोभा जोइ हरिदास जाय बलिहारीरे। ए लीला गाजो नित्य नर ने नारीरे॥

पोष नोमे श्री विष्टलनाथजी, हांरे व्हालो प्रगटया श्री वस्लभ द्वारजो। एमने जोवाने थइ व्याकुली,

हां रे वहाले कीधी सेवकनी सारजो ॥ प्रथम श्री नंद घेर प्रकटीयो, हां रे वहाले पुर्या श्रीजसोदाजीना कोडजो। रमतां सखा बहु साथमां,

हां रे वहालो हिर हळधरजीनी जोडजो ॥ हवे वस्लभ सुत ए थया,

हां रे वहालो श्री गोपीनाथजीना भ्रातजो। गोदमां लेइने द्वलरावता,

हां रे धन्य धन्य श्री अंकाजी मातजा ॥ एहनां सुख कोइ कही नव शके, हांरे धन्य धन्य श्री यमुनाजी नी वातजो ॥ ज्यां वहालो घेनु चरावता,

हारे वहालें कीधों छे रास विलासजा । वेणु वगाडी वृंदावनमां,

्हारे वहाले पुरी व्रज सुंदरीनी आसजाे ॥ २१ रास बिहारी व्रजवस्त्रभो, हांरे मने आपो श्री व्रजमां वासजा । करजाडीने करुं विनति, हांरे वहाला शाभा जुवे छे हरिदासजा ॥

श्री जम्रुनांजीनां पदः

धन्य धन्य श्री यमुना क्रपा करी।

श्री गोकुल वज सुख आपजाे ।

त्रजनी रजमां अहरनिश अमने,

थिर करीने थापजा ॥ १

तमे महोटां छे। श्री महाराणी,

तमे जीव तणी करुणा जाणी। हमने शरणे लीधा ताणी,

धन्य धन्य श्री यमुना ॥ २

श्री वनरावननी वाटमां,

नहाये श्री यमुना घाटमां । वाले रास रमाड्या रातमां. धन्य०॥३ चालो ते। थैये व्रजवासी,

परिक्रमा करीए चोरासी । वाले जन्म मरणनी टाळी फांसी, धन्य.॥ ४

पथरावो सात स्वरुप सेवा,

वैष्णवने लाभ घणा लेवा।

आरोगावो मीठा मेवा, धन्य०॥ ५ नंद्जु नो वालो वनमाळी,

कालिंदी कांठे धेनु चारी। वालो हिस हिस अमने दे ताली धन्य०॥६ वाले श्री गोकुलनी गलीयोमां,

महाराज मुने तो त्यां मलीया। मारा सकल मनोरथ सफल थया, ४०॥ ७ चालो तो श्री यमुनाजी नाइए,

त्यां अखंड व्रजवासी थाइए । एवी उत्तम लीला नित्त्य गाइए, धन्य०॥ ८ सखी समरोने सारंगपाणी,

वैष्णवने वाली ए वाणी। ए शोभा हरिदासे जाणी धन्य०॥ ९ श्रो यमुनाजी निरखे सुख उपजत, सन्मुख दृंदा विपिन सुहाये। श्री विश्रांत वह्नभ जु की बेठक, निर्मल जल यमुनांजीके नहाये॥१ भूज तरंग सोहत अतिनीके. भँवर कंकन सिराये। ब्रजपति केलि कहा कविबरने ? शेष सहस मुख पार न पाये ॥ २ श्रमजल सहित अगाध महारस, लीला सिंधू तरंगन छाये। सकल सिद्ध अलोकिक दाता. जे जन ताके चरन चित्त लाये ॥ ३ रिव मंडल द्वारा प्रकटी, गिरिकलिंद सिरतें भज आये। हरिदास प्रभु शोभा निरखत,

मन क्रम बचन इनके गुन गाये॥ ४

केलि कलोलन देखी जमुने। नंदनंदन कुंवरकेलि रस मतही, सुंद्री संग हे सुभग भवने। अधर मधुपानकर, सुरत रसदानकर, पिय प्यारी निरंतर रवने । ताही समे रसभरी भानु तनया खरी, प्रेम आनंदमें करत गवने ॥ २ पुन्य पूरन फल सकल जनके, जवें ताहि हित भूतल जमुने अवने। जुगल जारी हरिदास शाभा निरख, दुहूकर जेारिके करत नमने ॥ ३

----(c)----

आज आनंदमे सूर तनया सुभग,
इयाम सुन्दर संग केलि ठानी।
मधुर मुसक्यान अरसान रसमग्न,
करत कोकिल शब्द मधुरबानी॥ १
बहत गोकुल पास करत पूरन आस,

सकल सामर्थ जन अभयदानी। नंदनंदन कुंवर नवल जारी, हरिदास निरख शोभा बखानो॥२

•———o(c)•——— o

निरखो श्री यमुना सुखदायक। सबतज आस यहो इनकी, मन क्रम बचन भजवे लायक ॥ १ लहरी तरंग बढत ज्यों इनकी, त्यों हरि सनेह बढायक। अमित उदार कलिंद नंदनी, निजजन रस सर सायक॥ २ रोप सहस्र मुख पार न पावत, को कवि बरनन लायक ?। हरिदास प्रभु शोखा निरखत. प्रिय पद प्रीत सहायक ॥ ३

रामकली.

जमुना मोहन कोमन मोहे।
ज्यों प्रभु धर्यो स्वरुप मोहिनी,
त्यों श्रम सिलल सोहे॥ १
होत सहाय सबनको निसदिन,
केल करत प्रभु जाहे।
हरिदास प्रभु शोभा निरखत,
बरनी सकत किव को हे?॥ २

सिद्धांत रहस्यनुं धेाळ.

पृष्टिमार्ग सिद्धांतनी, सांभळी कहुं एक वात; श्रावण सुद एकादशी, वचन कह्यां मध्यरात. श्रीमद् बल्लभने मन, इच्छा उपनी एह; आज्ञा ब्रह्मसंबंधनी, प्रभुजीए कीधी तेह. पाताना जन जाणीने, चिंता धरी मनमांह; आतुरता दीठी घणी, श्रीजी पधार्या त्यांह. तमें। छो पूर्ण पुरुषोत्तम, जीव छे दोष सहित; ते उद्धारण कारणे, प्रभुजी धरजे। चित्त.

त्यारे श्रीजी एम बोलीया, सांभळा वहुभराय: नाम समर्पण जे करे, तेनां प्रायश्चित जाय. जीव जात होय जे कोइ, आवे तमारे शर्ण, ते उपर करुणा करी, राख़ीश मारे चर्ण. पित्रतं की धुं सूत्रनं, पहेराव्यं श्री जुगदीशः केसरी रंगे रंगीयुं, तार त्रणसे त्रणवीस. मीश्री भोग धरावीने, वस्त्र पहेराव्यां तेणीवार: कोरे छेडा कर्या केशरी, धाती उपरणा सार. सेवक जन सुख कारणे, श्रीजीए कीधो श्रम; नाम समर्पण आपीने, राख्यो वैष्णव धर्म. गिरिधारी मंदिरे पधारीया, सुख कह्यां न जाय; हरिदास शोमा जोइ जोइ;आनंद मंगल गाय. --o:(o):-o--

पुष्टिमार्गना पांच तत्वनुं पद.

पुष्टि मार्गना पांच तत्त्व नित्य गायेजी; तेना जन्म जन्मना पाप सरवे जायेजी. श्रीजी श्री नवनीतित्रया सुखकारीजी; समरे। श्री मथुरांनाथ कुंज बिहारीजी.

श्री विद्वलनाथ श्रीद्वारकेशराय गिरिधारीजी; श्रीगाकुलचंद्रमाजी श्रीमदनमोहनपर वारीजी. प्रथम तत्त्व श्री वह्रभकुलने भजीयेजी; कूडां लोकलाजनी कान सरवे तजीयेजी. आ बीज़ुं तत्त्व श्रीगोवर्द्धनधर नित्य गायेजी. श्री नटवरलालनुं गमतुं सरवे थायेजी. आ त्रीजुं तत्त्व श्री यमुनाजीने जाणाजी; करो स्नान जळने पान ए सुख माणाजी. आ चेाथुं तत्त्व श्री ब्रजभूमीने गाइयेजी; नित्य उठी वैष्णवजन पद्रज पाइयेजी. आ पांचमुं तत्त्व श्रीजीनुं ध्यान निरंतर कीजेजी ता मनवांछित फळ सरवे लीजेजी. ए पांच तत्त्व श्री ब्रह्मादिकने दुर्रुभजी; वल्लभ प्रभु प्रगट प्रमाण कर्या सर्वे सुलभजी. ए शोभा जोइ हरिदास जाय बलिहारीजी; ए छीछा गाजा नित्य नरने नारीजी.

शरद पुनमनो रास.

सांभल्यने सजनीरे व्रजनि वातलडी. ओतम अजवालीरे सरदनी रातलडो. १ आकासे उदीयारे ससीयल साल कळा, मध्यराते महावनरे आनंद ओघ ढल्या.२ जगजीवन उभलारे जई जमुनां तीरे, वालो वेंण वजाडेरे मुख मधुरी धीरे. ३ मारलीमां मोहनरे मीठडा वेद भणी, त्रीलेकि मोह्यांरे त्यां एक नादसूणी. ४ पाताळे पलंगरे मोही सरवे नागणीयुं, छत्रीसे रागेरे मोही सरवे रागणीयुं. ईद्रादिक माह्यांरे ईद्रने ईद्राणी, त्रह्मादिक मोद्यांरे ब्रह्मा ने ब्रह्मांणी, ६ शंकर ने मोह्यांरे उमीयाजी राणी, वेहेतां जलमोह्यांरे श्रीजमुनां महाराणी. ७ तपसी तप चुक्यारे मुनीवर ध्यान थकी फल फुलें फुल्यारे वन वन वनस्पति. ८

बाले मोर बंपैयारे मधुकर गुंज करे. गउधेन लाभांणीरे मुख थकी त्रण न चरे. ९ इंगरीया डेाल्यारे अष्टकुळ तेज करी, सुख सजा आपीरे, मोती वेल्य फरी. १० जे जेम ते तेम त्यांरे, चित्रामण लखीयां; थिर थावर थंभीयांरे दुखीयां थ्यां सुखीयां. ११ समुद्रनि लेहेररे, वारीवारी वेहे वेती. घरोघेर ठरीयोरे, शुद्धबुद्ध नव रहेती. १२ त्यां चिर ले लागीरे, पवन रीया मोहीने; आकासे उडगणरे चंद रीया जोईने. १३ चांदोने सूरजरे, थंभीया रथ झाली; घेरघेरथी गोपीयुंरे, सरवे त्यां चाली. १४ तनमां बहे वाध्यारे, विनता थई घेली: चतुरां वनचालीरें, एक एक पें पेहेली. १५ घरबारज तजीयांरे; पीयुने परहरीया, माबाप सजन सूतरे, तज्यां सरवे सासरीया. मंदिरीये मेल्यांरे, बालकने रोतां, पंथे परवरीयांरे, जई वनमां जातां, १७

शरीरे शुद्धबुद्ध भूल्यारे, नेणें सींदुर भयी, काजल सीर सेंथेरे, नेपुर चरण धर्यां. पाये घुघरा वांध्यारे, कंकण हाथे छे; नथ नाकें रे अंगोठी आंगळीयें छे. १९ कोय चंचल नारीरे, कोय अबला नारी. अवळां चीर ओढ्यांरें, अवळां सणगौरी. २० चोली ने साटेरे, चुंदडी बांधी छे; कोईनी कस त्रुटीरे, कोयनी छूटीछे. २१ ए व्याकुळ वनितारे, जई वनमां पोती: एक एकनी वांसेरे, जाए पगलां जोती २२ परणांमज करीयांरें, जइ प्रभुजी पाये, त्यां मुखथी बेाल्यारें, चौदभूवन राये. २३ अधराते आव्यांरे, सुंदरी शा माटे, फेरो सीद खांधोरे, महावननी वाटे. २४ आचरणनां प्गरणरे, स्यांतमे आदरीयां; श्रुतीनां वार्थारे, ते तमे नव करीयां. २५ पीयुने तजीयारे, ए स्यो अन्याय कर्यो; तमे जुवो विचारीरे, हुं तम पास रीयो, २७

पतीनुं मुख जोतांरे, पतीवंता थाये. स्वामीने सेवोरे, परघेर नव जाये. २७ तेमां लंछन लागेरें, कहुं तमनें साचुं; तेने पूछ्या विनारे, काम कर्यु काचुं. २८ लंपटना लक्षणरे, आवडां नव करीये: शुं करवा आव्यारे, जावने मंदिरीये. २९ जाव जावनी जावनेरे, जाव पाछां वली; पतीवृत तमारुरें, जासे सरवे टली. ३० एवां वचन सुणीनेरे, विनता नीरास थयां; धरणी पर ढलीयांरे, गद गद कंठ थयां. ३१ आंसुनी धारारे, नेणांमांथी नीर झरे, त्यां कांई सास उसासेरे, उत्तर कांइ न करे. ३२ पछे थीरता थइनेरे, विनता वाणी वदे; पछे मुखथी बाल्यारे, विचार करीने रुदे, ३३ अधराते आव्यांरुं, तमने मलवाने. जाणेां इयाम नथी आञ्यांरे पाछां वलवाने. ३४ वालाजी चितडुं मारुरे, तम साथे जोड्युं; सद्ग सगां कुटुंबनुरे, सगपणयुं त्रोडयुं. ३५

अमारा पती तमेंरे, वालमजी छे। साचा; एम सीदने कोछोरे, नही वलीये पाछां. ३६ पाछां नहीं वलीयेरे, नहीं नहीं नहींवलीयें; अलोकिक सुख आपोरे, भावे भेलांभलीवें.३७ एवां वचन सुणीनेरे, वालोजी हसीया; मानुनीने मलवारे, त्रीभावत धतीया. ३८ अधर वेंणुं धरीनेरे, लीला प्रगट करी; नितनो तन लीलारे, त्रजमां विस्तारी, ३९ रसमां रस जाम्योरे, छीळा ळहेर थइ; मांनुनी मनमांरे, गरव धरीने रही. ४० सामळ्यने सजनीरे कहुं एक वातडली; धन्य धन्य दिवसरे, आजनी रातलडी. ४१ तिहां शेष महेश्वररे, ब्रह्माजीने जोता फरे; एवा वालमजीरे, अमग्रं कीडा करे ४२ एवुं मान जारेरे, मानुनी ये मन आण्यु; पुरण पुरुषोत्तमरे प्रमुजीये मन जाण्यु. ४६ ते समे ततक्षणरे, अंतर ध्यान थीया; विलखे वजनारीरे, वनवन प्रते गीयां. ४४

वेलीने पूछेरे, इक्षने पूछे छे; मालतीने पूछेरे, मलीकाने पूछे छे. ४५ केलीने पूछेरे केतकीने पूछे छे, कणेरने पूछेरे, कदमने पूछे छे. ४६ तमरांने पूछेरे भमराने छे पूछे छे. वायुने पूछे रे धरणीने पूछेछे; ४७ तुलसीने पूछेरे, गाविंद पद प्यारी. तमे जुवो वीचारीरे, देखी दीसा अमारी; ४८ अमने देखाडारे, प्रीतम प्राण पीया. अमथी अंतर ध्यानरे, वालोजी थीया, ४९ अमने मुकीनेरे, वन वन प्रत्ये गीया. एवी क्रीडा करतांरे, वन वन डेालीयां; ५० झाड झाडनी साथेरे, प्रत्यक्ष थई बाले. बेालतां डेालतांरे, कोई तेडी चाले; ५१ कोय तेडी चालेरे, कोय क्रश्न थईने माले. कोय वेणुं धारेरे, कोई पूतनांने मारे; ५२ कोय तो वेंणी ओलेरे कोय गिरिने ताले. कोय दावा नल पीयेरे, कोय काली नाथे; ५३

एवी क्रीडा करतांरे, आव्यां जमुनांजी नायां. ओगणीस सलोकेरे, गापीका गीत गायां; ५४ गाइ गाईने वलीयारे,अतीसे निरास थीयां. धरणीं पर ढलीयांरे, वालाने मलायां; ५५ एवां निरास जाणीरे, अंतरमां द्या आणी. ज्यारे गर्व गलीयोरे, तारे वालो बोल्या वाणी; मध्य मंडलमांथीरे, प्रभुजी प्रगट थीया. श्री गाकुलचंद्र माजीरे, रुप धरीने रीहा; ५७ पातानां कीधारे, लीलामां लीधा. अलौकिक सुख आप्यांरे, थिर करीने थाप्यां;५८ रसमां रस जाम्योरे, लीला लेर कीधां; पाहीलीये ठमकेरे, घुघरीयुं घमके. ५९ किंकणीमां खलकेरे, झुमणां झलके छे; साभे वनमाळीरे, त्रीकम ले ताली. ६० वेणुना शब्दरे, सूर लोकमां गाजे; ते समे ततक्षणेरे, निसान तेा त्यां वाजे. ६१ दुंदभी दडेडे रे, नोबत गडेडे छे; पुष्पनी वृष्टिरे, अती घणी वरसे छे. ६२

एवो लीला जाइनेरे. व्रजजन हरखे छे. आनंदनी अवधोरे, अती घणी वरखे छे. ६३ लीला रस सींधुरे, वालमने व्रजनारी; एमां सुं जाणेरे, जड बुद्धि संसारि. ६४ लीला रस अमृतरे, परीक्षत नव चाख्यो: शुकजी महासागररे, रस छुपावी राख्यो. ६५ ते प्रश्नथी मननो संसेरे, राजाना रुदे धरीया; पछे ज्ञान वैरागरे, यंथ पूरो करीयो. ६६ लीलारस अमृतरे, ज्यां त्यां नव गाजो, ए रसना भोगीरे, तेने ए रस पाजा. ६७ ए लीला जोईनेरे, हरीदास बलीहारी; ए लीलानित गाजारे, सहु नर ने नारी. ६८ सांभल्यने सजनीरे०

o ----o(o)o-----

श्री वल्लभ प्रभुजी परणमुं, श्री माहालक्ष्मीजी ग्रण वरणवुं. १ एमनी कुख उपर जाउं बलीहारी,

स्रुत गापीनाथजी परवारी. २ श्री वीठलनाथजी सुत छोटा, ग्रण वर्णवी शके नहीं कवी माटा. ३ श्री रुकमणी वहुजीना प्राणपति, छोटां वहु ते पद्मावती. ४ खट पुत्र प्रगट श्री रुक्ष्मणी, तैलंग तीलक त्रीभावन धणी. ५ श्री पद्मावतीने एक पुत्र हुवा, तेमना वेद पूराणे जश हुवा. ६ गीरीधरजी संग भामिनि, शोभा जोइ चिकत थइ दामनी. ४ श्री गावींदरायजीने वह राणी, एमने जोवाने आव्यां इंद्राणी. ८ श्रो वाळक्रश्वजीने कमळा वहु, एमने जोवाने आव्यां सहु. ९ श्री गोकुलनाथजी ने पारवती

ए तुल्य न आवे पद्मावती. १०

श्री रघुनाथजीने जानकी सोहीए, एमने निरखी नीजजन मोहीए. ११ श्री जदुनाथजी ने श्री महाराणी,

ग्रण चतुर मधुरी अमृत वाणी. १२ श्री घनश्यामजीने ऋष्णावती, एमनुं स्मरण करीये नित्यप्रती. १३

ए सकल स्वरुप साहामणां,

शोभा जोइ हरिदास छे वारणां. १४

॥ अथ घाल पृष्टि द्रहावनुं ॥
श्रीवल्लभजी करुं विनित मारा मांण आधार,
दीन जाणी करुणा करो, ग्रन्थ थाये वीस्तार, १
पृष्टि द्रहाव ज ग्रंथ छे, तेनो कैये सार;
सरण मंत्र उपदेसनो, करवो छे उचार २
निवेदन श्रीजी करावे छे, करे छे सरवे कोय;
तेनुं ते क्षि पेरे जाणीये, दिशा ते जुदी जुदी होय. ३
निवेदन पांच मकारमां, ते ता कैये सोइ;
जेवा मनथी समर्पण करे, तेने तेवां फल होय. ४
आत्मने आत्म निवेदन कैहें, त्रिजं मरजादा निवेदन;
वेाथं साधन निवेदन छे, पांचमुं स्हेज निवेदन. ५

आत्म निवेदननां लक्षन कैये, मतीष्ठा बढावेतंई; वीजे ते पशुवत् थइ रहे, आज्ञा पाछे ते सही. ६ पुत्र परीवार ग्रहादिक ते, प्रभुनां करीने जाण्यः मतीष्टा अरथे धन खरचे नहीं, सेवा आज्ञा प्रमाण. ७ भगट स्वरुपनी सेवा करे, सेवे सेव्य स्वरुप; ए वेने एक करी जाणे छे, ए छे एकज रुप ८ तनमन धन आदि जेवस्तु, पश्चनी करिने जाण्यः लाभ हांनी जे हाय ते. ईच्छा करी मांन. ९ महात्म्य निवेदननां लक्षण कैयें, तेनी कहुं एक वातः महात्म्य बढाववा कारणे, धन खरचे वीष्यात. १० कपट करी धन भेळुं करे ते ते। प्रतीष्ठाने अर्थ; ते धन काम आवे नहीं, न थाये परमारथ. ११ सेव्य स्वरुपश्री ठाकोरजी तेनां करावे दरसन; हंते केवी सेवा करुं, एम हरखे छे मन. १२ श्री ठाकुरजी विराजे छे, तेना जुवो तमे साज; भली भांती आरोगावुं छुं, सरसे मारां ते काज. १६ पोतानी वस्तु पासे राखी, विजानी लीये सही: तेनी ते वस्तु राखीने, पाछी दिये नहीं. १४ मरजादा निवेदननां लक्षण कैये, ते तो शि पेरे जाण्यः श्रीठाकोरजीनी सेवा करे, मरजादारीती ममाण. १५ श्री ठाकुरजी बीराजे छे, त्यां करे छे कीर्तन; वैष्नव साथे वातु करे, प्रभु थाय छे पसन्न. १६

मरजादा मारगमां चीत रहे, तेतुं एछे एंघाण; विषयमांही लीन थइ रहे, ते तो निश्फक जाय. १७ साधन निवेदननां छक्षण कैयं निवेदन करे ते सही. सेव्य स्वरूपनी सेवाकरे, दरशन करावे ते नही. १८ भक्को बुरो उपदेश करे नही, अपराधथी डरे सही: रखे मुने अपराध पडे, एम कहेछे जई. १९ निज गुरुनी आज्ञा पळे नहीं तेथी द्र फरे; तेत्र ते एमज जाणजाे, कारज नव सरे. २० म्हेज निवेदनना छक्षण कैयें, नाम निवेदन करे; हृदयमां ते नव उतरे, छोकिकमां चित्त फरे. २१ लैकिकने सरवस करी जाणे, एछे ते मारुं धन, कंचन ने वली कामनी, ते उपर तेनं मन. २२ ए वे वस्तु हृहयमांथी उतरे, तेनुं काम सिद्ध थाय; मायामांथी मन काढीने, मधु अरपण कराय. २३ माहावाक्य जे मंत्र छे, तेन्नं एज प्रमाणः पुत्र परिवार गृहादिक छे, ते प्रभुना करी जाण. २४ तनमन धन आदि जे, वस्तु, प्रभुने अर्पण थायः माहा मंत्रनो ए अर्थ छे. टीकामा जे छेवाय. २५ निवेदन पांच प्रकारना, तेने जो कोइ गाये: निज गुरुना प्रतापथी, श्री जग्रना पांन थाये. २६ हरिदास प्रभु शोभा निरखीने, गुण गाउं वारंवार: पुष्टि पदारथ ए फल छे, जाणजो निरधार. २७

श्री जन्माष्टमीनुं घाळ.

आनंद सागर उछटचो रे लोल. श्रीवस्रदेव देवकीने द्वारजोः

आठम भादरवा वदीरे लेाळ; रोहणी नक्षत्र बुधवारजो, प्रकटया श्रीकृष्ण मन भावता रे छोछ. पीळां पीतांबर पहेरीआंरे छेाल, ओढ्यां उपरणा सारजाः; मस्तके मुक्ट वीराजतारे लोळ, कुंडळ झलकेछे कानजा. भाळ तिळक मृगमद तणांरे लेाल, खीटळीआळा केशजे।; चारे भुजाए आयुध धर्यारे लेाल, शंख चक्र गदा पद्मजो. नाके नकवेसर शोभीतांरे छोछ, चुनी छे लाल गुलाछजा, अधर उपर मोती ढळकतां रे स्रोल,

इडपचीए हीरलानी कांतिजा. प्रकट्या० ४

वाहे बाजुबंध बेरखा र छे।छ,

पोहांची छे रतन जडारजा,

हाथे छक्टी सोहे मुद्रिकारे लोल,

उर गज मोतीना हारजा. पकटया. ५ केडें सोहे कटी मेळखा रे लेाल.

चरणे झांझरने। झमकार जाः;

एवा पश्चजीने नीरखता रे छोछ,

दुःख गयां सरवे दूर जो. प्रकटया, ६ वस्रदेव देवकीजी हरखीयां रे छोल.

निरख्यां श्रीमुख स्वरुप जो;

एवां प्रभुने क्यां राखशुं रे छोल,

कोप्या छे कंसराय भूपजो पगटया. ७ त्यारे बाळक एम बेालीया रे लेाल,

सांभळा अमारी वात जाः

नंदतणा दरवारमां रे छोछ,

मेछी आवो मुजने तात जा. पगटया. ८ कन्या लइने वहेलां आवजा रे छोल,

सरशे तमारां काज जा, ते तमे कंसने देखाडजो रे छोल,

मटशे एना मान जा, मकटया. ९ एम कहीने माया फेर्वी रे लोछ,

धर्यु छे बाळ स्वरूप जा, विस्मय थया वस्रदेव देवकी रे छोछ,

स्वप्तुं थयुं के सत्य जा. प्रकट्या. १०

भांगी भागळ खुल्यां बारणा रे छे।छ,

सुतां छे सहु दरबान जा, मस्तक धरी हरिने निसर्था रे लोल,

र्लाधी श्री गोकुल वाट जा. प्रगटया. ११ झरमर वरसे छे मेहुला रे लोछ,

चहुँदिश चमके छे वीज जो; आगळ सिंघ धडुकतां रे छोछ,

आगळ ासघ घडुकता र **छ।छ**,

शेषनागे कीघी छे छांय जो. प्रगटया. १२

श्री जमुनाजी वहे छे भरपूरमां रे लोल, उठे छे लहेर तरंग जो, चरण कमल हरिनां परसशं रे लोल, नीचां थयां छे नीरजा. प्रकट्या. १३

दीधा मार्ग चाल्या उतरी रे छं,छ,

पहेांच्या श्रीनंद दरवार जा,

मुता दीठा सनु साथने रे लोल.

मनमां कीधा छे विचारजो. प्रगटया. १४ श्री जसोदाजीनी गोदमां रे छोल, पोढाडचा श्री गिरिधरलाल जा,

कन्यां लड् पाछा वळ्या रे लोख,

जो जा मभुजीना ख्यास्त्र जो. मगटया १५ जाग्यां जसोदाजी ते समे रे लोल,

निरख्या श्री सुंदर क्याम जा,

नंद अति घणुं हरखीआं रे लोल.

आप्यां छे रत्न केरां दानजाः पगटथाः १६ वेर वेर तोरण बांघिआं रे लोलः

मानिनी मंगल गाय जा, महु व्रज उमंग्या पेमशुं रे छाल, आनंद उत्सव थाय जा. प्रगटया. १७ इलदर दही घृत दूधनी रे छाल,

मची छे तहां कांइ कीच जा,

ताळी पडे ने फरे फुदडीरे लोल,
नाचे छे सउ नर नार जाे. पगटया, १८
ब्रह्मा महादेव मुनी देवता रे लेेाल,
बोले छे जय जय कार जाे.
देवना ते दुंदभी वागीआं रे लोल,
वरखे छे क्सुम अपार जाे. पगटया. १९
ए सुख शोभा शी कहुं रे लेेाल,
कहेतां न आवे पार जाे,

कहेता न आवे पार जो, श्री वळ्ळभ चरण पतापस्चं रे लोळ, इरिदास जाय विलंहार जो. मगटया. २०

प्रस्तुत्—शोभामाजी (हरिदास) अने श्रीहरिरायजी, (रिसक,) एमनां बनावेल कीर्त्तन, धाळ, पद, गरबी आदिनो अमारी पासे एक महोटो संयह तैयार छे. परंतु आ प्रथम भागमां, अमारा जणाव्या प्रमाणे त्रणसोथी वधारे पानां थइ गयां छे एटले हवे ते संयह 'श्रीवल्लभवंश पद्य वचना-मृत"ना बीजा भांगमां आपवामां आवशे.

श्री द्वारकेशजी उपनाम श्री गन्नुजी महाराज

क्रिक्स के महानुभाव गोस्वामी बाळकना प्रसंगो के आ के परंतु अमने वेक्क है घणा जाणवा जेवा छे. परंतु अमने तेमनुं हत्तांत, साल-संवत, के तिथीना क्रमवार मळ्युं नहीं. जेथी अमे अहीं छुटा छवाया प्रसंगा लख्या छे. विशेष तपास शरु छे, जा मळशे तो बीजा भागमां मगट करशुं.

श्रीद्वारकेशनी महाराजश्री नं प्राकटय संवत् १८५३ ना जेठ सुद १२ ना मंगलमय दिने श्री मथुरांनाथजी महाराज ग्रहे थयुं हतुं. आजथी १२५ वर्ष पहेलां श्री नाथद्वारामां रहीने आप श्रीनाथजीनी, परिचारकनी सेवा करता. आप अति विद्वान तेमज वैराग्यवान हता, श्री-नी सेवा दरिमयान त्रण वस्तत आप केवळ वेाति उपरणा सहित अने आपनां श्री वहुजी महाराज चेाली साडी भर घरथी बहार निकळी गयां पोतानी तमाम मिल्कत श्री-ने अर्पण करी दीधी. ते समय सुधी आपने माथे कांइ पण स्वरूप सेवा विराजती नहोती. त्रीजी वस्तत ज्यारे मसुने सर्वस्व अर्पण करी दीधुं त्यारे टीका-यत श्री दाउजी महाराज आपनी उपर बहु मसन्न थया

अने आपनी पासेथी श्री गोपाछमंत्र छइ, तेनी गुरु दक्षिणामां श्रीनाथजीनी गादमांथी स्वरूप सेवा पथरावो देवा इच्छा दर्शावी, अने श्रीमदनमोहनलालजीने पथरावी आपवानुं नको थयुं. परंतु श्री-ने पथराववाना ग्रहूर्तने दिवसे गोदना ठाकोरजी पथरावी देवानी श्री दाउजी महाराजे ना कही अने वीजुं कोइपण स्वरूप पथरावी लेवा जणाव्युं. आप बहु समय सेवामां उपस्थित होवाथी पोताना अनुभव ग्रुजब ग्वाल मंहलीमांथी श्री ग्रुसांइजीना सेव्यनिधि श्रीमदनमोहनलालजीने झांपीजीमां पथरावी लीधा. त्यारबाद थोडो समय त्यां रोकाइ वहुजी महाराज ग्रुढां विदाय थइ व्रजमां पथार्या.

आपे नेग-भोग इत्यादिनो प्रबंध कर्यो नहोतो. परंतु वैष्णवो द्वारा जे दिवसे जेटली सामग्री आवती ते तमाम श्री-ने आरेगावी वैष्णवोने प्रसाद छेवरावी देता. अर्थात् आजे पाशेरनी सामग्री आवती तो तेटली आरेग्गावता अने बीजे दिवसे दश शेरनी आवती तो ते तमाम आरोगावी देता. भंडारमां बाछांश राखवानो रीवाज नहोता. श्री-ने माटे कोइएण अमुक स्थळ मुकरर कर्यु नहोतुं, परंतु हमेशां झांपीजीमांज पधरावी राखता. अने एक क्षण पण पोताथी अलग करता नहि. आपने श्रीमद् भागवत समग्र कंटाग्रे हतुं, अने अहर्निश तेने। पाठ सतत चाल रहेता होताथी व्रजमां पथार्या वाद वृजवामीओमां चर्चा चाली के आपते। दिवस ने रात गुनगुनाट करे छे. त्थारथी आपतुं नाम श्रीगन्नुजी मसिद्ध थइ गयुं अने ते नामथीज लोलापर्यंत मसिद्ध रह्याः

आपनी विद्वतानी कसेाटीना प्रसंगा.

एक समय वृन्दावनमां श्रीरंगनाथजीना मंदिरमां श्री रंगाचार्यजीना प्रमुखपद नीचे चारे संपदायना विद्वा-नोनी एक सभा भरवानी हती. जेमां संपदायना सिद्धां-ते। ना संबंधमां चर्चा थवानी हती खानगी वावत ए हती के श्रीरंगाचार्यजीने, शरणगति मंत्रना संबंधमां पाताना सिद्धांत सर्वेषिरी सिद्ध करवाना हता अने श्री गीताजीना ' सर्वधर्मान्परित्यज्य '' ए श्लोकनी व्याख्या द्वारा सावित करी वताववानुं हतुं. आ वर्तमान आपना जाणवामां आच्या एटले त्यां जवाना निश्चय कर्यो. जे दिवसे सभा थवानी हती ते दिवसे ब्रन्दावनमां पधारी तपास करावतां जाणवामां आव्युं के सभा भराइ चुकी छे अने आपने विराजवा लायक कोइपण स्थान जावामां आवतं नथी, तेमज प्रमुखने पधारवानी हजु वार छे. प्रमुखना आगमननी साथेज व्याख्यान शरु थशे. आ खबर सांभळी आप उठ्या अने सभामां जबा तत्पर थया परंतु योग्य आसन माटे विचार थतां तुर्तज एक युक्ति बोधी कहाडी.

आपनी सेवामां ताता नामनो एक त्रजवासी झाप-टीओ हता, जेनो अवाज घणा तिश्ण अने सत्तादर्शक हता. ते आ समये अति उपयागी थइ पड्यो. वात ए बनी के सभाद्वारपर जड झापटीआए पोताना गंभीर अवाजे कहुं के, " ठाडे होजाओ महाराज पधा-रते है. " सभाजनो एकदम उभा थइ गया अने आप प्रमुखने उच्चासने विराजी गया. विद्वानोनी सभा एटले त्यां विद्वताज प्राधान्य भागवे. वळी त्यां शास्त्रार्थ सिवाय काइपण प्रकारे बीज़ुं अपमान थवानो संभव नज होय. श्री रंगाचार्यजी ते। आ बनावथी दिग्रमुढ वनी गया, आपनी विद्वताथी तेओ अज्ञात नहोता तेथी सभामां पधारवं मुलतवी राख्यं. सभामां एक कलाकना शास्त्रार्थ बाद '' शुद्धाद्वैत '' ने पतीपादन करी आप उठचा; अने सभा पण विसर्जन थइ गइ. एटखे आपे श्री रंगाचार्यजीनी खानगी मुळाकात छीधी लगभग एक कलाक पर्यंत वार्तालाप थया. उठती वखते आपनी विद्वताने धन्यवाद आपी संताष पूर्वक विदाय कर्या.

त्यारबाद केटलेक समये आप स्दरीकाश्रम तरफ पथार्या. आ वखते आश्विन मास चालते। हते। एटले अन्नक्रटनो उत्सव नजीक हते।. जेथी आपनी इच्छा कोइपण नजीकना शहेरमां जइ सामग्री सिद्ध करावीने

यथा समयेज श्री-ने अन्नक्रूट आरोगाववा एवी हती जेथी प्रवास चालु राख्याे. दरमियान आश्विन कृष्णा-अष्ट्रमीना सुमंगल प्रभाते आपे आज्ञा करी के, आपणे अम्रुक शहरमां जइ उत्सव करवा छे. आ आज्ञाथी सर्वे सेवका विचारवा लाग्या के. आपणे हिमालयना उच पहाडी प्रदेशमां छइए अने समय ता नजीकमांज छे, तो आवा समयमा आपनो मनोरथ सिद्ध थवे। असंभ-वित छे. परंतु इजु ते। श्री-ने शृंगार धरावी राजभाग समर्पवानी तैयारी हती, तेवामां काइ राज्यना राजकर्म-चारीओ त्यां आव्या अने विनती करी के, अमारा महाराजा साहेब आपनी राह जुवे छे अने अमने आपनी पासे पधराववा माटेज मोकल्या छे. तो सत्वर पधारा. आ सांभळी दरेक सेवका आश्चर्य पाम्या, जेथी सर्वेना भ्रम निवारण करवा आगंतकने कुश्चळ वर्तमान पुछ्या बाद आज्ञा करी के " तमारा राजाने अमारा आगमननी काणे खबर करी ? " त्यारे सेवकाए कहयुं के, जय कृपानाथ ! अमारा महाराजाने गत रात्रिए एक स्वप्न थयुं, तेमां श्रीनाथजीए आज्ञा करी छे के मारुं बीजुं पत्यक्ष स्वरुप आचार्य रुपे आ नगरथी बार कास उपर विराजे छे अने तेओनी इच्छा श्री-ने अनकूट आरोगाववानी छे. जेथी सामग्रीनी तैयारी करा, अने तुर्त पधरावी आवा. जेथी महाराजा पाते

सामग्री सिद्ध कराववामां महत्त थया छे, अने आपने पथराववा अमने मोकल्या छे,

आप सेवाथी निवृत्त थइ श्री-ने झांपीजीमां पध-रावी ते राजाना नगरमां पधार्या अने तमाम बार्ता निवेदन करी. त्यारबाद दीपमालिका सुधीनो उत्सव मोटा आनंद पूर्वक उजववामां आव्या, परंतु गायनो कान जगाववानो समय आवतां खबर मळ्या के, आ पहाडी प्रदेशमां गाय मळी शकशे नहिं, जेथी आपे "अमुक क्रियानो त्याग करी वेदोक्त परिपाटीनो भंग न थवा देवा" एवी इच्छाथी अजा (बकरी)थी कान जगा-वबानी क्रिया करी छीधी. आथी साथे आवेला पंडितोए वांधी दर्शाव्या के, आपे आ शास्त्र विरुद्ध अनुचित कार्य कर्यु छे. प्रत्यक्षमां तो विद्वानो मैत्री भाव दर्शावता परंत्र अंदरथी आपनी भुले। शोधवा मत्सरता पूर्वक-अणु भाष्यना अभ्यास निमित्ते साथे विचरता हता. आप तो दरेक कार्य सनातन वेदमार्गने अनुसरीनेज शास्त्रोक्त रीते करता. परंत पंडिता गणगणवा छाग्या के,आपणे गायनो भाग बकरीने अर्पण करवा ए कोइपण प्रकारे इष्ट नथी. अने ज्यारे आचार्यो आवी वर्तणुक चळावे त्यारे अन्य-नीतो वातज क्यां रही? आवी बाबतोने चळावी छेवाथी सनातन वेद धर्मनी मर्यादानो छोप थइ जर्शे. आवा पकारनो विवाद उपस्थित थया. जेथो त्यांज शास्त्रार्थ माटे सभा निर्माण करी. राजाए पाताना पंडितो उपरांत आसपासना प्रदेशमांथी बीजा केटलाक पंडिताने बालाव्या त्रण दिवसना शास्त्रार्थ वाद आपन्न कार्य शास्त्रार्थ सम्पत सिद्ध थयुं अने तमाम पंडिते।ए प्रमाण पत्र आप्युं. आ शास्त्रार्थमां केटलाक ले। किक पंगाणो पण आप्यां मुख्य पात्रने अभावे उत्तराधिकारी प्रतिनिधिधी काम लइ शकायछे. जेम राजाने अभावे मंत्रीशी द्धने अभावे छात्रथी, रोठने अभावे वाणोतरथी, घोडा गाडीने अभावे बेल गाढीशी इत्यादि प्रकारे कार्य शह शके छे. तेम गायने अभावे बकरीशी कार्य छड शकाय. केमके पश्चओमां गायधी उतरते नंबरे प्रथमन बकरी गणाय छे. वळी वेदमां बकरी पवित्र मनायेल छे. स्मृतिकारोत्नं वचन छे के,गायनां मुख्या अपवित्र थयेळां पात्र, अजा-मुखयो पवित्र थाय छे. अर्थात गायतं कार्य बकरी द्वारा थड शके छे.

उपरने। बनाव बन्या पछी पंडिते। ए निश्चय कर्यों के जेनी जोव्हाग्रेज सरस्वतीनो साक्षात निवास होये! एवा वागधीश (वाणी-सरस्वतीना स्वामी) नी साथे बिवाद करवोए पिथ्या मनत छे. आ प्रकारे परस्परमां विचार करी पेात पेाताने स्थानके चाल्या गया. त्यार थी मत्सरतात्यागी पूज्यबुद्धिथी वर्तवा छाग्या.

आपनुं भोळपण अने उदारता.

आप अतिशय उदार तथा भोळा हृदयना हता, कोइना पण देाप आपना छक्षमां आवता नहीं. एक समये एक माणसे आपनी पासे वखत जोइ विनती करी के "कृपानाथ! आपना कारभारी व्यवस्था जाळवता नथी अने खाइ जाय छे 'ते सांभळी आपे आझा करी के "तुं सारो कारभार करी शकीश? तुरत आगन्तुक मनुष्ये हा कही, एटले तेने कारभारीना उपरणो ओढाड्यो अने सेवकामां सामेल करी दीधा, परंतु प्रथमनो कारभारी तो कायमज रह्यो. केटलेक समय आ प्रकार वीततां कारभारीओनी संख्या पणवधी गइ, कारण के जे कोइ आवीने कारभारी थवानी मागणी करे तेने ना नहि, एटले महामसादना भोगी भेगा थाय तेमां शु आश्रथ ? कहेवत चाली के, श्री द्वारकेशजीना साडाबार कामदार!!

आप, चार बंधुओ हता. (१ आप, २ श्री गिरध-रजी, ३ श्री विद्वलेशजी, अने ४ श्रीव्रजरत्नजी) एक दिवस आप आपनो मातुश्रीनी गोदमां श्रीमस्तक राखी पाढचा, अने मातुश्रीना ग्रुखारविंद सामे द्रष्टि करी कह्युं के, अमा चारे भाइओ आपनी हैयातीमांज लीला विस्तारीशुं: बन्युं पण एमज. आप अत्यंत सरळ अने, सादाइमां रहेता, मिथ्या-भिमान के मोटाइनो छेश पण नहोतो. साधारणमां साधारण वर्ग साथे पण भळी जता. क्यारेक क्यारेक व्रजवासीओना माटा टाळामां जइ वेशता ते वखते टीपारा, मुकुट इत्यादि पण धारण करी छेता. क्यारेक सादी टोपी पहेरीने जता अने तमामनी वचमां हसता हसता जइ वेसी जता, व्रजांगनाओ उपालंभ करी ताळीओ वजावी आनंद करती तथा कहेती के, "अरी यह तो गोकुलको कन्हैया आया " कही धूम मचावती. व्रजवासीओनां टाळां आपनी साथे फरतां. आप तेने महाप्रसाद इत्यादिथी संतोषता. ते वखते व्रजमां परम आनंदनो सागर वहेतो करी श्रीकृष्णनो साक्षात्कार करावता.

आपे दर्शावेला केटलाक अलौकिक प्रसंगो.

प्रथम कहेवाइ गयुं छे के, आप सीलीकमां कांइ प्रण राखता निह, जेथी नोकरोना प्रगार बहु चडी जता. ज्यारे पांच सात मासनो प्रगार चडी जाय त्यारे माणसा प्रगार माटे ताकीद करे. पटले आप, आपनी गालख म्गाबी उपर उपरणा ढांकी नोकरोने आज्ञा करता के, जे नोकरना जेटलो हीसाब थया होय ते आज पर्यतनो कहा अने चुकाबी ल्या हुं हिसाबमां कांइ न समजुं. जे नोकर जेटला पैसा कहे तेटला गेालखमांथी चुकावी आपे. अने गेालख वंध करी तेने स्थानके मुकवा आपे त्यारे गेालखमांथी वजन ओळुं-बधतुं थयेळुं जणातुं निहं जेथी खवासने घणुं आश्चर्य लागतुं

आपने ४ लाळजी हता. (१) श्रीगेाकुलालंकारजी (२) श्री गे।पिकालंकारजी उपनाम श्री महुजी महाराज (३) श्री त्रिल्ठोकभूषणजी अने (४) श्री यशोदानंदजी (श्रीचद्वजी महाराज अने कांकरोली गादीपर गया पछी श्रो गिरिधरजी महाराज) आमांना मथम लालजी श्री गे।क्रुळालंकारजी पांच वर्षना हता त्यारे एक दिवस आपना पितृचरण श्रीनाथजीने राजभाग धरावता हता त्यारे खेळता खेळता शय्या मंदिरमां पथार्या अने त्यांज पोढी गया. राजभाग आव्या पछी बधा गा. बालका तथा मुखिआ भीतरीया तथा पचारकेा इ. सर्वे, बंदेाबस्त करी वहार आच्या. अंदर श्रीनाथजी राजभोग आरोगी रह्या त्यां तो आप जागी उठया परंतु बहार जइ न शक-व थी रावा लाग्या. श्रीनाथजीथी ए सहन नथयुं एटले बाळकनी पासे जइ इस्त ग्रहण करी चेाकी पासे छान्या अने आप श्री इस्तथीज आरोगाववा लाग्या. दरमि-यानमां राजभोग सरवानो समय थइ जवायी टीकायतश्री इत्य दि बालको तथा सेवको द्वार खोली अंदर आव्या

अने आपने आरे।गता जोइ गुस्से थइगया. पितृचरणे ते। एक तमाचे। लगावी दीधा.आप रे।इने चाल्या गया, राजभोग छे।वाइ गये। मानीने फरीथी शयनभे।गमां राजभोग सिद्ध करी धराववामां आव्ये।.

रात्रे वधा पोढचा पछी श्री-ए स्वप्नमां टीकायत इत्यादिने स्वप्न द्वारा जणान्युं के, मने श्रीद्वारकेश जीए तमाचा मार्यो छे. जेथी मारा गाल दुखे छे. एम कही गालपर पांचे आंगळीओना साळ उठेला बतान्या, आथी क्या बालके। कमकमी गया अने सवारे उटी बालक श्री गांकुलालंकारजीने साष्टांग दंडवत् करवा छाग्या अने अपराधनी माफी मागी.

गुजरातमां नर्मदा किनारे चाणाद नामे एक पवित्र प्रसिद्ध तिर्थ क्षेत्र छे. आ चाणादक्षेत्रमां शेष साइ (पोढानाथ) नुं मंदिर छे. तेनी अंदरनुं स्वरूप घणुज प्राचिन अने अलै। किक छे. आ स्वरूपनाश्रीअंगमां एक वस्तत अचानक शितळाना जेवा दाग निकळी पडया. आथी सेवका घणाज विस्मय पामी गया के आ श थयुं 'पठी आ उपद्रवनी शान्ति अर्थे अनेक जप—होम-पाठ इत्यादि जे जेणे कह्युं ते मुजब विधिसह कराच्युं. परंतु एकपण उपायथी श्रीअंगमांथी शितळाना दाग मत्या नहिं तेम खबर पण न पडी के आ शो उपद्रव

छे. एटळामां प्रभु इच्छाथी श्री द्वारकेशजी महाराज पृथ्वि परिक्रमा करता करता त्यां पधार्याः त्यारे बधा सेवकोए मळी विनति करी के, जे क्रुपानाथ ! श्रीशेष-साइ भगवानना श्री अंगमां एवा उपद्रवे प्रवेश कर्यी छे के अमेर अनेक उपाय कर्या छतां शान्त थता नथी. अने श्री-ने परिश्रम बहु थाय छे. माटे हवे आप आज्ञा करो तेम करीये. त्यारे आपे आज्ञा करी के, आवती काले सवारे जगाववाथी राजभाग पर्यतनी सेवा अमा अमारा हाथे करशुं.त्यारपछी जे जणाशे ते कहेशुं. माटे पंचामृतनी तैयारी करावजाे. तथा अमारा तरफर्था केसरी वस्ननी जांड तैचार करावजा अने आवती काले अदकीमां सामग्री विशेष आरोगाववानी छे. जेथी सेवको, ब्राह्मणे।, वैष्णवो इत्यादिने राजभोग पछी मभ्र प्रसाद लेवानो छे. एम आज्ञा करी आप खाड आरोगी पोढी गवा.

स्वारमां वहेला जाग्रत थइ स्नान करी संध्यावंद-नादिक नित्यकर्मथी परवारी निज मंदिरमां पथार्या. श्री ठाकारजीने जगावी मंगलभोग धर्या. पछी भोग सराबी मंगल-आरती करी पंचामृत स्नान कराव्युं.पंचा-मृत स्नान करावतांज तमाम ग्रुमडां मटी गर्या. पछी शृंगार करी भोग धर्या. सेवको घणाज पसन्न थया. अने आपने विनित करी के, पभो! आ बधी शुं! छीला हती? त्यारे आपे आज्ञा करी के, "कोइ रजस्वला स्त्रीनो स्पर्श थया हशे माटे हवेथी स्त्रीओने चरणस्पर्श कराववा नहिं." जेथी हवे त्यां स्त्रीओने चरणस्पर्श थता नथी. अने निशानी तरीके हज्ज स्कृत साज दाग श्रो अंगमां जावामां आवे छे. आ मत्यक्ष मतापथी अनेक शैवी बाह्मणो आपनी पासेथी ब्रह्मसंबंध लह वैष्णव थया.

एक समय आप श्री बद्रीनाथजी पधारता इता. ते वखते हरद्वारथी थेाडे आगळ गया त्यां द्रव्यने। संकोच पडवा लाग्या जेथी कथा वंचाय रह्या बाद खवासे विनति करी के, कृपानाथ ! मारी पासे पुरांतमा द्रव्य नथी माटे आप आज्ञा करे। ते। हरद्वार जइ बंदे।बस्त करी आवुं. त्यारे आपे आज्ञा करी के सवारे पयत्न थइ रहेशे. एम कही पाढी गया. रात्रिमां ते प्रदेशना राजाने श्री बद्रोनाथे स्वप्न द्वारा आझा करी के, अहीं तारा प्रदेशमां श्री द्वारकेशजी महाराज पथार्या छे. ते मारी यात्रार्थे पधारे छे, परंतु तेने द्रव्यनो संकोच थड रह्यों छे तो तं जा अने तेमने द्रव्य भेट करी आव. अहीं आप पातःकाळे जागी स्नान करी पातःसंध्यावंदन करवा बिराज्या त्यां फरीथी खवासे विनति करी के. हवे शुं! आज्ञा छे ? त्यारे आप तो चुप रह्या. त्यां तो खबर आव्या के, कोइ राजा आपना दर्शन करवा आव-बानी आज्ञा मागे छे. तुर्तज आज्ञा थइ गइ के राजाए आवी दंडवत् करी कुशळ वर्तमान पुछ्या. थे।डीवार वार्ताछाप थया पछी राजाने निश्चय थइ गया के "स्वरुप तो, श्री बद्रीनाथे आज्ञा करी तेज छे" पछी आपने विनति करी के, कृपानाथ! मारी आ नजीवी भेट स्विकारी मने कृताथ करवा कृपा करको. एम कही एक हजार रुपिआनी थेली भेट करी आपनी विदाय छइने गया. आ बनावथी बधाने घणु आश्चर्य थयुं.

पछी आप श्री वदीनाथजी पथार्या. अने रस्तामां जे जे तिथी आवतां तेनां चित्रो आप श्री हस्तथी उतारता. पछी श्री बदीनाथजीमां व्यासाश्रम गासे, श्री महाप्रभुजीनी बेठक हती परंतु मार्ग अति विकट होवाने परिणामे त्यां पहें चवामां घणीज विटंबणा धाती जेथी आपे श्रीबदीनाथजीनी नजीकमां श्रीमहाप्रभुजीनी बेठक तिद्ध करावी. ए प्रमाणे महान अले। किक आनंद करीने वेर पधार्या. संवत् १९००मां श्रीमधुरांजीमां सतघरामां श्रीनाथजीनी चरणचोकी आपे मगट करी छे. सिवाय पण श्रीहजमां आपे केटलांक लीलामसंगना अद्द्य थये ल स्थळो प्रसिद्ध कर्या छे.

काठीआवाडमां आवेल साबर कुंडला नामे गामनी नजीकमां नदीना किनारा उपर आपश्रीनी एक बेठक प्रसिद्ध छे जे अत्यारे श्रीमहामश्रुजीनी वेटक तरीके वेष्णवोमां जाणीती छे

त्यारबाद श्रीगोकुलमां तीजा लालजी श्रीयशादा नंदजीनो उपवीत संस्कार थयो, ते वस्तते पण द्रव्य संकोच ते। आवी उमोज रह्यो. अमे उपर जणाव्युं छे तेम आप रातवासी एक राती पाइ पण रास्तताज निहं, एटले विशेष द्रव्यनी आवश्यक्ता वस्तते, लेकिक दृष्टिए संकोच जावामां आवे एमां कांइ आश्चर्य नज गणाय ए न्यायानुसार आ वस्तते पण बाह्य दृष्टिए संकोच जायावा लाग्यो. परंतु प्रभुनां कार्य प्रभु, भगवदीये। द्वाराज करावे छे. तेम आ वस्तते पण अचानक गुजरात प्रदेश (वसा)थी हरस्तांबाइ नामनां वैष्णवबाइ आवी पहोंच्यां अने उपवीतनो तमाम स्वचं एक हाथेज चुकावी आप्या.

मथुरांमछ करीने एक छवाणा वैष्णव श्रीगेाकुछमां रहेता, आ वैष्णव सत्संग छायक भगवदीय हता, एरंतु कांइक हुंपद आवी जवाथी दीनता जती रही एटछे सेवाथी विम्रुख थइ गया. त्यारबाद काळे करीने तेमनो देह छुटी गया परंतु सेवानी विम्रुखताने छइने कोइक गाममां वाछड।नो यानीने पाम्या. तेवामां एक समय आप श्री यमुनाजीना श्री कृष्णगंगाना घाटपर श्री यमुनाजीनो छप्पन भाग करीने श्रीजीद्वार पथारता हता.

त्यां स्वप्नमां मथुरांमछे विनित करी के, "जय कृपानाथ! आप श्री—जी द्वार पंधारे। छो तो मने पण साथे छइ जाओ अने श्रीनाथजीनी सेवामां नियुक्त करो. हुं अमुक गाममां अमुक आहीरनी गायने पेटे वाछडों जनम्यो छुं, " जेथी आप ते गाममां पंधार्या अने ते वाछडाने छइने श्री—जी द्वार पंधार्या. ने वाछडाने श्रीनाथजीना खरासमां बांधी दीधो. आ वर्तमान श्री-जी द्वारमां फेळाइ जवाथी दरेक वैष्णवो त्यां आवी "मथुरां-मछजी जयश्रीकृष्ण " एम कहेवा छाग्या, ते सांभळी वाछडों मुंड इळावता.

आवा आपनां अनेक अलै। किक चरित्रो छे, परंतु स्थळ संकोचने छइने अत्र लखी शक्ता नथी.

आपे श्री गिरिराजजीना ३ छप्पनभाग, एक श्री
मथुरांजीमां श्री कृष्णगंगाना घाट पर श्रीजमुनांजीनो.
एक छप्पनभाग श्री डाकोरजीमां अने बीजा केटछाक
नाना—नाना घणांक छप्नभागना मनोरथो कर्याछे. एक
वस्तत श्री काञ्चीजीमां श्रो मुकुन्दरायजीने श्री गंगाजीमां
नावमां पथरावीने मोटा मनोरथ कर्यो हता. आप ज्यां
पथारता त्यां खुब मनोरथा करता, आपने परदेश विचरवानो अने देवी जीवाना उद्घार करवानो घणा चाह
हता तथी आपे पगेचालीने ३ पृथ्व परिक्रमा करी हती.

आप अत्यंत विद्वान हता ए तो उपर कहेवाइ गयुं छे. आपे संस्कृतमां श्री गावर्द्धनाष्टक तथा श्री गिरि-राजजीनी नामावली इत्यादि ग्रंथा रच्याछे. त्रजभाषामां पण कीर्त्तन, पद, घाळ इ० घणां बनाव्यां छे. तेमांथी अमा अहीं आपना बनावेल श्री सर्वोत्तमजीना देाहा १२१) आपी संताष मानशु. अने विशेष कविता बीजा भागमां आपशु. अहीं लंबाण करवुं पाळवे तेम नथी.

अस्तु०

आ श्री द्वारके श्रळाळजी महाराजना अलै। किक चरित्रना मसंगा मथम अमे ळखीने श्री वैष्णव धर्म पताका (मासिक) मां मगट करावेळ त्यारबाद जे जे निवन मसंगा मळता गया ते तमामने एकत्र करी सुधारा बबारा साथे अहीं मसिद्ध कर्या छे.

न० भा० ब्रह्मभट्ट-सम्पादक.



श्री सर्वोत्तमजीना दुहा.

श्रीवस्रभश्रीपंचयुत, स्वबलविशद्यहयंथ, अन्ययन्थप्रतिनामबल, सर्वोत्तमयहपंथ. १ प्राकृतधर्मनिवृतकरि, अपाकृतवपुधर्म, निगमकथितअविशुद्धये,श्रुतिसाकृतिनिजमर्भ तमञ्जन्नदगविदुषके, यहकलिकालप्रकास, भागवतरसंगाचरनहीं, भुविमेंहायविकास. ३ परमद्यानिजभक्तपर, निजरसप्रगटनकाज. हरिवानीनिजवद्नप्रति, निजजनकरीसमाज. ४ स्वास्यउक्तिदुर्बोधहै, जैसेहोयसुबेाध, अष्टोत्तरशतनामये, प्रतिबंधकअघशोध. पुष्टिभक्तिऋषिअग्निसुत, जगतीनामकोछंद, श्रीकृष्णास्यसुदेवता, करुनाबीजअमंद. भक्तिविषेप्रविबंधसब, नाशकरनविनीयाग. कृष्णअधरामृतत्रिविध, निश्चयसिद्धिविभाग.७ प्रथमनामआन्द्है, पूर्वदलसंयाग, इकद्लविशकलितानुभव, धर्मद्विद्लप्रयोग. ८

परमानंद्वियागहे, विप्रयागउद्बुद्ध, संवलितअनुभवद्विदलमें, रसशृंगारप्रबुद्ध. ९ द्विदलश्रीकृष्णास्यहै, जाश्रीकृष्णअनूप, आदिमध्य अवसानरस, विहरतएकस्वेरूप. १० सदाकृपानिधिदैवीपर, प्रतिक्षणउठततरंग, निकटदेसकोमग्नकरि, दूरतिअसुरबहिरंग. ११ दैवीनकेउद्घारप्रति, अंतःकरनप्रयत्न, जागरूकइच्छाप्रबल, ज्योंसमुद्रतेरत्न. स्वस्मृतिमात्रप्रकाशकरि, आरतिप्रगटसमाई जेसेवनमेंवेणुकृत नादद्वाराआई. गृढअर्थश्रीभागवत, शास्त्रआदिदेसत. करतवाधरससाध करि, आरतिकरिजेतप्त. १४ स्थापकयेसाकारके, ब्रह्मवादहेंएक, असद्वादसबशून्यहे, ज्योंपावसकेभेक. १५ जोपारंगतवेदके, सोजानतयहभेद. खंडज्ञानप्रमाननहीं, क्योंसंशयउच्छेद. १६ गईअविद्याजीवकी, ब्रह्मभयोअविवाद, विद्यापर्वतबउररह्यो, दृषितमायावाद. १७

सर्वकुवाद्निरासकर; चोप्रमाणतें अस्त, वेदसूत्रगीतामिलित, श्रीभागवतप्रशस्त. १८ भक्तिमार्गभुविकमलहे, मार्तंडयहएक, अञ्जप्रकाशकभानुंहे, करतकुमुद्व्यतिरेक.१९ स्रीशृदादिसमर्थनहीं, तिनहूकोउद्धार, ब्रह्मक्षेत्रियमिक्तकरि, क्योंनहोयनिस्तार. २० अंगीकृतसामर्थ्यतें, प्रियलागतगोपीश ज्योंश्रीयमुनासंगतें, गंगाप्रतिव्रजईश. अंगीकतदेवीनियम, आसुरीप्रतिमर्याद, देहभावबाधकनहीं, आसुरजीवविषाद. २२ जोमांगेसोदेईतब, लक्षणकरुणायुक्त, बहुतदेतमागेबिना, महादयासंयुक्त. २३ विभुव्यापकनिजभक्तउर, जेसेास्वहृद्यभाव, सोनिजभावप्रकाशकर, परमक्रपालस्वभाव. २४ देतअदेयविद्ग्धतें, सुधासुसर्वाभाग, वेणुनादविनशरदगुणः; वेणुगीतउपयोग. २५ भगवदुभोग्यसुधाअपर, महाउदारचरित्र देवभाग्याकोदानतोः हैकैमुत्यनचित्र.

प्राक्रतअनुकृतव्याजकरिः; आसुरमानवमाह, श्रीमदृद्धिजअवतारमें; उद्घृतिदेवीजोह. २७ वेश्वानरचितधर्ममुखः; द्विविधअलौकिकवह्नि, दावानलपानकरऊष्णः; हिमतापनिवारकअग्नि. वसमत्रियआनन्दहैः श्रीवस्रभउपनाम, स्वरतिकृष्णश्रीकष्णःतबनिजप्रतिसूंदरइयाम२९ शुद्धसत्त्वसद्धपहेः; चिदानंदसत्पर्भ, सतचितआनन्द कृष्णप्रति व्युत्क्रम संपुट मर्म. सतसोसत्त्वविशुद्धहें, हरिप्राकटचस्थान, निश्चयहितकृतसिद्धहें, ऐसेकृपानिधान. ३१ कृष्णप्रेमसेवाकरत, सेवकशिक्षितहोत, ज्योंअंग्रलिअक्षरलिखें; बालककोउद्योत. ३२ मूरतिबुद्धिनिवृत्तकर; निखिलदेतजोइष्ट. प्रतिबन्धकमायाटरे; साप्रसादउच्छिष्ट. सर्वलक्षणविद्याकला पूरणगुणसम्पन्न, जाकाजैसाउचितफल; तैसोदेतप्रसन्न. ज्ञानदेतश्रीकृष्णकाः; भंक्तिसहितजोभाव, त्रिविधअलौकिकगुणकहैं, तमरजसत्त्वसुभाव.

गुरुजवदक्षिणकर्णमें; मंत्रकरतउपदेश, बहिरंतरपूरणभयो, सिद्धभगवदावेश. दानदेततउपूर्णहें; तुंदिलकरस्वानन्द, ज्योंजलरिमग्रहणतें. सागरिवसद्अमंद. ३७ पद्मप्रकुछितद्लसद्दा. आयतलोचनकोर, अन्तःस्थितिजोग्रप्तरस. प्रगटकरतरसजोर. ३८ क्रपाद्रष्टिकीवृष्टिकर. हर्षितदासीदास, तिनको पियलागत सकलदृढउपजतविश्वास. पतिलक्षणरक्षकनियत, कालादिकभयजात; आपसबनतेभयरहित, पतिनिश्चयविख्यात.४० रेाषद्रष्टिकेपातकरि, भक्तद्वेषीदाह; भगवदीयकामादिसब, स्थापनकरतसराह. ४१ पुष्ठिपुष्टिसेवाकरत, शुद्धभक्तिजबपुष्टि; सेवासाधनमानसी, फलरूपासंतुष्टि. પ્રર सुखसेवनतनुवित्तजाः पूर्वदल्संयोग्, एकाद्शसंलापसब, इन्द्रियहरिकृतभीग. दुःखअधिकआराध्यहें; फलमानसीउपयोग. चक्षुरुचिपंचत्वलों; येदसदसावियोग. ઇઇ

दुर्लभजिनकोलाभहें; एसेअंघिसराज; अन्यतजायेहीभजाः; छबीलखिथकितमनोज. उग्रप्रकृष्टपतापहै; सबकेालभ्यअशक्य; भिवतवृद्धिजाकाभइ; शीतलसेवनशक्य. ४६ वाकअमृतपूरितकरतः; सेवकरसिकअशेषः; असमर्पिततजविषयमति, अन्याश्रयणविशेष. श्रीभागवतसुधाजलिध, मथनविचारसमर्थ; श्रुतिरूपावर्णनकरत, ताकेाविवरणअर्थ. ४८ सुधासिंधुश्रीभागवत, अमृतसारकासार, गदात्रजस्त्रीभावसब, पूरीतवपुनिर्धार. मान्निध्यजाजनहातंहै, देतप्रेमश्रीकृष्ण, तबनिरोधफलव्यसनलों, पूर्णसबहीतृष्ण. ५० तविवशेषगतिदेताहै, चहुंदिशचितएकत्र, यहविमुक्तकोरूपहै, कृष्णभावसर्वत्र. 48 प्रथमप्रमाणप्रमेयअरु, साधनफलरसरास, शुकबरनतलीलासकल, रासप्रकासविलास.५२ क्रपाद्षष्टिजाकूंमिलत, कृपापात्रवहदास, प्रकरणफलकीनिजकथा, ताप्रतिकहतप्रकास्.

विरहएकअनुभवकरन, त्यागकरतउपदे्दा; अंतर्हिततबचंद्रलिख, गापीगीतसुदेश. भजनभेदत्रियप्रश्नकहि, नभजेभजियेध्येय; भजनपरस्परगौणहैं, देाईमुख्यहेंहेय. आराधनसाकर्मपथ, यहउत्तमसत्कर्म; केशग्रथनपुष्पावचय, रमणवरणकोमर्म. यागादिकनिष्कामविधि, करतसकलभक्तिअंग यहउपदेशअशेषजन, स्मृतिश्चतिभक्तिप्रसंग. यागकरतनिष्कामतें, होतमेाक्षअतिस्वच्छ; आपुनपूर्णानन्द्है, नहींइच्छायहतुच्छ. यागसकामविमानफल, अमृतभागयहस्वर्गः कामपूर्णजिनकोसबे, कहास्वर्गअपवर्ग. ५९ निगमवाक्पतिआपहे, उमयस्वर्गफलहाथः जाकोजैसीकामना, पूरतअविकृतनाथ. जिनके।बे।धविद्योषहै, तिनहोकेयेईदा; करनअकरनअन्यथा, करननियतजगदीश.६१ वक्तानामसहस्रके, कृष्णनामसवमूल; श्रीभागवतप्रकासकर, स्मरनसरनअनुकूल.६२

20

स्मरनसिद्धजिनकोंभयो, शुद्धसत्वउपयुक्त, स्वस्थितिनियतनिवासउर, शेषभावसंयुक्त.६३ शुद्धभक्तिविस्तारकों, नानावाक्यनिरुक्तिः; वाणीमात्रप्रमाणहे, मिलतभक्तकीयुक्ति. स्वार्थउज्ञ्ञितप्राणसुख, मनक्रमवचनित्रय; सुदृढअलोकिकभावकरि, सेवतसदास्वकीय. तादशजनवेष्टितसदा, सेवतसदाअनन्य; स्वाशयश्रीमुखवचनसुनि, स्मरणहृदयनिजधन्य कर्भगोणसेवाअधिक, चित्तशुद्धिकिहींहेत; आपकर्भकरिदासका, चित्तशुद्धिफलदेत. ६७ स्वक्रतंकर्मफलस्वीयहित, सवशक्तिप्रतिपाल; राजरुद्धमगधेशत्येां, तिनप्रतिकृष्णकृपाल. ६८ आज्ञालेांजगदरसंदे, जीवकरतउद्धारः आगेभक्तिप्रचारकां बंसकियाविस्तार. विद्यादिकऋतवंसमें, मुख्यवंसपितृरीत; आत्म दृष्टिवैशम्यनहीं, हरिप्रणितनिजप्रीति ७० शेपभाववित्रहहृद्य, भावुकफलतादात्म्य, जनउद्धरणअरोषसुत, वंशस्थापिमाहात्म्य. ७१

स्मयजागर्वनिवृत्तकरी, खकुलसर्वनिष्कलंक, आत्मसातश्रीकृष्णकृत, तातेभावनिःशंक. ७२ पतिकोब्रतजिनकोनियत, तिनकेपतिनिर्धार, चातकअरुब्रह्मास्त्रवत्, यहप्रणनिश्चयधार. ७३ द्वेसुखपरयहले।कका, दानदेनकानेम, ज्यांअनन्यचिंतनकरे, देतयागअरुक्षेम. महदाशयअनुभवमहत, यातेंहृदयनिगूढ, एसेप्रभुकेशरणनहीं, तेजगउपजेमृढ. जे अनन्यनिजभक्तहे, तिनप्रतिआशयदान, ज्ञापितकरतप्रसन्नव्हे, भगवदीयसन्मान. ७६ उपासनादिकपंथमें, सरनकहेअतिमोह; सानिवारिनिजगतिदई, कर्मधर्मसंदाह. दानादिकसाधनिकये, ज्येांउपजतहेभिकतः सगुनइक्यासीभेदमें, शरणनिषेधप्रसिवत. ७७ पृथक्भावगुणतेपृथक्, पृथक्शरणउपदेशः निर्श्वणभक्तिनिकेतहें, दुर्रुभलाभव्रजेश. ७९ हारद्जाश्रीकृष्णको, साजानतहेआप, पृथक्रारणउपदेशंद, पुष्टिभिक्तदढळाप.

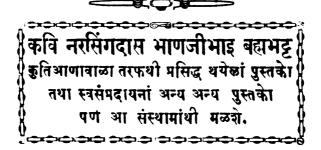
ळीळाॐजनिॐजकी, प्रतिक्षणपूरितभाव, पूर्वदलसंयोगरस, सन्निधानअनुभाव. भेगिअनासरकेविषे, उत्तरद्लउपयोग, कहतकथारसमग्नव्है, द्शनश्रवनवियाग. ८२ वाहिर अनुसंधाननहीं, अंतःप्रेमसमृद्धि, भ्रमरगीतआश्रमतुरीय, विप्रयोगरसदृध्धि.८३ व्रजवजस्त्रीनकोप्रीयसदा, श्रीवस्त्रभप्रियनाम. लेाकव्यापिवेकुण्ठप्रिय, यातेप्रियहेधाम. ८४ त्रजकोस्थितिप्रियलगतेहैं,त्येांप्रियलगतत्रजीय, उभयअलोकिकप्रीति है, उभयअलोकिकस्वीय. ली उाष्टिप्रकाशकर, परमअनुग्रहपोष, मुर्वानंदअलभ्यनहीं, कृपानंदसंताष. जालीलाभावनकरत, सोवपुधरेप्रकाश, रहसिपरमप्रियलगतहे, अनुभवजबअवकाश. अविकृतइच्छाभक्तकी, पूरतकृपानिधान, सर्वेश्वरसर्वात्मज्येां, जनइच्छानिजमान. ८८ पुष्टिभक्तिउपदेशबिन, यहलीलाअज्ञात, ज्येांगायत्रीमंत्रबिनु, द्विजप्रतिवेदछिपात. ८९

अतिमाहनमनकोंहरन, ऐसेनिजजनसाथ, लीलावेशरसज्ञकर, पुष्टिभक्तकेनाथ. सर्व असक्तअभवतसों, अनुभवनहींवीवेक; पंकजमधुकरयहत, पंकभखतहैभेक. भक्तमात्रआसक्तते, मुख्य भक्तयहछापः भूसमुद्रकूंभजवियत्, हरिपदजनहृदथाप. पतितदेहपावनकरत, जिनकोग्रहप्रतिबंध: गायत्रीश्चितिपंथमे, भक्तिब्रह्मसम्बन्ध. ९३ खयशगानतेहृदयकमल, प्रकुलितनिजसुस्थन. ज्येांश्रीजमुनारेणुपर. रसउत्तरीयप्रधान. अमृतसिंधुरसलहरिते. अन्यतुच्छरसमग्नः ज्येंामीश्रीकेस्वाद्ते. गुडकीरावविभग्न. यहरसपरउत्कृष्टहे; अन्यकुरसजगफंद; मुक्तिब्रह्मानंदतें; उद्धृतभजनानन्द. ९६ ळीळारसपीयूषते; आईआईजनकीन; शुष्कवस्त्रजलेसहितसों. संगलगेतस्रीन. श्रीगावर्धनवर्यजनः स्थितिकोअतिउत्साहः निकटपुलिंदीभक्तकरि. सर्वगतादिप्रवाह. ९८

ळीळागिरीउद्धरनसुन्, भक्ततजतऋणसप्तः; आत्मयोगअनुभावते, प्रेंमपूर्तिगतितप्त, यज्ञभागहरिशैलबलि, भाजनमुखकोधर्मः इन्द्रियद्वेइकगालमधिरसचित्तवानीकर्म. १०० पूजागिरिकीयज्ञकृति, मुखतेआज्ञादेत, यज्ञभागपहिलेकह्यो, इन्द्रवृष्टिप्रतिहेत. चतुर्वर्गपुरुषार्थदे, दास्यधर्महरिअर्थ, कामदिद्दक्षामाक्षसो, चित्तश्रीकृष्णसम्ध. १०२ जागरूकइच्छाप्रबल, तातेसत्यप्रतिज्ञ. पुष्टिचतुर्विधदेतहे, इंगितकृष्णअभिज्ञ. सत्यप्रतिज्ञाकरतयेां, निश्चयत्रिगुणातीत. प्रकृतिजन्यरजसत्त्वतमः तेप्राकृतकीरीतः १०४ सुनयविशारदसहजगुण, दैवीजीवकेसाग, गाकुलेशलीलासकल, स्थापितनिजअनुराग. ५ कीर्तिवर्धनशुद्धनिज, ऋष्णशुद्धत्येांभक्तः; सबतेंमार्गशुद्धयह, शुद्धभगवदासक्ति. तत्त्वसूत्रकेभाष्यते, कीर्तिवृद्धिविशुद्ध; साकृतिब्रह्मप्रवंचनित, अणुहैजीवप्रबुद्ध. १०७

व्यापकजीवअसत्यजग, ब्रह्मनिराक्टतएक: मायावाद्वितल्पप्रति, अग्निरूपपरछेक. १०८ ब्रह्मवादसाकारहै, शून्यवादशबओर; ध्यानशुन्यकाकरतहै, जाकाकहुनहींठार, १०९ अप्राकृतआभरणसब, प्रतिपद्श्रीभागवत: पट्गुणमयएश्वर्ययह, उद्धारकउद्योत. सहजस्मितसावीर्यहैं, देवीकोनहींमाहः असुरमाहमेंमश्रहें, प्रकटपराक्रमजाह. भूषणयशदूषणरहित, स्वजनसमग्रत्रिलेाकः; पुष्पमालकीगंधज्येां, हरियसप्रसरीविलेकि.११२ भूमिभाग्यश्रोधर्भहे, सेवकतादृशरूप; गुणवैषम्यस्वभावहै, गुणसमप्रकृतिअनूप. ११६ संदरसहजस्वरूपहै, नहींमायाकृतलेश; ज्ञानशुद्धतवजानिये, नित्यभगवदावेदा. ११४ सर्वभक्तसंप्रार्थ्यहै, चरनाटजर्सभाग्य; सर्वनिवेदनप्रीतिकर, सेवाहढदैराग्य. कहेविशद्आनन्दनिधि, अष्टेश्तरशतनामः श्रद्धाबुद्धिविशुद्धकर, अनुदिनपढिविश्राम, ६

हरतमृत्युशतआयुकेा, टारतनामकुदेाषः इयानंद्षद्गुणसहित, अष्टोत्तरशतताष. ११७ उक्तसिद्धिनिर्धारयेां, वदतअग्निसुतसत्य; कृपाद्रष्टिकारणनियत, दाराकहाअपत्य. उक्तसिध्धिकीप्राप्तिबिनु, मुक्तिभईताव्यर्थः उक्तसिद्धिनिश्चयभई, इच्छामुक्तनिरर्थ. निजसवीत्तमयंथमें, सदानंदरसलक्ष, आवेतबलेांपाठकर, फिरजपभावुकअक्ष. १२० नीलजलदसुस्थिरलखे,स्थिरदामनीमिलिलहे।त स्थिरतामनकीहोयजव, स्थिरसुभाग्यउद्यौत. पुरुषात्तमलीलाजलिष, सुस्थितविग्रहशेष; प्रचुरभावतेदाननिज, द्वारकेशसंदेश.



श्रीगिरिरानस्थ श्रीमद् गास्त्रामी श्रीगोपिकालंकारजी उपनाम मदुलालजी महाराज

श्री भे महलाल जी महाराज जुं माकटच संवत् श्री भे १८७८ ना वैशाख वद ११ ना श्रम दिवसे श्री द्वार केशलाल जी महाराज ने श्रम ग्रहे थयुं हतुं. आप महा उग्रमतापी हता, तेमना भ्तलपर विद्यमान लीलाना थे। डा छुटक मसंगो अहीं आपवामां आवे छे.

- १. आपने माथे श्रीमदनमेाहनलाळजी पथार्या, एटले आपे श्री गिरिराजमां मुखारविंद सामे श्री महा-पश्चजीनी बेठकनी बाजुमां एक विशाळ मंदिर समराच्युं, एक मंदिरमां श्री दाउजीबळदेवजी तथा बीजा मंदिरमां श्रीनंद-यशादाजी, श्रीकृष्ण, बलदेवजी, तथा श्रीगंगा-जीनां स्वरुप पथरावी सेवाना मबंध कर्या.
- २. नेग, भाग इत्यादिना बंदोबस्त करी, साते घरनी रीतमांथी जे जे आपने रुचीकर छागी ते ते स्वतंत्र रात आपना मंदिरमां प्रचल्लित करी. नित्य विधिनी एक माटी नेांघ पोथी तैयार करावी मंदिरमां प्रचरी, के जेथी मुखिआजीने नित्य पातःकाळे जोइ

छेत्राथी सेवामां सहायता थती, विशेष मकार श्रीविद्ध-लेशजीनी भावना मुजब चाळता.

- ३. आप ज्यारे ज्यारे परदेश पघारता त्यारे त्यारे श्री नाथजीना चरण स्पर्श करी, श्रीफल भेट धरीनेज पधारता.
- ४. आप अत्यंत दयाळ हता, जे एक पसंगे पत्यक्ष जणाइ आच्युं हतुं. बनाव एवा बन्या के, एक रात्रिना काइ दुष्टजनाए मंदिरमां चारी करी, तेमां श्री-ना स्वरूप गुद्धां पथरावी गया. प्रातःकाळे चार वजे मुखिआजी म्नान करी घंटा शंखनाद करी। शयन मंदिरमां श्री-ने जगाववा गया. त्यां शय्या खाली जीवामां आवी. तरत आपने निवेदन करवामां आव्युं. तपास करतां मंदिरमांना पाछला भागना एक मार्गमां बळेल दिवासळी मळी आर्ता. सिवाय कांइपण चिन्ह जावामां आव्यं नहीं. आपनी घैर्यतानी खरेखरी कसोटी आ समयेज हती. मुखित्राजी-भीतरीआओ ते। गभराइ गया, मंदिरना पहेरावाळाओं पण देाडधाम करवा मंडी पडया, तुर्तज त्यांथी वे माइल गावर्द्धन गामना दारागा (पार्लीस फानदार)ने खबर आपवामां आर्वा, दारीगा साहेबनी स्वारी तेमना सद्दायको (पार्लास) सुद्धां आवी पहेांची. आ सर्व बनाव मंदिरना बहारना भागमां अधिकारी

मारफतज बनता हता, परंतु आपे ता मुखिआजी अने भीतरीआओने आज्ञा करी दीधी के, तुर्तमां सामग्री सिद्ध करा. मभ्र ता गिरिराजनी कंदरामां क्रीडा करवा पथार्या हशे, ते शिघन पाछा पथारशे.

एवामां बहारथी एक सेवके आवी वधामणी आपी के, श्री गिरिराजनी एक शिलाने आधारे मुखारविंदथी थोडेज दुर पधरावेळ श्री-ना स्वरुपनां दर्शन थयां छे. आ सांमळी मुखिआजीने तुर्तज आज्ञा थइ, अने ते जड़ श्री-ने पधरावी लाव्या. तुर्तन मंदिर शुद्ध करी श्री-ने पंचामृत स्नान करावी, शृंगार पर्यतनी सेवा पहेांच्या. वाद राजभाग धरीने आप नित्य नियम मुजब श्रीसुबो-धिनीजीना पाठ करवा चेाकमां विराज्या हता. त्यां खबर मल्या के, चार पकडाइ गया छे अने बहारना भागमां गुंदीना झाड साथे बांध्या छे. ते सांभळी आपे आज्ञा करी के, चार केवा छे ते मारे जावा छे. एम कही आप बहार पधार्या. त्यां बे जणने झाड साथे बांधेला जोइ बोल्या के आतो मनुष्य छे ! चेार नथी ते तो विचारा भ्रुरूया इशे. जेथी चारी करवा आव्या हशे एम कही चारी तरफ दृष्टि करी बाल्या के. तमाने भ्रुख छागी हाय एम जणाय छे. चेाराने आपनी दयाळताने। लाभ मळी गया. तुरत गद्गद् स्वरे कहेवा

लाग्या के, महाराज ! अमे। वे दिवसथी अख्या छइए. शिद्यन तेओने छोडावी राजभाग सराव्याबाद खुब महामसाद लेवरावी उपरणा ओढाडी रवाना करी दीधा. दारोगो ते। आ बनावथी आश्चर्यन पामी गयो. परंत आपनी आज्ञातुं उछंचन करी शकयो नहीं अने ते पण महामसाद छइ विदाय थइ गयो.

५ एक समय व्रजमां दृष्टि ओछी थवाथी चामा-साना पाक ओछा उतर्यो जेथी व्रजवासीओ फागण मासमां कुवाओमांथी खेतरेामां पाणी पाइ पाक निपजा-ववाना कार्यमां गुंथाया हता. तेवा समयमां आपनी इच्छा दिपमाळिका अने फूलडेाल-बन्ने उत्सव एकज दिवसे उजववानी थइ,जेथी गुळाळ कुंडनी नजीकमां आपनी वगीची छे त्यां तैयारो करावी अने झापटीआने आज्ञा करी के, आसपासना खेडा (गामडां)ओमां जइ छोकोने खबर करे। के, तेओ पात पातानी चापाइ (माटां नगारां)ओ लड़ने गुलालकुंड उपर हाजर थाय. एटले श्रीठाके।रजीने धामधुमथी पधराबीए. जेथी ज्ञापटीओ आसपासनां दरेक गामेामां जइ त्यांना नंबरदारे। (म्रुखि-पटेला)ने आ वर्तमान कहेवा लाग्या, जेना जवाबमां तेओए कहां के:--

यहां तो अकाल के मारे लेग भूखे मरे जातहे, ओर महाराजकों तो अपने मनेारथकी परी हे॥ ऐसो महाराजहे से। बरषा नाय बरसाई दे ? हम कहा करे॥

आ समाचार लड़ झापटीए आबी आपने निवेदन कर्या, त्यारे आपे कहेवराच्युं, के वरसाद आवे तो तो तमाम आवशोने ? ते मुजब दरेकने खबर आप्या अने दरेके आववानुं कबुल कर्युं. त्यारे आपे मुखिआजीने आझा करी के, महामसाद अने जळनी झारी लड़ श्री गिरिराजजी उपर जाओ, त्यां महामसाद पधरावी आवो अने इंद्रने कहे। के:—

आपने नेवता भेज्याहे सा प्रसाद छेवेकों पधारिया.

मुखिआजी ते मुजब कही आव्या. एटले सेवकोने आज्ञा करी के, चेाकनी जाळी उपरथी चंदरवा आदि जे होय ते उतारी नाखो अने परनाळामां जे आडच (कचरेंा) होय ते कहाडी नाखी पाणी जवानो रस्ते। करेंा, हमणांज वरसाद थशे. आ सांभळी सेवको विचा-रवा लाग्या के आपे आजे भांग विशेष लीधी जणाय छे, (महाराज हमेशां नित्य नियम मुजब श्री दाउजीन भांग धरावी विशेष प्रकारे आरोगता) नहीं तो उष्ण-कालमां ज्यां प्रचंड ताप बळे छे तेवा समयमां आबी अनुचित आज्ञा करे नहीं, परंतु इश्वरनी लीला इश्वर शिवाय कोण समजी शके ? थे।डी वारमांज एक वादळ आकाशमां चढ्युं, अने वे कलाक सुधी खुव दृष्टि थइ, दरेक खेतरो जळथी तरवाळ थइ गयां. जेथी वरसाद वंध थतांज व्रजवासीओ खुशी थइ पात पोतानी चापा-इओ लइ सेवामां हाजर थया, अने आपे स्वइच्छानुसार मनारथ कर्यो.

- ६. आपने मुसाफरीमां गामडाओमां गामनी वहार वाही के बगीचामां विश्राम करवाना शाख हता. त्यां जो बाजुमां श्री महादेवनुं मंदिर होय तो राजभाग बाद महामसाद अने मसादी बीड्डं छइ जता अने महादेवने धरता, ते बखते "श्री कृष्णअष्टोत्तर शतनाम " नो पाठ पण संभठावता.
- ७. मुसाफरीमां जती वखते अने पाछा पथारता त्यारे, मंदिरनी छत उपर सेवकोनी सभा करता, त्यां केटलेक वार्तालाप कर्या बाद दरेकने प्रसादी बीडां आपता जेनी अंदर दरेक सेवकने तेनी योग्यतानुसार वीडानी अंदर सुवर्ण के रोकड रकम राखता. सेवकोने प्रथमन आज्ञा थती के, दरेके पोताने स्थानके जइनेज

बीडां खोलवां. जेथी कोने शुं मळ्युं ते वीजाओ जाणी शके नहीं, तेम इर्षा उत्पन्न थवा जेवा संभव हाय, ते एक बीजाने जणावे पण नहीं; जेथी स्पर्धा न थती.

- ८. आप नोकरोने पोताना नोकर न समजतां तमाम श्री-नाज सेवको छे. ए मुजव समजीने व्यवहार चलावता.
- ९. दरेक सेवक साथे स्नेह अने शाम्तिथी काम लेता. कोइना मनमां दुःख थवानो प्रसंग बनतां सुधी आववा देता नहीं; तेमनां जुना माणसा, के पोताना पिताश्रीना समयना सेवको तथा तेमना कुटुंबी जानो कदाच कसुरमां आवे तो तेने स्नेह भयों ठपको दइ शरमावता अने पुनः काळजी पूर्वक सेवा करवातुं सुच-वता. परंतु कोइने रजा न आपता. माटा मुखीआजीनो एक बार तेर बरसनो छोकरो प्रचारकी सेवा करतो हतो परंतु कांइक सवारमां मोडा आवतो, जेथी एक दिवस आपे पासे बोलावीने ते छोकराने कह्युं के:—

लाला आयवेमें अवेर क्यों ? में जानु हुं के तेरो मामा कानमें मुरकीय पहनेहें और तोकों नहीं है जासां तेरो मन नाराज होयगो! ले ए सोनों लेजा और तोकों आछी लागे वैसी मुरकीयु करवाइ लइयो. जा और अब-तें सेवामें बेगी आइयो.

(आ मामो भाणेज समान वदना अने साथे सेवामां हता)

ए मुजब तेने राजी करीने एक तो<mark>ळा सुवर्णनो</mark> टुकडेा आपो दीधा अने बीजे दिवसथी लाले। पन वहेलो आववा लाग्या.

१०. आप भोजनादिकनी मेंड चुस्तपणे पाळता, तेमज सेवको पासे पण पळावता. एक समय एक मृत्विओ अने एक भीतरीया मंदिरनी तिवारीमा बेसी अनसखडी महाप्रसाद छेता हता. महाप्रसाद छेतां अने भीतरीओ साचारो ब्राह्मण हता. महाप्रसाद छेतां लेतां वार्ता विनोदमां एक बीजानो हाथ अडी गया, भीतरीओ ता तुर्तज उठी गया, अने कोगळा करी बीडी लीधी. परंतु मुखिआजीए तो समजी लीधुं के महाराजश्री अपवास तो कराववानाज; माटे अत्यारे तो पेट पुरण प्रसाद छेवा एज ठीक छे. एम विचार करी जमी लीधुं त्यारबाद बन्नेए जइ आपने विनति करी. वनेळ बनाव जणाव्या; ते सांभळी आपे आज्ञा करो के भीतरीआए तो रात्रे भोजन करवुं नहीं, अने मुखिआजीए आवती काले उपवास करवा.

- ११ आपे श्री वहुजी अने श्रीबेटीजी ए शुद्धांने पण सरुत आज्ञा करेल के, कोइए पण सेवा कर्या शिवाय जल पर्यंत आरोगवुं नहीं. जेथी दरेके दरेक सेवामां उपस्थित थतां, लतां कोइ पण व्यक्तिने क्यारेय पण वहेल्लं नहावानी आलस आवे, त्यारे शरीर अस्वस्थ्य होवानुं निमित्त बताबी सेवामां प्रवृत न थाय. त्यारे आप ते दिवसे तेमने खाइ (भाजन पदार्थ) न धरवानी भीतरीआने आज्ञा करता. अने सुचना पण आपी देता के तावमां अन्न बाधा करे (ज्वरे लंघनं कुर्यात्) आम थवाथी एवा प्रसंगो बहु ओछा बनता.
- १२. आपना लघुवंधु श्रीचटुलालनी (श्रीगे।कुला-लंकारनीना लीला विस्तारबाद आपे क्यारेय पण रंगीन वस्नो धारण कर्यां नथी, तेम सेवा समय क्यारेय पण चुक्या नथी. नित्य राजभोग अने सेनना अनेासरबाद श्री-ने दंडवत् करो विनती करता के, हे नाथ ! कोइ पण वस्तते सेवासमये "पहेांचा" ए झब्द मारा मुख्यी कहेबरावशो नहीं.
- १३. आपना पिताश्रीमां, आपनी अत्यंत श्रद्धा भक्ति हती. तेमना पादुकाजी, मंदिरनी सामे एक नानी कोटडीमां पधरावी तेमनो सेवा, श्री-नी सेवा साथेज करता. (जे मथा अद्यापि चाछ छे.) तेमना गुणानंवााद

श्री (महाप्रभुजी) श्रीवल्लभनी अवयता रुपे दीनता-आश्रयनां पद वनावी गायां छे अने कृतार्थ थया छे.

१४. श्री गिरिराजमां साते स्वरुपवाळाओनां क्रवजा मालीकीनां मंदिरे। छे. तेओमांथी कदाच कोइ मंदिरवाळा झपाटामां आवी जाय तो तेने अति विटं-वना थइ पडती. एक समय श्री मथुरेशजीवाळा साथे एक खंडेरनी बावतमां एवोज झगडेा थये छा, जेना केस छेक आगरा कोर्टमां जार शास्थी चाल्या. अने वकील वेरीस्टरानां खीस्सां तर थयां. आवा बनावा ज्यारे मे।टे भागे वनवा लाग्या त्यारे आपने विशेष चिंता थवा लागी. कारण बीजा बालको त्यां स्थायी विराजता न होवाथी तेओने विशेष चिंता नहोती. परंतु अापने ते। त्यांज विराजवानुं होवाथी बहु संभाळबुं पडतुं. केटलीक वखत मंदिरना आगळना भागमां खुळा भेदानमां गायो वंधाती तेना खीला शुद्धां उपडाबी नाखता, आ खबर ज्यारे नेाकरे। आपता त्यारे आप एमज कहेता के सांजना फरीथी खीला घाली देजा. एकाद वे वखतते। श्री गिरिराजजीने दुध चडाववा मंदिरना पाछला द्वारथी आपश्री गयेल त्यां आपनुं अपमान करवामां आन्युं ते जोइ मंदिरना तमाम सेवको नाराज थया, अने कामदारे ते। फरीआद नेांधाववानी

विनती पण करी, परंतु आपे तो एज आज्ञा करी के, तेम बनेज नहीं, ए तो म्होटा अने समर्थ छे, आपणाथी तेमना साम्रं थइ शकाय नहीं, वजी श्री-तुं द्रव्य
अदालतामां जबु न जोइए, परंतु एटला विशेष द्रव्यथी
श्री-ने विशेष सामग्री आरोगाती मनेत्रथ करो, ए
विशेष उत्तम छे, सहनशिलता आथी पण विशेष बोजी
हशे खरी ?

१५. एक दिवस एक वैष्णव मंगला आस्तीनां दर्शन करी भंडारना चाकमां आव्या, त्यारे भंडारीए कहुं के वैष्णव! भंडारमां सेवा करवानी इच्छा हाय ता हाथ खासा करावुं, त्यारे तेणे कहुं के, हुं ता श्री गिरिराजजीनी परिक्रमा करवा जवाना छउं. ते सांभळी आपश्रीए आज्ञा करी के,

श्रीमद्रनमोहनलालजीना भंडारमां बेसीने चेाखामांथी एकज कांकरी विणवाथी एक परिक्रमानुं फळ थाय छे, 'सेवा' एज पुष्टि-मार्गना साचा सिद्धान्त छे. बाकी बधां सेवा प्राप्त करवा माटेनां साधन छे.

आ वचनामृतथी ते वैष्णव त्यांज बेसी गया अने ते दिवसथी अनन्य भावे सेवामां प्रवृत थइ गया. १६ दरेक उत्सवमां वैष्णवोने आपना श्रीहस्तथी महाप्रसाद छेवरावता अने अति आग्रह पूर्वक अनसखडी धरता त्यारे गुरुजने। तुं शिष्य पति जे वात्सल्य होवुं जोइए ते साक्षात् मूर्तिमंत बनी जतुं.

आपे जुदे जुदे समये छप्पन भाग आदि घणा मनोरथ कर्या छे, तेमांथी थाडाकनुं वर्णन आ नीचे आप्युं छे.

- १. संवत् १९१६ ना वर्षमां, श्री गिरिराजजीने। छप्पन भोग कर्यो.
- २. संवत् १९२९ ना वर्षमां, श्रीडाकोरजीमां श्री रणछोडरायजीना छप्पन भोग कर्यो जे पसंग अद्यापि पर्यत समग्र गुजरातना वैष्णवोमां यादगारछे. आ मनेा-रथमां देशावरथी २९ भा० वाछको अने वहु—वेटीजी पथायां हतां वैष्णवो पग छाखानी संख्यामां आवेछ. आ अलेकिक प्रसंगना वर्णननुं पुस्तक अमदावादवाळा मा० श्री वजरायजी महाराजश्रीए रच्युं छे, एम भग-वदीओ द्वारा सांभळवामां आव्युं छे. परंतु अमने तेना दशन थयां नथी.

संवत् १९३० मां श्री वेट शंखाद्धारमां, छप्पनभोग ने। महान् मनास्थ थया, आ छप्पन भोगना उत्सव जेवा त्यारपछी आज पर्यत एक पण जगमसिद्ध छप्पन भोग थयो नथी. आजे पण काठीआवाडमां द्वारकां—बेट नी यात्राना प्रसंग चालता होय त्यारे द्वद्वोना म्हाएथी छप्पनभोगवाला श्रीमहलालजी महाराजनुं नाम अनाया-सेज बेालाइ जाय छे. आ मनारथनी शरुआत फागण श्रुद ५ थी करीने वर्ष पर्यतना तमाम उत्सवी तथा कुंदबाडा विगेरे करवामां आव्या. एक मास पर्यत नित्य निवन अलाकिक आनंद सागरनी छालो उललती रहीं। आ मनारथमां जे एक महान अलाकिक प्रसंग बन्याले. तेवा प्रसंग आ चार कलिकालमां बनवा ए कांइ साधा-रण वार्ता न गणाय. आ बनावज आपनुं प्रभुत्व सिद्ध करे छे.

आ समयमां श्रीगोमतीमां स्नान करवाना रु. ४-८-० अने श्री वेटना मंदिरमां दर्शनना रु. ४-८-० मळी रु. ९-०-० गायकवाड तरफथी कर छेवाता, उपरांत नवानगरना जामसाहेच तरफथी रक्षण नीमीते चीछा वेरो छेवाता. आ बधा करे। आपे माफ कराव्या हता एटछे काठीआवाडी गरीव वर्ग आ समयना छाम छेवा चेामासानी नदीओना पुरनी माफक उभराइ चाल्या. मुळ्योज काठीआवाडी मजा गरीव, तेमां वळी दश-वार रुपिआ तो फक्त कर वेरा भरवाना जोइए एटछे नजीकना रहीशा पण श्री द्वारकांजीनी यात्रा करवानी

तित्र लागणी होवा छतां पण तेथी वंचित रहे ए खु छं छे. जेथी तेवा समयमा ज्यारे इच्छानुक् प्रसंग आक्षी मळे त्यारे तेवा लाभ छेवा दरेक माणस उत्सुक होय! एटले आ वखते आसपासना मदेशोगांथी असंख्य मनु-प्यो आव्यां हतां. आसरे दोह लाख माणस हशे. आ वखते शंखोद्धार बेट जाणे केम! मानव प्राणीना बनेल सजीवन बेट होय तेवा जणाता हतां.

आ मने।रथमां १५ गे।० बालको तथा २० वहु-वेटीजी मळी आसरे ३५ जेटलां स्वरुपे। पथार्यां हतां.

आवा जबर-जस्त समारंभनी कंकोत्रीओ छखाइ तथा बाद बेटना मुख्य अमलदारने जाण थइ एटले तेणे, मीटा पाणीनी तंगी पडशे अने लेाका पाणी विना दुखी थइ जशे एवा विचारथी समारंभ अटकाव्या.

बेदने फरते। खारा पाणीनो दिरये। अने नदीने। अभाव एटळे मीटा पाणी माटे फक्त कुवाओनो आधार. गाममां एक तळाव छे. परंतु वरसादनी पाछळनी खेंच अने उनाळानी रुतने छइने तळाव पण तळीए पहें। च्युं हतुं एटळे पीवानी पाणीनी खेंच पडवानी. ए विचार वायु वेगे पसरी गये। अने माणसाना मन उदास थइ गयां. परंतु,

॥ प्रभु सर्व समर्थीहि. ॥

अचानक आकाश वादळथी छवाइ गयुं अने थाडी-वारे ठंडा पवन साथे वरसाद शरु थया. जातजातामांतळाव पाणीथी भराइने छ्छी गयुं. लगभग पांच-छ, कल्लाकना वरसादना जासभेर धसारा बाद एकदम वादळां विखराइ गयां अने आकाश स्वच्छ थइ गयुं. एटळे आप.......तळाव पर पधार्या अने एक खीठी अंदर उतरता बीजां पगथीआनी फाडमां खाडावी दीधी.

आ चमत्कारथी वेटना गायकवाडी अमलदारे। मुग्य थइ गया अने तुर्तज इच्छा मुजब मनोरथा करवा विनति करावी.

उपरना प्रसंगथी आपनो प्रतापवळ प्रसिद्धिमां आवी गया अने काठीआवाडना राजाओ अने प्रजा उपर एवी सचाट असर करी के, आखा काठीआवाड-मांना तमाम नानां—माटां रजवाडाओए जागीरो आपी तथा साधारण प्रजाजनोए आपनी छागाभेट शरू करी दीधी जे अद्यापी चाळु छे. उपरांत स्वस्थान जुनागढना नामदार नवाब साहेब जेवा इस्ळामी राजाओए पण गाम अने जागीरा आपी. चाळु अर्धनास्तिकताना जमा-नामां आ कांइ साधरण वार्ता न कहेवाय!

आ छप्पन भोगना वर्णननां कवित, यशादानंदन-लालाजी विगेरेए कथां छे. अने अन्य वैष्णवाए थाल- पद वनाव्यां छे. ते मांहेनुं एक प्रसिद्ध घेाळ अहीं उचित जणावाथी प्रस्तुत् चरित्रना छेवटना भागमां आप्युं छे,

- १७. श्री दाउजीना हांडाना मनोरथा तथा श्री यमुनांजीना मनोरथा पण आपे विपुल ममाणमां कयाले.
- १८ आपने गावा-चजाववानो घणे। शोख हते। समय समयनां कीर्त्तन श्रीमुखथी करता.
- १९ आपे आपना पिता श्रीद्वारकेशळालजी महा-राजनां अष्टोत्तर शतनाम कयां छे, उपरांत आपनां ३२ वचनामृत छपाइने मसिद्ध थइ गयां छे.
- २० आपनां बनावेल दीनता-आश्रयनां ५२, पद कहेवातां परंतु अमने लगभग १००) उपरांत आपनां रचेल पद मलयां छे. (हजु पण वधारे मलवा संभव छे) तेमांथी थाडां पद आ पुस्तकमां आपवामां आव्यां छे. वाकीनां बीजा भागमां आपवामां आवशे. दरमिआन अमारी शोध चालु छे. तेमां जे प्राप्त थशे ते तमामना लाभ तेमां आपशुं ते सिवाय श्री बेटना छप्पन भोगनां थील पण आपवामां आवशे.
- २१. आपे सात स्वरुप पैकी श्रीबालकृष्णजी आदिनां कीर्त्तन पण बनाव्यां छे.

२२. एक समय संवत् १९३९ नी शरद पुर्णिमाने दिवसे आपने स्हेज ताव आव्या जेवुं जणायुं, जेथी आप मने।गत कहेवा छाग्या के, हजु ते। मारे अन्नक्र्टनी सेवा करवानी छे. माटे पंदर दिवस बाद आवजे, एम बेाली आपे श्री अंग उपरधारण करेले। उपरणा उतारी एक एकान्त स्थानमां मूचयाे. त्यारपछी अन्नक्रूटने दिवसे भाग सरावी दरेक वैष्णवाने बालावी आग्रह पूर्वक महा मसाद छेवराच्या. रात्रिना समये तपाम सेवकोने पासे बेालावी आज्ञा करी के, अमारे आ वखते मोटो पदेश करवानेाछे, तो तमाम तैयारी करी राखशो, ते वखते कामबनथी केटलाक वैष्णवो आपनी ब्रांखी करवा आवेला हता. तेने आपे आग्रह पूर्वक राक्या हता, ते पण आ वखते हाजर हता. वार्ताछापमां छग-भग अगीआर वाग्यानो समय थवा आव्यो, त्यारे आपे केटळोक सेवा संबंधी उपदेश आप्या अने प्रसादी बीडां वांटी दइ तमामने स्वस्थानके जइ ग्रुइ जवानी आज्ञा करी अने आप पण पाढी गया. बीजे दिवसे भाइबीजना उत्सवधी पहेांची. तमामने महामसाद छेवरावी काम-वनथी आवेळा वैष्णवाने उपरणा ओढाडी विदाय कर्या. बार वाग्ये दरेक कार्यमांथी निष्टत्त थइ, पाढवा जवा अगाउ शापटीआने आज्ञा करी राखी के, मने त्रण वागे जगाडजा, एम कही आप पाढवा पथार्या. पछी पोणा

त्रणे जागृत थइ पुछ्युं के, केटला वाग्याछे?, झापटीए कहयुं के, जे! त्रण वागवानी तैयारी छे, जेथी आपे उठी वहुजी महाराजने वोलावी अंतिम क्रियानी विधि करावी, शरद पुनमना राजे जुरेा मुकी राखेल उपरणा छइ आव्या, अने ओढीने पोढी गया,—ठीला विस्तारी गया. अर्थात् निजधाम-गालाकमां—निज लीलामां संवत् १९४० नी भाइबोजने दिवसे भळी गया.

- २३. आपनां श्री बहुजी महाराजनुं नाम श्रीशत-विंदाजी हतुं. आपने त्रण वेटीजी हतां तेमां १ कुमारिका वस्थामां लीलामां पधारेल. सिवायनां माटां श्री गंगा-बेटीजी जेमनुं मा. अने लीला मां तथा छाटां श्रीगावर्द्धनां बेटीजी तेमनुं मा. अने लो. मां थयुं छे. बहुजी शतविंदाजी संवत् मां लीलामां पथायां.
- २४. आपना श्रीगिरिराजर्ज.मां श्री मदनमाहनलालजीना मंदिरनो वहीवट श्रीवहुजी महाराजना छीला
 विस्तार्था वाद-श्री गोवर्द्धनां वेटीजी चलावतां, परंतु
 तेओ ज्यारे लीलामां पधाया त्यारे मंदिरनो कवजा
 वेटीजीना वर मनवालालाना हाथमां आव्या.एटले माटां
 वेटीजीना लालाजीए पातानो हक स्थापन करवा माटे
 मुकदमा जारी कयीं. जेथी श्रीनाथद्वाराधीश टीकायत

श्री गोवर्द्धनलालजी महाराजने दरमियानगीरी करवा अहर पडी एटले आपे आपना अधिकारीजी मारफत मनवालालानुं समाधान करी संवत् १९६२ ना श्रावण शुद १० ने दिवसे मंदिरने कमजामां लीधुं. ते वखते आ लेखक श्री गिरिराजजीमां श्रीमदनमोहनलालजीनी सेवामां हाजर हता.

नें। नें। श्रीमदुलाल जी महाराजश्रीनी छीलाना आ छटा छवाया मसंगो (मारा तरफथी लखायेछ) मथम तेओ श्री कृत दीनता आश्रयनां पदना पाछछना भागमां छपायेल छे. ते मसंगो छपाया बाद जे विशेष जाणवामां आवेळ छे तेने आधारे सुधारे। वधारे। करी अहीं छखवामां आवेल छे.

अमे पारबंदरमां, बाराडी मदेशना एक चारण पासेथी सदरहु छप्पनभागना चंद्रावळा सांभळ्या हता. परंतु ते वखते छखी छेवानो अबकाश न मळवाथी ते हाभ ग्रमाववे। पड्यो छ. तथापि अमे ए संबंधतुं साहित्य मेळववाना मयत्नमां छइए. भगवद् कृपाथी तेमां फळीभूत थथुं तो भगवदीओने तेनो छाभ बीजा भागमां आपथुं.

न० भा० ब्रह्मभट्ट,-सम्पादक.

श्री वालकृष्णजीनां कीर्तन-राग विलावक.
श्री वालकृष्णकुं गाद ले स्तनपान करावे।
चुचुकारतमुखप्रफुछित, अति आनंद बढावे॥
गापीजन हिस कहेत मेहेरिसों,

हमें देहुता हमहि खिलावे । तिहारे भाग्य दिया फल मांग्या,

ये हे तुमतें सुख पाबे ॥ २ जबलीने प्रफुछित व्हे पिय कंठ लगावे । रसिकदासके प्रभु रित नायक,

> सबतन ताप बुजावे ॥ ३ (२)

वंदों श्री बालकृष्ण नव बाल । जसुमित यह झूलत हे पलना, रसलीलामें अधिक रसाल ॥ १ कठुला कंठ श्रकृटि मिस बिंदूका, तिलक बिचित्र बिराजत भाल । रसिक रायके दासकी बिनती,

शरण राखिये करि प्रतिपाल ॥ २

श्री नटवरलाळजीतुं कीर्त्तन-

वंदो नटवर नवल कन्हाइ। रत्न जटित आंगनमें नाचत, कीलकी कीलकी अति हरष बढाइ ॥ १ मांगत माखन माट मातसां, बोलत बचन सुमुख तुतराइ। जननिलाय दिया हित चित करी, लीना अति सुखपाइ॥ २ एक करमें नवनीत बिराजत, एक कर माट सुहाइ। निर्तत सुल्प संच नौतन गति, हस्तक भेद बताइ॥३ ब्रज बनिता नैनन सुख निरखत, अंतर भाव जताइ। रसिकदासके प्रभु रसदायक, रस संकेत बताइ ॥ ४

आश्रयनां पद,-राग विद्यागरो.

यह तुमसे। मांगा गिरिराय।
जन्महिजन्म तरहटी विसवो,
वृज रज तज चित अनंत न जाय॥१
हिर सेवारस पान करें। नित,
श्री भागवत रसना मुख गाय।
रिसकदास जनकी प्रतिज्ञा,
श्री वह्नभ क्रलनन शिरनाय॥१

____(o)____

यह तुमसें। मांगा डंडोती।
श्री गिरिराज तरहेंटी बसिबो,
नित निरखे। श्री वह्नभ गोती॥१
नित मुख अनल विमल छोकत,
हरिदासन संग प्रेम उद्योती।
रिसकदास जनको प्रतिज्ञा,
हंसा मान सरे।वर गाती॥२

करें। श्री सर्वोत्तम रसपान । जाकी महिमा कहांली बरनी,

श्रीमुख करत बखान । अतिही करुणा मय आय कलिमें, किया पुष्टि जीवनको दान ॥ १

अर्घ निमिषकी बिलंब न करीये,

अब आइ सुख खान । एक एक अक्षरहे अधरामृत, ग्रप्त रीति ग्रण गान ॥

रसिकदास जनके रंग रंग्या,

सोइ भक्त निधान ॥ ४

सर्व वैष्णवेाने नमृता पूर्वक जणाववानुं के, श्री महलालजी महाराजनां पद दाखळ करवा माटे तैयार करेल, परंतु पुस्तकनुं कद विशेष वधी जवाथी अहीं दाखल करवानुं मुलतबी राख्युं छे. श्री बेट-द्वारकांना छप्पन भागना श्रील पण ळखी शक्या नशी ते माटे क्षमा याचना छे. हवे बीजा भागमां बाकीनां १०० शी १२५, पद इत्यादि तमाम साहित्य आपशुं. सम्पादक,

श्री गोकुलाधीशजी कृत श्री रासलीलाऽमृत.

वजत कुंजमें मंजु वांस्ररी व्रजवधू वंधी प्रेम रासरी; घर तनी गई कृष्ण पासरी, शरदचंद कीनो उजासरी. हरिकियो जबे मंद हासरी, निरखिके भया तापनासरी, मुमनकुंज राजे विकासरी. भ्रमर पुंज गुंजे सुवासरी. गुनभरी तिया रूप राक्षरी, पुन मवीन हे प्रेम गांसरी, अतनुमोद भाव पकासरी, मिल ग्रुपाल कीने विलासरी. मद गुमानही जान तासुरी, हृदयमें छिपे श्री निवासरी, विरह जात बाढा हुतासरी, तरू लतान पू छे उदासरी. सघन कुंजकीनी तळासरी, गुन कथा रचीयाही आसरी, भरत नैन ऊंचे उसासरी, करि कृपा मिले पीत बासरी. बदन कंज है चारु हांसरी मदन मान जातें निरासरी, कर ग्रहे जुरी आसपासरी, भरत अंक बाढो हुळासरी. अधर पान कीने हुं प्यासरी, मिटत नाहिं जैसें उपासरी, लिपट ब्याम सूं असी भासरी, घन सुदामिनी भादमासरी. करत कृष्ण के संग रासरी, सरस राग गार्वे खुलासरी, मुरज सप्तनीके नीकासरी, मुरज बीन बाजे मिटासरी. बजत मंजु मंजीर लासरी, नचत मार छांडें अवासरी, सुर विमान छाये अकासरी, परत पुष्प दृष्टि तहांसुरी. कटगई तबे गेइ फांसरी, इर गया जू संसार त्रासरी, चरनमांज दीजे निवासरी, सरन गोकुछाधीश दासरी.

॥ अय श्रोनाथजीनुं घेरळ ॥

ओरा आवानें श्रोनाथजी सुहामणा रे। तारी चटकती चालनां लउं भामणा रे॥ १ वारण वनमा गया ते ए ने जाईने रे। जेम लाजथी धनी ते धन खोईने रे ॥ नखरचंद्र चक्रचंद्रिकाविकासथी रे। क्षीणभाव पाम्या शशी उपहासथी रे॥ हस्तचरणकोमिलमा नें देखी द्रमतणा रे। पछव नम्रवद्न थयां लाजीनें घणा रे ॥ जेहर पायल ने वीछिया पगपाननी रे। साभा केतां न बने ते निरुपमाननी रे॥ ५ शोभा बनी तनीयानी घणी खेतनी रे। देखी धजा लजामजित मीनकेतनी रे ॥ 3 सूथन काछनीनी छबी छाई चित्तमा रे। मान मेली घणी दीन थई नित्त मारे॥ ७ ६ द्रघंटिकानूपुरनी सांभली घुनी रे । मेली समाधी विकल थया महामुनीरे ॥ ८ कटी जोईने लजाया माटा केसरी रे। नाभी जोई वापी जडतानें अंगीकरी रे ॥ ९ उद्रत्त्रीवलीनी सुषमानी उपमा नव मलेरे। विपुल वक्षस्थल मेलीनें रमा नव टले रे॥१० वाजू पेांची कडा सांकला हाथसांकला रे। हीरामुद्रीका ते कलानिधिनी कला रे॥ ११ कंबुकंठ कंठाभरण हांस त्रिवलनी रे। शोभा केतां बुद्धि घटी कवीप्रवलनी रे ॥ १२ कोस्तुभपदकनी पंक्ति नें रत्नशी बदी रे। गन मम्न थयूं ए तो शोभानी शदी रे ॥ १३ रत्ननिकर रचित भृषण तेज शुंकहूं रे। मिहरशीतरिमकांति तुल्य नव लहूं रे ॥१४ सामल अंग माती गुंज कुसुम मालिका रे। देखी मेघ इंद्रधन् वक थया फीका रे॥ देखी पीतांबर चंचला चंचला थई रे । गयां मानिनीना मान धीरज नव रइ रे ॥ १६

शोभा सदन विशद वदन कुमुद देखतां रे। कुमुद पातानी सुंद्रता नही लेखता रे ॥१७ नासा अधर शोभा शक्ति नधी भांखवा रे। जेम कीरवद् न बिंबफल चाख वा रे ॥ चंचल अरुण सजल नयनयुगल निरखतां रे। खंजन कमल मीन रह्यां खास वरखतां रे॥ जीती कामनी कमान कान तें खरी रे। कुटिलभुकुटी ना भंग नेहथी करी रे ॥ २० मकरकुंडलनी झलक कपोलफलकमा रे। मन अटकीरह्यं खीटलीयाली अलकमा रे वेसर मुक्तामणी लपन उपर एम लसे रे । चंद्र चुंबवाने तारा आवी आई वसे रे॥ २२ मंदहसन दशनशोभा तो घणी बनी रे। चिबुक विमल वज्रकांति तेहमा सनी रे॥२३ लड सीसफूल अलकावली बाँकनी रे। तिलकतणी शोभा घणी नगडाकनी रे ॥ २४

मेारमुगटनो लटक मनमा वसी रे 📭 शतचंद्रनी शोभानें जोई ते हसी रे॥ २५ खर्व गर्व थया वेणी जोई नागना रे। तेथी वास कीधा अधाभूमिभागना रे ॥ २६ वेणुरागथी सराग चित्तनें कीघूं रे। वेत्र धरी नेत्रयुग्मनें ते सुख दीघूं रे ॥ तारां वचनसुधा करणचषकमां भरी रे। चित्त तृप्त नथी थातृं पाननें करी रे ॥ २८ एवां राधा वचन सुणी हरी आवीया रे । कुंजकेली करी घणा मन भाविया रे ॥ २९ हलीमली कुंजपुंजथी सदन गयां रे । करी हास नें विलास बे मगन थयां रे ॥ ३० रप्तरूप एवा इयासने इयामा बेउ रे। एउनुं ध्यात धरे प्रेमथी निज जन सउ रे। दास मागे लीलानंद मने आपजाे रे। एज ध्यान हृदे स्थिर करी थापजा रे॥ ३२

अथ श्रीद्वारकाधीशतुं घे।छ.

वेनी चाळो जाइये द्वारकाना ईशने रे । चरणकसल उपर धरीये जइ सीसने रे॥ नखररत्निकरण भूषण थाहो एहने रे। सेवा करी सफल करीये आय देहने रे॥ विरहतापतप्तभक्तहृदयसद्मने रे। शीतल करवा धन्धुं हस्तमाहे पद्मने रे ॥ गदा सदा धरी दुष्टने विदारवा रे। पद्।क्रांतभक्तत्रिविधदुःख हारवा रे ॥ हृद्यतिमिरमिकर टालवाने प्रेमथी रे। हस्त सुदर्शन धर्य्यू छे चक्र नेमथी रे॥ दैवीजीववृंद्ंक अंक गंजवा रे। धऱ्या अंबुतत्व कंबु हस्तकंजमां रे ॥ देवा चार ते पुमर्थ मारगपुष्टिना रे। धन्या हस्त चार मेघ अभयवृष्टिना रे॥ ७ हस्त चरण नेत्र शोभा लेवा जलविपें रे । पद्मपुंज कंठमग्न तपे जनिमिषें रे॥

जानुजंघयुगल शोभा केता केम बने रे। चित्त विवश थइ शोभासुधामा सने रे॥ ९ चतुर्वदन जननसदननाभिन्हदतशी रे। शोभा कहूं एवीबुद्धि मारी शूं घणी रे। १० सिंगाररसतरंगिणीतरंगनीतती रे । सुंदर उदर त्रिवली छे एवी मारी मतीरे॥११ हृदयकमल ता गंभीर देखीने रमा रे । कांत वदन जावा वास कीधा जेहमा रे॥१६ एवुं इंद्र नीलविमल वक्षस्थल लसे रे । कंटें क(स्तुभम्णी करुणां कुरजेवा वसे रे।।१३ रयाम चुबुक विशद वज्र तो एवो कहूं रे। इंदीवर उपर बेठेाछे कवि द्युतिबहु रे ॥ १४ विद्रुमअधरकांति दंतपंक्ति तो धररे। दाडिमबीजउपमा पूरण तारें ते कर रे ॥१५ सुंदरनासापासे मुक्तामणी एम लखे रे। कीर हंसअसूयाथी मुक्ताने भखे रें॥

कृटिल निशित असित भ्रक्रटीना भंगनी रे। उपमा बनो मुख्यरसविपुलतरंगनी रे ॥ १७ विविधरत्नजिटतकीटमुकुटनी छटा रे। जांंगें चंद्रउपर कोटिमिहिरनी घटा रे ॥ १८ निजभक्तचित्तचंचला लपटीरइ रे। विमलपीतांबरनी शोभा तो एवी थइ रे।। १९ नानारत्नना आकल्प इयामल अंगमां रे। जाणे तारा लसे स्वच्छ अंबरसंगमां रे॥ २० एवा संदर बालकृष्णजीना लाडिला रे। देखी क्षीण थइ कलापतीनी कला रे॥ साथे राधा सदा यमुनाजीना रूपथी रे। थया बेओ एवा जाणे रसभूपती रे ॥ जीवनप्राण व्रजसंदरीना ए हरि रे। एनी चाल जोइ लजाया मोटा करी रे। २३ एनी सेवा करे सदा भक्तिभावथी र । श्रीपुरुषेात्तमजी नित्त नवा चावथी रे॥ २४

धन्य कांकरोली गाम तीर छे जेन रे। रायसागर घणु मिष्ट नीरछे तेनु रे ॥ 74 दास कहे मनें निज जाणीने तारजो रे मारा कोटि कोटि देाष तमे वारजो रे २६ ---(°)-अथ प्रवहनाश्रीवालकृष्णनीतुं घोळ आवो श्रीबालकृष्णजी ने जोइये रे भवना त्रिबिध ताप सरवे खोइये रे खेले यशोदाजीने अंके रे वालभावें छाया जोइ शंके रे अंग शोभा वधी वज पंके नंदरायना लाडिला लाल रे करे व्रजसुंदरीने निहाल रे निजभवत तणा प्रतिपाल 3 नेत्रकंजमां अंजन फेल्युं रे देखी मारूं थयुं मन घेळुं रे चितें भव आधीनें ठेलं

कुंचित कुंतल मुख उपर जाणे रे।	
इंदिवर पर मकरंदटाणे रे।	
आवी मधुप तेतृं सुख माणे॥	4
अलकावलि तिलक दीसे रूडा।	
उपमा देवा कवी थया कूडा ।	
एवा नंदरायना बाछुडा ॥	દ્
भ्रकुटीपासं अंजनबिंद रे।	
कामचापपासे शूं मिलिंद रे ।	
मारा चित्तने आनंदकंद ॥	૭
तीखी पातली इयाम नासातणी रे।	
होाभा झाझी करेछे मुक्तामणी रे।	
देखी फिकी थइ उपमा घणी॥	<
ओष्ट विद्वमजेवा लाल रे ।	
स्रवे मुक्तामणीबिंदु लाल रे ।	
रसर्तियुतणी ए नाल ॥	९
नाहांना दंत वे ता कुंदनी कली।	
तेमां अधर लाउकांति मली।	
एनो शोभा केवा काण बली॥	१०
32	

करकंजथी अंजन चालीकरी।	
गोल वे ने चिबुक लीधा भरी।	
मारी आंखो जोइने ठरी ॥	११
अमकी नाका ने करनफूल रे।	
उपर मातीनी लंड वे अमूल रे।	
देखी कविमती थइ डूल ॥	१३
कंबुकंठे मेातीनो माला रे ।	
वक्ष स्थल स्थाम उडुगणशाला ।	
एवा हरी लागे घणा मर्ने वाला	॥ १३
स्वल्पउद्रनाभीनी शोभा भारी ।	
उपमा केतां कवीनी बुधी हारी।	
हुं देखीदेखी जाउं बलीहारी॥	१४
नानी कटिमां किंकिणी कनकतणी।	
मणिमय सुंदर वागे घणी।	
सुणि किलके बाल शिरोमणा॥	१५
कोमल जंघजानुथी रिंगण करे।	
रत्नरचित अजिर नंदजी घरे।	
देखी यज्ञीदाजीनां नेत्र हरे ॥	१६

पद पंकजमां कलधोततणां।	
मणिमय नूपुर वागे घणां।	
ए शोभा देखी लउं भामणां।	१७
नखचंद्रछटा फेली घणी।	
तेथी फीका थया रजनीमणी।	
एनी उपमा जाती नथी भणी॥	१८
हस्तपादमां काजलबिंदु केहेवा।	
इंदीवरमरंदरत भ्रमर जेवा ।	
दृष्टिदेाष नाशक तेकेहेवा ॥	80
दक्षिण हस्तमा माखणना लोंदा ।	
इंदीवरपर जाणे वेठा चंदा ।	
देखी मनना ताप थाय मंदा ॥	२०
वामकरकुवलय क्षितिपर करी।	
तेने अभय आपे ते आनंद हरि।	
जेथी गावर्धन लीघा घरी ॥	२१
नानारत्न भुषणनी शोभा भारी।	
एनी उपमा केतां ते। बुद्धी हारी।	
एवी शोभा जाेड जाउं वारी ॥	२२

मेली अंगुठा मुखमा धावेरे ।	
माता रमकडां लइने खेलावे रे ।	
पलनामां सुखथी झुलावे ॥	२३
करे तोतली मुखथी वात रे।	
सांभलीने हरखे तात रे।	
विलहारी जाय मात ॥	२४
लइ मिसरी माखणथी सठावे रे।	
आंगलीथी लालने चटावे रे।	
चित्तताप माता हटावे ॥	२५
गोकुलउत्सवदानउदार रे।	
एनी शोभा देखी लाजे मार रे।	
ए श्रीनंदराजकुमार ॥	२६
एवा नवनीतिश्रय बालरूप रे ।	
एनी सेवा करे भक्तिना भूप रे।	
श्री गावर्द्धनजी अनूप ॥	२७
वालकृष्णरूपथी गिरींद्र रे।	
सदा सेवे भक्तिमहेंद्र रे।	
एनूंध्यान धरेछे मुनींद्र ॥	२८

त्रज यमुनाजी गिरीराज रे। पासे सुरभीकुंडना साज रे। ज्यां जीवनां सरीयां काज ॥ २९ त्याँ आपजो मुजने वाहा रे। ए छे मारा मनमां आस रे। छउं चरणकमलने। दास ॥ 30 करुणानिधि मारा प्रभु एवा रे । सदा आपी मने चरणनी सेवा रे। नित निजलीलानूं सुख लेवा ॥ ॥ अथ श्रीदानकीलानुं घेाळ ॥ श्रीराधाजी मणिमयमदुकीमां महिमांखण लई चाल्यां। सांकडी खारमा श्रीनंदनंदनजीयें जातां सरवेनें भाल्यां ॥ साथे साहिये साहेलीया सउ सरखी। महि वेचवांने नीसऱ्यां मन हरखी।

एउनी गुप्त चतुराइ सके कोण परखी ॥ २

करकमल मद्रकोउपर करी ॥ एककरथी सखीना एक कर धरी॥ चाल्यां मंथर लजाया तेथी माटा करी ॥ ३ श्रीराधाजीने साथे श्रीवंद्रावली ॥ ललीताजीति विशाखाजीनी जाडी मली॥ तेम बीजीया सखीया चाली हलीमली॥ हसी वाते। परस्पर करे आली। गुप्त सुख दीधां जेह जेह श्रीवनमाली। नेत्रथो सूचवीनें कर दइ ताछी ॥ वय रूप शील गुण छे एवा। रति केटिकेटि लाजे जेवा। श्रीऋष्णनूं मन हरीलेय तेवा ॥ ξ केशिमषथी द्वीद्ल रस जाणे वसे । सिंद्रर वचे स्थायी अनुरोग लसे । तेमां फूल गूंथ्यां हासरसजेवां विलसे ॥ सीस मातीनी लड जाणे तारा आवली। सीसफूल टीको जाणे चंद्र रह्या वे मली। टीकी पासे रोहिणी जेवी दीसे छे भली। ८

वक्र भ्रकुटीवचे अंजननी बिंदी ।	
स्मरचापवचे छे जाणी मिलिंदी ।	
नंदनंदनमननी ए छे फंदी ॥	۹,
आंख कमलजेवी ने घणी अणीयाली ।	
मांय काजलनी झीणी रेख काली।	
टलती नथी प्रियनां मनथी टाली ॥	४०
नासा शुकमुख पण गौर छे एथी।	
मुक्तामणीनी कांति फेली छे जेथी।	
मनमांशीतलता थाय छे तेथी ॥	१२
उपमा नवनीत फूलगुलाब केरी।	
मृदुपाटलकपालनी नथी ठेहेरी।	
एनी मृदुता शोभा छे तेथी घेरी ॥	१२
मृदु लाल प्रवालजेवा अधर अने ॥	
कुंददंतवचे मिसीरेख सने ।	
तेथी हास्यनी अधिक शोभा बने॥	१३
हडपचीये कपालमा तिल जाणे	
लेलंब कमलना मरंद माणे	
अथवा इयाम मग्न थया ते ठेकाणे	કંક

श्रवणे ताटंक रविशोभा भरे। मुखकमलतणा ते विकास करे। तेथी कुटिल अलक अलिकुल विचरे ॥ वीडीरस अधरें अनुराग जाणे। मनथी उमगी आव्या ते टाणे। श्रीऋष्णनृं श्रीमुख देखाणे ॥ १६ श्रीमुखपासें अलकनी सुषुमा घणो। इंद्सुधापानरत बे शूं नागणी। एउनो वेणी शोभे वासुकी फणी॥ 80 कंठसुंदरदरमां मुक्तावली । जलजत्वसंबंधथी शूंआवीमली। एनी सुंदरता एवी थइ छे भली॥ 36 वक्षोज लसे बे मुकाना हारें। करी कुंभथकी शूं मुक्ता तारें। निकल्या शूं प्रियकरने भारें॥ १९ क्र्या उदर गंभीर नाभी रूडी घणी। लाज्या द्वीपी तनिमा देखी **मध्यत**णी। जेने जाइ ललचे गापशिरोमणी ॥ २० मृद्ध पोन गौर देखी जुगजंघ। घणी लजाथी नम्र कदलीसंघ। जेने देखी माह्या श्रीलिलतत्रिभंग ॥ 2.8 पद <mark>सरसिजमां नखवसु तारे ।</mark> वसुमतीने करेछे वसुमति भारे। तेउनी कांति देखी हिमकर पण हारे॥ पदतल बहु मार्दवतो लव। **थारण करे** द्वमनवपस्नव । जेने सेवे सदा व्रजवधूपछव ॥ २३ अणवट विछीया पगपान वली। पायल नूपुर ने जेहर मली। करे मंजुल सिंजित गली गली ॥ રઇ लाल लेंगा नितंबर्बिब शोभा करे। घेरदार किनारीनी चमक धरे। हीरानी झाबी जाणे त्रियमन संचरे ॥ ते ऊपर वागे कंचन किकीणी। तेमां प्रथित मुक्ता लाल लीला मणी। देखो तेने रीझे रसिक मुकुटमणा॥ २६

चाली साधे भीनी अरगजीरंगें।	
३योममगजी किनारी सोमे संगे।	
रची पाताने हाथे जाणे अनंगे॥	२७
विसकोमल भुज कंचनव्रतति ।	
आभूषण जाणे सुमगुच्छतती।	
जेमा लाभाया कृष्णमन मधुपपति ॥	२८
हीरा वाजू मोतीनी बेरखी रूडी।	
हीरापिछेली छंद बंद चांगठजाडी।	
कडां पेांची वचे वचे इयाम काचनी चूडी	२०.
हाथने लटके आकल्प वागे ।	
हाथसांकला हीरानां मनोहर लागे।	
निरखीनिरखी प्रिय अनुरागे ॥	30
करसरसिज सुकुमार स्निग्ध लाल ।	
वरो तेमां सदा श्रीनंदलाल ।	
तेथी लोकवंद्य ए व्रजबाल ॥	३ १
पाटल आँगलीपर नखनी छटा।	
विद्रुमपर जाणे सीतकरनी घटा ।	
मुद्रिका जाणे प्रिय मन लटापटा ॥	३२

साडी इयाम किनारी गाखरूदार। सलमां कटेारी वचे तारा सार। छेडे कलगानी पातनी छे घणी बाहार ॥ ३३ एवा सालसिंगार सजीनें नागरी। प्रिय मलवानी मन आसा भरी। 🦈 त्यारे खारसाकडीनी वाट धरी॥ 38 त्यारे उठया सखीयाने आव्यां जाणी। आडा उभा नंदनंदन दाणी। त्यारे राधाजी बेाल्यां घणी प्रियवाणी ॥ ३५ तू काण छे मने रोके इयासारूं। ए जाणवाने मन घणूं छे मारूं अनीतीमां मन दोसेछे तारुं॥ 38 त्यारे स्मितयुत मुख वाल्या श्रीकृष्ण छे गारस पीवा मन मारुं सतृष्ण मन ताप मटया सांभली तारो प्रइन 30 छे गारस पीवानी अभिलोसा ता पात्र रचेा पत्र लइ खासा त्यारे मटशे ए तमारी पिपासा 36

नहि परिमित गारस पीवावाला	
पान करी भाजन देशूं ठाला	
करशो शूं अमारुं तमे छओ बाला	₹°.
छे। केाणने तारो केानछे तात	
वल केनु छे काण तारी मात	
एवी मुखथी करे छे ओछी वात	20
छउं कृष्ण नंदजी मारा तात	
माता जसोदाजी बलराम श्रात	
मारा वलथी करुंहुं एवी वात	88
व्रजराजकुमार थई दान माँगे	
तेथी तारा रें कुलने लाज लागे	
ए तो दानलेवूं द्विजने भागे	પ્રવ
तेथी युक्त एवूंछे मारे आज	
मृलपुरुष अमारा छे द्वीजराज	
तारां वचने सरीयां मारां काज	83
सुणी राधा हसी बोल्यां तेवारें	
कलंकनी लाज नथी तारे	
पण लेाकलाज छे घणि मारे	88

तेथी आडाेथी खसीजा काला कान नंदजीनुं छे घणूं माटूं थान राखंछं तेथी हूं झाझूं मान, યુષ राखदोा जो मान ते। हं मनावीश पण शूं अपराध जे करशो रीश स्मित करीने बाल्या एम जगदीश ४६ तारे हसी लजानम्र थयां राधाराणी चंद्रावली बेाल्यां स्वारे भृकुटी ताणी तुने कीधा काणे छे गोरसदाणी 8/0 गारसनूं दान देवावाला तमे सदा सुंखधी लेवा वाला अमे एवी रूखी वात केता तमने केम गर्मे ॥ ४८ मुणी चंद्रावली सस्मित रह्यां छानां। ललिताजी बेाल्यां स्वारे घणां दानां। लाल एवं शूं बाेला छे। छओ नाहनां ॥ नाहनाछइये अमे छओ तमे माटा। क्षमा करो यद्पि अमे छइये खाटा। पण रसदानमा छे शूं तमारे टोटा।

रस समय वना आपीयें केम। स्थाने आपवाना छे अमारे नेम। वेचवानूं शुं आपीये मूलविना एम ॥ 48 स्थाने आपवानूं छे तमारे नेम। मारे लेवूं मनमां जारे आवे प्रेम । एनूं मूल आपीये कहो तेहेम॥ पुर गोरसनूं मूल हेम काणमात्र। गारस पीये थाय जे सेवा पात्र। आग्यावश थाय परवश करे गान्न । 43 ए वात अमारे कांइ नथी हलकी। पण तमे एम बोलाेेे केम छलकी। मारुं लकुटी गारस जारो ढलकी ॥ પ્ય त्यारे बेाल्यां विशाखा विशालमती। एवी छोकरबुध अड नथी गमती। राखा सुरत तमे काई वजना पती ॥ 44 राख्नं सुरत ए तो गमती वात। राखी सुरत तारे आज लाग्यां हात। हवे गारस पीयूं केम लड़ पात ॥ પદ

गोरसन् योग्य पात्र पह्नव छे। तेमां पण जात ए बहुव छे। एने आगल सरवे संपह्नव छे॥ 40 लजानम्र थया त्यारे लाचन । अनुराग वध्या विसाखा मंन। स्मितयुत मुख थयां सर्वे सखीजन ॥ लाल बाल्या हवे कां करोछा वार। दान गोरसनूं आपवूं निरधार। त्रणो तमारे मस्तक छे भार ॥ **'**४९ र।धाजी बेाल्यां लालचु थया शुं लाल । गोरस घणुं पाइशुं आवीने काल। उतावलमां तमे थशो शूं निहाल ॥ દ૦ हाथ आव्या मालनुं दाण मेले काण। वातमां घणुं नाखाछो शु मोण। दाणमेली मारी वात हूं करुं शूं पोण ॥ हवे दाण आपो तेां सुख घणु वसहो । दान लीधाविना दाणी आय नइं ससदो । वढवाड थही दुर्जनलेक हसही ॥

ए सुणी लालना अभिलाष जाणी । मन चतुराइ रची राधाराणी। सखीजनथी बेाल्यां मधुरी वाणी ॥ **£3** दाणी थाये छे अडीयल निरधार । दिध वेचवाने घणी थायछे वार। तमे जाओ अमे समजीलइशं चार ॥ ६४ स्निग्धसावीजन सुणी मन हरेखभरी। चाल्यां लटकेथी निजमारग धरी। फऱ्या आडा लकुटी हाथ लइ हरी॥ ६५ सखीजन घणां पातें एक शौरी। रोकी केम सके तारे बेाल्या फरी। रोका रोको ग्वाल राखा मटुकी धरी ॥ 35 आव्या ग्वालते सांकडीखाल ने बार। रोक्यां रह्यां नइ जोरावर वजनी नार। पाछल आव्या ग्वाल बाल हजार ॥ तारे एकला इयाम राधा ने सली। चंद्रावली ललित विशाखा मुखी। कीधा विविध विहार रस विविध चली॥ ६

द्धिभाजन लइ करकमलविसे। खाये नाचे ने मंदमंद हसे । ग्वाल बाल बे। लाजा उच्चस्वर ने वसे ॥ ६९ हरी मुख द्धि लाग्यूं देखो तारे ग्वालबाउनूं मन हरस्यूं भारे दिध तेउने आप्युं प्रभु तेबारे 90 ते देखी बलीमुख आव्या पास देखी सरवेने घणो आव्यो हास। दधी दइ प्रभु पूरी तेओनी आश।। 98 मारमुकुट भूषण सूथन काछनी। पीतांबर मुरलीनी शोभावनी । ऐवी शोभासुधामां मारी द्रष्टी सनी॥ ७२ एवा गोरसरसिया श्री नंदनंद। सदा रासरसिक श्री गोकुलचंद । ए प्रभु मारा मनना आनंदकंद ॥ ७३ श्री यमुना वृंदावन गिरिराज। श्री गोक्कल नित्यलीलाना साज। प्रभु त्याँ अविचल करजो राज ॥ 98 33

श्री गोवर्छन पदरज दास ।

मागूं गोकुलोत्सवदानदक्षपास ।

नित्यलीलामां मने देजो वास ॥ ७५

मारा जीवन धन बालकृष्णलाल ।

माग्यूं आपीने मनें कीधो निहाल ।

छे सदा ए मारा प्रतिपाल ॥ ७६

नंदेंद्रंकेंद्रविक्रमवर्ष ।

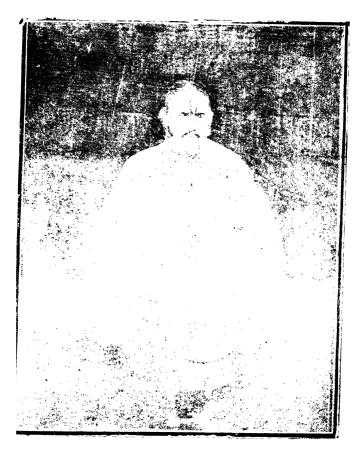
मास जेष्टकृष्णमाहेंमिति दर्श ।

श्रील पूर्ण थयूं मन वध्यो हर्ष ॥ ७७

क्रमशः



श्रीशुद्धाद्वैत भक्ति प्रवर्त्तक सस्ती यंथमाळा.



श्री कर्ने यालालजी मा. श्रावण वद ८

श्री जसादा बेटीजी (निजजन),

वेटीजी महाराज बाल्यावस्थाथीज श्री.......नी सेवा करवामां चतुर शिरोमणी हतां. बधी अवस्था से-वामांज व्यतित करी छे. सेवाना अनवसरमां विमये।ग-मां भगदावेशयुक्त रहेतां हतां अर्थात् पे।ताने विभये।ग सिद्ध थया हतो ते तेओश्रीनां रचेळां विरहनां, दाननां माननां विगरे विषये।नां किर्त्तनो वांचीने विचारेथी स्पष्ट मालुम पढे छे के पे।ताने विरहनुं दान थयुं हतुं. आटलं छतां पण आपनामां नमृता अने विनयना भंडार भरपुर हता. वडीले।नी मान मर्यादा साचववी ए ते। शिखानेज भूतळपर मगट्यां छे एम सर्वने थतुं.

उत्तरावस्थामां पाते दृद्ध है। वा छतां पातानी अंतावस्था पर्यत उत्सवाने दिवसे अने आखा इतिकाळमां मातःकाळे वेहेलां जाग ने श्री.......नी सेवामां
तत्पर थतां, ते आखा दहाडा सेवामांज रोकातां हतां.
ते एटले सुधी के भाजनना समय थया हाय छतां तेनी
दरकार न करतां अने भाजन पण स्वल्प करतां. रात्रिन।
स्विक्य वैष्णवा पासे भगवद् वार्ता वांचतां अने एकांतमां प्रभु गुणगान करतां त्यारे विविध राग रागणीमां
याळ पद वनावतां,

कालक्रमे श्रीमद् गास्वामी श्रीमगनलाळजी महा-राजश्रीए लीला विस्तारी अने त्यारपछी थोडेज समये लालवावाश्रीने बाल्यावस्थामांज छोडीने श्रीवहुजी म-हाराज (लालबावाश्रीनां मातुश्री) पण लीलामां पथायी. ए दिलगीरी भरेलो समय सांभळी पाटणवाळा श्रीमाजी महाराजे सुरत पथारीने सभ्य वैष्णव ग्रहस्थानी मंडळी नीमीने मोटा महोत्सव साथे छालबावाश्रीने श्रीजसोदा बेटीजोनी सत्ता निचे सोंप्या. परंतु आ व्यवस्था केट-लाएक स्वार्थी अने विष्नसंतापीओने मसन्न नहीं पड-वाथी तेओए मंदीरमां एक बीजाने उंधुंचतुं समजावी माहोमांहे लडाव्या अने कुसंप उत्पन्न कीया ते एटखे स्थी के मोटुं मंदिर जे आनंदभुवन हतुं ते रणभूमिवत

वनी रहां हतुं. ए कटाकशीने समये पण श्रीजसीदा बेटीजी महाराजे पोताना गंभीर अने सहनशीखताना उत्तम गुणे करीने थतां अने आवी पडतां सर्व विघ्नाने पश्रुए जेम दावानळनं पान कीधं इतुं तदनुसार सहन कीथां. ए दरम्यान सारे भाग्ये केटलाक हितेच्छुओने श्रीठाकोरणीए सारी बुद्धि मेरी के तेओए डिस्टीकट सिविल के।र्टना हाथमां ए काम सोप्युं जेथी तेमनी तरफथी एक मेनेजर मंदीरना वहीवट श्रीजसाहा बेटीजी नी सलाह छड़ने चलाववाने निम्या. एटले फरीथी पूर्व-वत् मंदीर सुव्यवस्थित वन्युं, क्रमेक्रमे कोर्टनो अभिषाय श्री बेटीजी माटे उंचा प्रकारनो बंधायो एटले श्रीलाल-वावानां जातनां वाली तथा मंदीरना धर्म संबंधी सर्व कामनां वहीवटदार नीम्या. त्यारथी आप श्रीलालवावाने पधरावीने अनेकानेक पदेशोमां फरीने मंदीरनी उपर जे अतिघणुं करज इतुं तेमांथी अथाग महेनते मंदीरने रुण मुक्त कीधुं. अने उमर लायक थतां विद्याभ्यास अने सेवाक्रम शिखव्यो अने सात वर्षनी अवस्थाए श्रो लक्ष्मणबाळाजी पधरावी जइ त्यां चाळ संस्कार कराव्यो अने तुरतज सुरत पधारी यज्ञोपवीत संस्कार मोटा स्मारंभथी कयों अने श्री लालबाबाने पधरावीने श्री नाथजीनी यात्रा करावी श्री नाथजीनां चरणस्पर्ध करावी घणाज आनंद साथे सुरत पधराच्या.

त्यारबाद इंक समयमांज पोनाना स्वसुर पक्षना म्थावर-जंगम मिछकतना मालिक श्रीमद् गोस्वामी श्री व्रजरत्नलालजी महाराज (लाखबावा) थाय एवं विल करी आपवानी पोताना पतिनी जीज्ञासा जाइ ते प्रमाणे थवाने पोते संगति आपीने विछ कराच्युं, त्यारबाद नेमना स्वामीए देह छोडी एटले पोतानी खानगी मीलकत पण महाराजश्रीने सुपत करी दीधी अने मंदीरना वहीवटनो तमाम वंदेावस्त करी पोते निष्टति परायण थइ गयां अने मभ्र भजन करतां करतां संवत् १९६४ ना आपाड बदी ९ ने दिवस रात्रिना पहेछे पोहोरे पोतानुं जे स्वरूप तेमां पोते **अैक्यता करी अर्थात छी**ळा विस्ताया आपनुं संपूर्ण चरित्र छखवामां आ**वे** तो एक स्वतंत्र ग्रंथ बने, परंतु स्थानाभावथी अहीं दीग्-दर्शन मात्र कराव्यं छे

आपे अनेक राग-रागणीमां विविध धोळ, पद, ख्याळ, कीर्त्तन, रेखता, दुमरी, छावणी, कवित, गजल इत्यादीनी रचना करी छे.

श्री जमुनाजीनां प्राकटयनां चार घोळ जे आहे रच्यां छे जेमां एटलो बधो गृद अर्थ समायलो छे के सर्व साधारण जीवो तेनो मुख्य हेतु श्रो छे, ते समज-वाने अश्चत छे. तेमज पूर्वापर तपासतां आज पर्यतमां श्री जम्रुनाजीना पाकटय विषे आवी स्पष्ट समज सहित समजाय एवं गद्य पद्मात्मक कोइ तरफथी वहार पडयुं जाणवामां नथी, जेथी सिद्ध थाय छे के पाते श्री जम्र-नाजीनांज स्वरुपांश इतां, तेथी पोतानुं स्वरुप शुं छे तेनु आप सिवाय अन्यथी विवेचन था शकतुं दुर्रुभ छे. पस्तुत् धोळ आ निचे आपवामां आव्यां छे ते वांचवाथी अने भाव सहीत विचारवाथी सर्व वैष्णवोने तेनी मतीत थरो. सिवाय उपर कह्या मुजव पाते पोतानी स्थितीमां जे रचना करी छे. अने ते सर्वे निजजन ए छापथी प्रसिद्ध छे. तेनो पण मोटा संग्रह छे जे बधां अहीं स्थानाभावने लीधे आपी शकाय तेम न होवाथी नम्रना तरीके थोडीक कविता आ निचे आपवामां आवे छे. तेथी वैष्णवोने संतीप मानवा नम्र विनति छे. वाकीनी काव्य आ पुस्तकना बीजा भागमां आपवा इच्छा छे. ते भगवदीओनी कृपाथी पशु पूर्ण करे ए भावनः साथे विरम्नं छं. अस्तु०

मंगलाचरणतुं धोळ राग— मारा रे स्वामी बोलोनी व्हाला-ए रागमां दासजाणी आश पुरण करजो. सदारे मारू चित्त प्रेमे भरजो. दासजाणी १. आश मुख्य माटी छे मनमां, द्रीन उत्कंठा थाय तनमां, दास जाणी. २. प्रथम श्री वहःभ पद वंदु, श्री विद्वलेश छे जन सुख कंदु. दासजाणी ३. दासी ब्रज भक्त तणी जागो, आपनुं ते ध्यान हृदय आणो. दासजागी ४. वंदन हुं करुं छूं भानुं तनया, कलिंदगिरि नंदनी धन धन्या. दासजाणी. ५. आप रुप मेघइयाम रंगे, भक्तने संभारे। इयोम अंगे. दास जापी. ६ वंदन हूं करु हरिदासराइ, ए तो गिरि इयामने सुखदाइ. दास जाणी७ वंदन करू राधाजी रंग भीना, कीथा त्रिभुवन पित आधिना. दास जाणी ८. वंदुं अष्ट सखी मुख्य अधिकारी, ते तो इयामा प्यारीने अति प्यारी दास. ९. वंदन करु अष्ट सखा संगे, गाय रस लीला ते उमंगे. दास जाणी १०.

वंदन हुं करुं व्रज चार्याशी, जेथी रे जाय जन्म मरण फांसी. दांस. वंदन करं वैष्णव चार्याशी, निर्गुण पथ अंगना सुखराशी, दासजाणी. १२ वंदुं बसे। बावन श्री प्रभुना, लीधारे सेवक शरणे त्रण गुणना, दास. १३ वंदुं वंदुं काटि काटि वंदना, चरण रज दीजे लक्ष्मण नंदना. दास. १४ करुणामय कांति छे समदृष्टि, कीधीरे दास दासीने रस वृष्टि. दास. १५ हुं छूं लोभ-कोध युक्त कामी, कृति नव जोशो वछभ स्वामी. दास. १६ देाष बळवंत सुशक्य माहारा, गणती करतां आवे नहीं पारा, दास, १७ लेखुं करतां श्रम झाझो थारो, यहीं बांहे छोड़ा ते। प्राण जाहो. दास. १८ साधन मुने बीजुं ते नहिं भासे. कृपाबळ मात्र पाप नासे. दास जाणी. १९

तुच्छमति मुखथी शुं कहुं कथी, क्रया आप करेा कांइ दूर नथी. दास. २० प्रगट निःसाधनने दान करता. सदा निजजनमां ते रस भरता. दास. २१

----o:[c]:o-----

कवित.

राते न सातें मद माते उनीदे हग,
जागे चार जाम वर कैं।न वह अंगना;
जाके रस पागे लाल सांची किनकहु रसाल,
सोइ मन मेरे बसी ताके संग जंगना.
सकुची बिहाइ मन कपट नसाय इयाम,
रामकी सें। सुधे भाय गहिकें उमंगना;
मा तें दुरावे। पर वंदन लग्ये। हे भाल,
निजजन बीन गुन नख लग्ये। कंगना. १

(?)

आज देाउ अषाडनमें गुलाबी मनारथ भया, गुलाबी वगीचामें साज सजवाया हे; गुलाबी खंभ चार गुलाबी कमान मढी, गुलाबी सुखद होदें जलसों भरवाये हें. गुलाब फुल मंडली सुंदर खसखानेकी; ताही मध्य बाळकृष्णलाल पधराए हें, गुलाब रंग आरति उतारे श्री मगनलाल. न्यांछावर करी निजजन हरखाए हें.

(3)

श्री बालकृष्णलाल रस रुप अति सूंदरकों, निरख निरखकें अतिहीं हरखाना है; गुलाबी टिपारें। भाल तिलक अलकावली. गुगरारी अलके नेन रस बरखानो है, गुलाब रंग पालनेमें झूलत झूकत आज, चंद्रिकाके आसपास कतरा सरखानो है; गुलाबी सिंगार ओर गुलाबी है फुलमाल, निजजन जय जय शब्द दरखाना है. ३

----:(o):----

श्री जम्रुनांजीनी गरवी.

श्री गोकुळचंद्र रमन मन हरणी. हेरी श्री जमने महाराणीरे; इयाम सुंदर संग सांवरी विलरात, संदर रित रस दानी रे. श्री गोकुळ. टेक. उर पर इयाम अलक लट साहे, मन हरणी सकुमारी रे; भृकटी कमान अलक घुघरारी, पेहेरे कसुंबल सारी रे. श्री. गोकुळ १ ग्रंथी हे बेनी मांग सवांरी, अर्घ चंद्र सुखकारी रे; जीव जीवी छेल कड़ी कलंगी. विंदीसींका भारी रे. श्री गोकुळ. २ करन फूल लड सोहत बेनी, शीश फूल छिब न्यारी रे; मेव स्याम देानु जुगल मनाहर, कांति किरन उजीआरी रे. श्री गोकुळ. ३

तिनमनी हार हमेल सतलरी, पीत कंचुकी घाडी रे; कमल माल कमल कर लीना, शत गुन शोभा बाढी रे. श्री गोकुळ. ४ कर चूरी गजरा कंगन मेहेदी, मुंदडी बंद पीछेली रे; पोंहोंची हस्त फूल कर झलके, मोहे सकल सहेली रे. श्री गोकुळ. ५ वांहे बजाठा बेहेरखी सवांरी, लूम लटकन पर वारी रे; कटि किंकणी फोंदा लेंघा, माती लरी बलदारी रे. 🦠 श्री गोकुळ. ६ जुगल चरणमें महोवर रंजीत, नख छिब चंद्र उजारी रे. नेपुर पायल अणबट बिछिया, गज गवनी पर बिलहारी रे, श्री गाकुळ. ७ नकवेसर गजमाती ललकें, चिबुक अधर परवाली रे;

मृगनेनी अंजन आड बिराजत, सुंदर पाटि ढाळी रे. श्री गाकुळ. ८ खेवत नाव पुलिन मध्य धारा, संग सिख सब सकुमारी रे; कमल फिरावत मधुप गुंजारत, फल फूल द्रुमनकी झारी रे. श्री गाकुळ. ९ परम गंभीर सिंधु शीतछता, अति चंचल सुख देनी रे; भक्ति मुक्ति करि देत अभयता, चढावे वैकूंठनी श्रेणी रे. श्री गाळकु. १० शुक पीक मोर नचावत भावत, संग पिया दिन रेनी रे; पद अंबुज रस रुप माधुरी, पाप काटनी छेनी रे. श्री गाेकुळ. ११ करत कृपा निजजनकों पूरन, सकल सिद्ध करी लेनी रे; निशदिन केली करत श्री वृंदावन, संदर स्याम रीझेनीरे. श्री गांकुळ. १२

रासनुं पद-राग भैरवी.

देखा नागरी निरतत नटवर संग, नटवर संग लजावत अनंग, नागरी टेक. सब ग्रन सागर रुपकी आगर. गावत गीत सुछंद रंग. नागरी नि० १ लेंघा पीत कसंबी सारी, नील कंचुकी जर उतंग. नागरी नि० २ नेनन खंजन मीन रहे थक, मेन कमान भृकृटी भ्रुव भंग. नागरी नि. ३ मदन मेाहन पिये बस कर लीने, शोभा सिंधु तरंग अंग. नागरी नि० ४ निजजन प्रभु प्यारी मुख निरखत, चंद्र थक्ये। खग माग उमंग. नागरि नि. ५

क्रमशः

पुष्टिमार्गीय शिक्षामृत. दरेके दरेक वैष्णवोए अवश्य मनन करवा येाग्य छे. नोछावर ०-२-० पेष्टेज ०-०-६ छटक मगावनारे पेष्टिना स्टांप वीडवा.

श्री व्रजात्सवजी (व्रजजन)

आपे व्रजभाषा अने गुजराती भाषामां घणाज थे। छ, कीर्त्तन इत्यादि बनाव्यां छे. तेमां पण श्री गाब-र्द्धन छीलामां गवातुं कीर्त्तन (गाद बेठे गोपाल कहत व्रजराजसों) एटलुं बधुं पसिद्ध छे के दरेक वैष्णवोने कंटस्थ जेवुं थइ रहुं छे,

अमे।ए अहीं आपनां थोडां पद-कीर्त्तन नम्रुना दाखळ लीघां छे. श्री यमुनांजीनां पद-राग रामककी.

यमुना यमुना नाम भजा।
हरिनश करो आराधन इनको,
ओर को पंथ तजा।
दे हें सकल पदारथ तुमकों,
इनको नाम रजा।
वजपितकी अतिही पियारी,
ताते सकल शृंगार सजा।। १

(?)

निरखतिह मन अति आनंद भया,
देख प्रभात प्रभाकर कन्या।
जल परसतिही सकल अघ भाजे,
ज्यां हिर देख हिरनकी सैन्या॥
ओर जीवकों ओरनकी गति,
मेरी गति तो तुमहिं अनन्या।
वजपतिकी तुम अतिही पियारी,
तुम संगमते जान्हवी धन्या॥ २

(3)

यमुनासी नहीं कोइ दुःख हरनी। जाके स्नान ते मिटत हें पाप, होत हें आनंद सुख कीजु करनी ॥ महिमा अगाध अपार इनके गुण, वेद पुराणन वरणी। कहत व्रजपति तुम सबनको समुजाय, छुटे यम डर जा आवे इनके सरणी॥ जयित भानु तनया, चरण युगल वंदे । जयति व्रजराज नंद प्रिये सर्वश देत, आनंद ज्युं शरद चंदे ॥ जयित सकल सुखकारिणी कृष्णमन हारिणी, श्री गाकुल निकट बहुत मंदे। जाके तट निकट हरिरास मंडल रच्या,

तहां नृत्य ताता थेइ थंदे ॥ जयित कलिंदगिरि नंदिनी दत आनंदनी, भक्तके हरत सब दुःखद्वंदे । चितमें ध्यानधर मुदित व्रजपित कहें, जयित यमुने जयित नंद नंदे॥ ४ (५)

जगतमें यमुनाजी परम क्रुपाल । विनती करत तुरत सुनलीनी, भये मापें दयाल । जा कोउ मजन करत निरंतर,

तातें डरपत हें यमकाल । व्रजपतिकी अति प्यारी कार्लिदी,

सुमरत होत निहाल॥ ५ (६)

पियसंग रंगभर कर विलासे ।
सुरत रस सिंधुमें अतिही हरिषत भइ,
कमल ज्यां फूलतें रिव प्रकाशे ॥
तनतें मनतें प्राणतें सर्वदा करत है,
हिरसंग मृदुल हाशे।
कहत ब्रजपित तुम सबनसां समुजाय,
मिटे यम त्रास इनहिं उपासे ॥ ६

पवित्रातुं पद-राग सारंग.

पवित्रां पहेरावत श्री विद्वलनाथ । सुंदर सुभग पाटके रचे हे, सातो बालक साथ॥ श्री गिरिधर गाेविंद गाेद भरे,

गाकुलेश रघुनाथ।

श्री यदुनाथ-घनइयाम बालक्रुष्ण, लीये पवित्रां हाथ ॥ २

भिन्नभिन्न पहेराय भेटधर,

दिये चरण पर माथ।

मिश्री भागधर वारत तन मन,

वृजजन गावत गुणगाथ ॥ ३

श्री लब्ब्ताजीनी वधाइनु पद-राग सारंग आज सखि शारदा कन्या जाइ। भादेां सुदि षष्टी हे शुभदिन,

---c:[c]:c----

शुभ नक्षत्र वर आइ ॥ १

भेरी मृदंग दुंदुभी वाजत,

नंद कुंवर सुखदाइ।

गापिजन प्रफुछित भइ गावत, मंगल गीत वधाइ॥ २ नाम करनको गर्ग पराशर. गौतम वेद पढाइ। दीने दान पिता विशोक जु, नारद बीन बजाइ ॥ ३ आभुषन पाटंबर बहु विध, गा भूदान कराइ। नंदराय वृषभानराय मिलि. विशोकहि देत वधाइ॥ ४ सकल सुवासिनी धरत साथिया, कीरति पंजीरी धाइ। व्रजपतिकी स्वामिनी यह प्रकटी, लिलता नाम वधाइ॥ ५



श्रीचन्द्रप्रिया बेटीजी.

काशीस्थ गेास्वामी श्री १०८ श्रीजीवनलालजी महाराजनां छोटी वेटीजी अ. सा. श्रीचन्द्रिया वेटीजीनां रचेलां पद—राग विळावल.

नागर नट नन्दलाल, लेाचन चंचल विशाल, यसुदा को कुंवर लाल, मांखनको चोर चोर. विथुरी अलक तिलक भाल, मेार मुगट अति विशाल, कुंडल छिब अति रसाल, चितवा को चोर चोर ॥ संग लिये ग्वाल बाल, यमुना तट खेले लाल । मुरली धुन अति रसाल, मन हरलिया मार ॥ श्रकुटी छिब अति विशाल, कंठ साहे बन माल । दीन दासी पे दयाल, मांखन दिध ढार ढार ॥

पलना राग आसावरी.

-:(o):**-**-

श्रीमुकुन्दराय पालने झूलें झूलावें, श्रीगिरि-भरलाल हो ॥ रत्न जटित को पलना बनायो हीरा लागे लाल हो ॥ गजमोतिन की डेार बनी है झूमर अति बिशाल हो ॥ झगुली टोपी सीस धरे हैं, कंठ मोतीनकी माल हो॥ चकइ भौरा झुझुना फिरकी खेलावे श्रीमुरली-धरलाल हो किरतनियां तो किरतन गावे वैश्वव होय निहालहो ॥ धन धन भाग्य दासी निजजन के प्रभु तुम हो परम दयाल हो ॥

मलार.

सुनो री सखी इयाम नहीं घर आये ॥

इयाम नहीं घर आये, सखीरी कृष्न नहीं घर

आये ॥ आवन किह गये प्रीतम प्यारे किन
सातिन भिरमाये ॥ बादल गरजे मेहा बरसे

पपीहा शब्द सुनाये ॥ हरी दरसन के प्यासे

नैना पल पल नीर बहाये ॥ दिन नहीं चैन

रात नहीं नींदिया कृष्न कौन बन छाये ॥

दीन दासी कर जोड कहतुहे माहि सपनेमें

दरस दिखाये ॥

कमशः

श्री व्रजभुषणजी.

श्री गुसांइजी श्रीमद्विद्द छेश्व पश्चरणना श्री हारश्री हिला हो सार श्री बालकृष्णजी, श्री द्वारश्री हैं कांधीशना तिलकायतना वंशमां अभी पेढीए छहा टीकेत श्री वजभूषणजी थया छे. चेाथा टीकेत पण श्री वजभूषणजी नामाभिधानथी बिराजता ते हुं मा. १६९९ ना श्रावण वद ९ हुं छे. ते ओनी लीला पण जाणवा—विचारवा जेवी छे. परंतु आपणे अत्यारे छहा टीकेत संबंधे लखवा हुं हो वाथी विषयां तर करी श्रावणा नथी.

भस्तुत् श्री व्रजभूषणजी महाराजनुं माकटच, सं. १७६५ ना मागसर सुद ९ नुं छे. आपने कांकरोलीनी गादीए, संवत् १८१० ना श्रम सुहूर्तमां उदेपुर नरेष वितय मतापसिंहजीए अभिषेक कर्यो हता. आपनां छप्न आसोटीया गाममां थयां हतां. आपने त्यां कांकरोलीमां ने लालजोनुं माकटच थयुं हतुं. तेमां ज्येष्ठ पुत्र श्रीव्रजनाथजो संवत् १७८८ ना जेठ सुद ७ न दिने अने नीजा पुत्र श्री सुरलीधरजी संवत् १७९० ना वैकास्व वद १२ ना दिने मगट थया हता. आपने स्नान माटे जल बहु जातुं जेथी १६ खवास नित्य खवासीमां रहेता वळी राजभाग सरवानो समय थाय त्यारे श्री द्वारकां- धीशने बदामनो श्रीरो खुव आरोगावता. आ प्रमाणे लाखा रुपिआना बदामनो शिरो श्री—ने आरोगाव्या. अने शीरानो महामसाद तमाम सेवको उपरांत पशु-पक्षी अने घोडां शुद्धांने आपता. कांकरोलीमां गढ अने दरवाजा आपे कराव्या छे. तेमज मेाटो बगीचा पण आपेज कराव्या छे. जेनी अंदरजी वावडीनुं जल अद्यापि श्री द्वारकांधीश आरोगे छे.

एक समय आप वेठकमां विराजता हता. ते समये उदेपुरथी राणाजी दर्शन माटे आव्या तेमनी साथे तेमना भाणेज माधविसंहजी पण आव्या हता. आवस्ति अपि राणाजीन आश्चित्र आप्या. अने भाणेजनी आवो "आमेरपित " ए प्रमाणे कहीने सत्कार कथी. त्यारे भाधविसंहजीए विनती करी के अन्नदाताजी "मोटा भाइ विद्यमान छतां आप आ शुं! आज्ञा करे। छो ? त्यारे राणाजी बोली उठ्या के हवे ते। आपश्चीनी आज्ञा थइ चुकी छे एटले तुं निश्चय आमेरपित थइ चुक्या तेमां संदेह नथी " त्यारे माधविसंहजीए विनती वरी के, राज! जो हुं जेपुर जइश्च ते। आपना पथायां सिवाय राज्यासन पर नहीं बेसुं ए मारा निश्चय छे. माटे

आप पण समयपर जरुर पधारशा. त्यारे आपे आज्ञा करी के " शुभस्य शीघ्रम "।

त्यारवाद थे।डे दिवसे माधवसिंह ी जेपुर गया अने राज्याधिकार पाप्त थये। त्यारे पाताना एक दिवा-नने कांकरोली आपने पधराववा मेाकल्यो. अने पोतानी सरहद सुधी रस्ताना दरेक गाममां मुखी उपरे हुकम जखान्यो के, कांकरोछीथी महाराजश्री पधारे तेनु स्वा-गत यथायाग्य करवं.दिवान कांकराली आव्या ते समय आपने चेाथीओ ताव आवता. एथी श्रीअंग घणुज कृश यइ गयुं हतुं. ते एटले सुधी के नित्यलीलामां पधारवानी तेयारी थइ गइ हती. आ अरसामां जेपूरथी तेडं आव्युं. आपने विनति पहेांचाडतांज आप जवा माटे तैयार थड़ गया. माणसे।ए आपनी अत्यंत बीमारी जोइ न पधार-वानी पार्थना करी. त्यारे आपे सर्वेनो भ्रम दुर करवा माटे रतन चेाकनां तमाम कमाड बंध करावी एक जल-बरीआने अंदर राखी स्नान कर्युं. अने वस्नो धारण करी श्री-ना चरण स्पर्श कर्या. श्रुमकामाळा छइने जग-माहनमां पधार्या, आ समये आपनु श्रीअंग बीलकुल निरोगी अने सशक्त जणावा लाग्युं. आ जोइ बधाने आश्चर्य छाग्युं अने जेपुर जवानी तैयारी करी पधार्या. आप ज्यारे जेपुर नजीक पहेांच्या त्यारे माती इंगरी

मुधी राजा सामे पथरावना आव्यो. आपे जेपुर जइ राजाने शरणे छीधो त्यारे राजाए गुरुदक्षिणामां त्रीश हजार रुपिआनी आमदानीना अंदाजनां पंदर-सेाळ गाम भेट कया. त्यारबाद आप थे। डाक दिवस जेपुर बिराजीने कांकरोछी पधार्या.

आपे सर्वोत्तमजीतुं घोळ, नामरत्न तथा नबरत्नतुं घोळ-वधाइओ, चारासी कोष व्रजपरिक्रमानो घोळ तथा बीजा छुटक पद घणा बनाव्यां छे. तेमांथी थाडां आ पथम भागमां आपवामां आवे छे. बाकीनां बीजा भागमां आपर्युः.

दीनता आश्रयनुं पद.

श्री वस्तम शरण तीहारे आये। । बहोत जन्म भटकत भये। माेकुं, अजहु पार न पाये। ॥ १

जा साधन ते होत जीव गती, सा कछु न बनी आया। देखी परपंच जगतके, ताते जीव अक्रुलाया॥ तीरथ व्रत जप तप संजममें,
यह सब जरात बुलाया ।
ए अघार कळीकाळ जानी,
सबहीन फल दुरि दूराया ॥ ३
करुणा सागर अधम उद्धारण,

एह जस सब जग छाया। चरण कमल अब आय यहे,

मन वचन कर्म करी आया।। ४ तुम बीन अनंत ठार नहीं मेरे,

टेरत हों सीर नाये। । अरो पानि मेरे माथेपर.

मेरे। भये। मनोरथ भाये। ॥ ५ देवी जीव उद्घारण कारण,

पुष्टिमार्ग प्रगटाया ।

अपने वल प्रताप तेज तें,

रवी सुत त्रास नसायो ॥ ६ तुमसा दाता भयो न ओरे, वेद पुराण वतायो ।

आपहि शर्वस व्रजभुषणको, शरणागति द्रशायो ॥ ७ -- 0:[,]:0---श्री महापश्चजीनी वधाइ. हुं बलिहारी तैलंग कुळदीपक, श्री लक्ष्मण तातनेरे लोल । ते कुळ प्रगटया श्री वह्रभदेव, जगत हित कारणे रे लोल ॥ १ एमना बेउ सुत छे परमकृपाळके, चतुर शिरोमणी रे लोल। श्री गापीनाथ श्री विद्वलनाथ के. अम शिर ए धणी रे लोल ॥ २ जाणी ए पाते सात स्वरुप धरीने. प्रगटया मही रे लोल। श्री गिरिधरजी परम सुशील के,

सुभट अति शोभितारे लोल ॥ ३ श्री गाविंदर।य तणु मुखचंद के, भक्तजन लेाभतारे लोल ।

श्री बाल कृष्णजीना अतिशय नील के, चरण चित्त लावीएरे लील ॥ ४ श्री गोकुळनाथना चरणनी रेणु के, जगतमां कहावोएरे लोल। चतुर शिरोमणी श्री रघुनाथ के, तेना गुण गाइएरे लोल ॥ ५ श्री जदुनाथजीना चरण सराज के, तेने दुर्लभ धारीएरे लोल। समर्थ वेद तणा नहीं वरणव के. ग्रण घनस्यामनारे लोल ॥ ६ गखा चरण कमळनी छांय के. पहांचे कामनारे लोल। सात स्वरुप तणा निज वंश के. जगतमां बिराजजारे लाल ॥ ७ सकळ स्वरुपना चरणनी रेणु के, अम शिर गाजजारे लोल। ए श्रो वस्त्रभना निजवंश के, जगतहित कारणेरे लोल ॥ ८

श्री वजभूषण जाइ मुखचंद्र के, जाय वारणे रे लोल । हं बलिहारी तैलंग कुळदीपक. श्री लक्ष्मण तातनेरे लेाल ॥ १० ·--:(0):---मुरलीनं पद-राग गोरी. मुरलीवारे सामरे नेकु, मारग मोहि बतायहोरे संग न सहेली फीरों अकेली. कीत नंदीसूर ग्राम रे॥१ मूलपरी संकेत सघन बन, हैं। अबला कीत जाउ रे। मृगनेनी के बचन सुनतही, आय मीले तीहिं ठाउरे ॥ २ मारग मीले अंक भरि भेटे. भले। बन्या यह दावरे। व्रजभुषन हीत लाडिली प्रभु,

राधा रमन भये। नावरे॥३

(२ अहे। प्रिय मुरली सुंदर बांसकी, सीखीमें जतन अनेक। माही छीन जीवे नहीं अरुयह मुरलीकी टेक. ॥ अहो प्रिय मुरली छीन छांडा नहीं,

अरु जहीं जहीं जाउं। के कटि के करमें रहुं, के अधरनपें ठाउं.॥ २ बसी कुलन मुरली भई, अरु वसों करनके हेत नुमकों आनि विवाही हैं।,

निज मंदिर संकेत ॥ ३ मुरली मेरी माहन माह्यो, सब ब्रज ब्राम । ग्रहम् स्थाने रटें। श्री राधा राधा नाम ॥ २ अहो प्रिय मुरलीमें युन गान.

घनेरेहां कृपा अनुराग। तन धन वारों यह सब मेरो बड भाग ॥ ५ रीझि पिया मुरली दई, ओर कंठको हार। व्रजभुषन हीत लाडिली मिलि, लीख्यो बिपिन बिहार ॥ ६

श्री देवकां बेटी जी.

नाथद्वाराधीश श्रीमद् गेास्वामीवर्ष श्री
 श्री ह्रि १०८ तिलकायत श्री गेावर्द्धनलालजी
 ग्री ह्रि १०८ तिलकायत श्री गेावर्द्धनलालजी
 ग्री ग्री वेनांजी)नां रचेलां धेाळ-पदः

सं १९६५ना मागसर मासमां के।टाधी श्री मद गा. श्री रणछोडळालजी महाराज पोताना निधि स्वरूप श्री मथुरेशजी सहीत श्रीनाथद्वारा पधार्या हता ते समये श्रीनाथजी साथे मागसर छुद १५ ने। वार्षीक छप्पन भाग आरोग्या हता ते समयनां आ धीळ रचेलां छे.

छप्पनभागनु वर्णन तथा ते संबंधनां बीजां घेाछ-पद घणां छे, ते स्थाना भावथी अहीं अपायां नथी ते बीजा भागमां आपर्ध

> छप्पन भोगनी सामग्रीतु संक्षिप्तमां वर्णन. (राग-बुरानपुरी).

श्री वल्लभ मधुने लागुं पाय, समरुं श्रीबिटल मुखदाय, नमुं जमुनाजी माय, रहेजो हृदये वसी. १ बसा हृदये श्री बिजराज, पुरा नीज सेवकनां काज, गावुं लीला मुंदर ताज, छप्पन भोग तणी. २ 3८

ना भारत भूमि मांहा, श्रीनाथ धाम साहाय, पुरण पुरुषोत्तम नोरखाय, राजे गावर्द्धननाथ. 3 व्यां छे आनंद अपरंपार, सेवे वल्लभ राजकुमार, गाये ओच्छव हारे। हार, लोला नवीरे नवी. ौला नवी जहां नीरखीए, छप्पनभोगना साज। ाल बागमां जाणीये. मनेारथ माटा आज ॥ मोटा मनेत्रथ छे भारी, यज्ञ छीला ए छे न्यारी. श्री बल्लमकुळती बलीहारी, भली रचना रची. सं त चंद्र नंद जाण, रस शंकरमुख पमाण, चैत्र वद सातम त्रखाण, महा ओच्छव थयो. २ इज्ञन करवा अगणित लोक. आवे वैष्णव थाकाथाक. भोड भारे मारग चेाक महा मेळारे भर्यी. ३ नथी मारगमां कंइ माग, लोक भरायां अथाग, आगळ जावा नथी लाग, जेत्री समुद्र भर्यो. ४ जन समुद्र गरजी रह्यो, दिसे नाना विध रंग । आभृषण सुंदर पहेरीआ, वाध्या अति उमंग ॥ आव्या उमंगे नरनार, दरसण काजे श्रीजीद्वार, आव्या राणाने सरदार, तजीने अहंकार. बैष्णव मंडळ कीर्तन करता. अति आनंद उरमां धरता.

मळी साहागणे। गातां, गीत मंगळ वहु.

थाय आनंदनो बहु सार, दरशन खुर्या परेछे पहार, जन करतां शार बकार, वाग्यां वा नारे धणां. वागो ने।बत गडगडाट, लोको देाडे घडघडाट, जय जय करतां सोधे वाट, दरज्ञन केम थरो. दर्शन सौने थायछे, छे प्रभु परम द्याळ। श्रीगावर्द्धनलाल आज्ञा करे, राखे सौ संभाळ 🕸 सेवक संभाळीने लेता, दुःखी थावा नहीं देता, समाधानी फरता रहेता. दर्शन सुखथी थता. करे स्वरुपनी सा झांखी. नीरखे मनमां धीरज राखी, श्री गानर्द्धनलाले लीला दाखी, घणी कृपारे करी. शोभे सामग्री अपार, शुं वरणीए पकार, रची नाना विधनी हार, जे!इ चकीत थयां. 3 मांखन मीश्री लीला मेवा. भंशी पात्र श्रोभे जेवा. पश्चने भावे सुंदर तेवा, सज्यां नीकट सड. अनार द्राक्ष दीपी रह्यां, नारंगी रुडे रंग । आंबाफळ सीताफळ सज्यां,जामफळ केळां संग मेवा विधविधना शोभाय, सोना पात्रोमां झळकाय, बळी सामग्री छे त्याय, द्ध घरनी बहु.

बरफी पेंडा केसर रंग, खुवा छाडु छे ते संग,

साज्या धरीने उमंग, मीठा मावारे धर्या.

अनसखडीनी शी खोट, माटा ठार तणा छे कोट, साज्या एक एकनी ओट, झाझी जुगत थकी. ६ महेसुर भाइनथारने मण्डी, सकरपारा साथे थपडी, एवी अगणित छे अनसखडी, पकवान घणां. ४

पकवान दीसे बहु भातनां।
एक घहुंनां प्रकार कहेवाय।।
छप्पन वस्तु साजी धरी।
नौतम नहीं ओळखाय॥

ओळख्या गुंजा मोटा धारी, साथे संजुरी छे भारी,
मेवा मावानी छे घारी, तबापुरीरे रची.
श्रीखंड बासुदी रुपाळी, जायां दुधपा ह त्यां भाळी,
रची पुरी ने सुंबाळी, सेव खीर सजी.
श्रांवा रस केसरी धरीया, साना कटोरामां भरीआ,
पाळी उपर घत ठरीयां, मांहे मेवारे भळ्यो.
अनसखडी छे वह जाट, रची न्यारी रुडी भात,
नेवी सखडी शोभे साथ, शुं वरणी कहुं.

सखडी घणी शुं वरणीये,

छे साग सधाना अपार। दाळ कढी कठेाळनां, धर्या कुंडां हारो हार॥ हारो हार घणी शेभाय, सखडी अनसखडी नीरखाय, नहीं गणाय, नव ओळखाच, जेहेवा सागर भयें. १ अपार सामग्री छे जहांय, नजरे जातां नहीं पहेांचाय; सहस्र गुखथी हारी जाय. कवी शु रे कथे. २ वचे चेक छे चीत्राकार. पध्य गिरिराज नीरधार; ध्वजा शोभे उपर सार, तुलशी माळारे धरी. ३ छुटे मुगंध घमघमाट, पांन वीडानां छे ताट; बरास कस्तुरीना थाट, पुष्प बेहेकीरे रह्यां. ४ शीतळश्रीजमुनाजळ तणा, माट भर्याछे खास। रत्न कनक झारी भरी, धरी सात स्वरुपनी पास।। जहां विराजे मुकुमार, श्रीवहुभकुळ तणा परिवार, पेहेरी आभुषण शणगार, शोभा अनुप बनी.

श्रीगावर्छननाथजी कृत पद. ् (पळनातुं पद्–राग मलार)

श्री लाडिलेश मदन मेाहन,

गव्हर बन कुंज मध्य । जुवतिन भुज बीच आज, झुलतहें पलनां ॥१ धीत बसन मुकुट धरे, शोभित बनमाल तहां राजतफल पुष्प लिये, करनमांझ ललना ॥२ इतही श्यामा श्याम संग, सुरत रंग केळि करत श्रमजळ कहा परत शांत भई काम ज्वलनां ३ तेमें उत तडीत साथ,

कीडत घन माना मंद् बरष । नाप दूरि करत, त्रिबिध पवन चलनां ॥ ४ अधरामृत पानसोई, भाजन मिल करत देाउ, रसमय सुखमय, बरना कहां अतही अतालनां ५ दास गावर्द्धनकी येही, विनती दीजे कृपाकर । मुखते तंबालनां ॥ ६

----c:[,]:o----

नित्य पाठ-राग धनाश्री.

भक्ति थकी वश थाय दयानिधि,
भक्ति थकी वश थाय।
भय भंजननी भक्ति कर्याथी,
जन्म मरण भय जाय॥ दया. १
विद्यानिधि माटा मुनि छोडी,
पशु गज माटे धाय;

द्योधन भाजन तजी रुचीथी,

शाक विदुर घरखाय-दया. २

जेना मुख प्रसाद कण सारु,

ब्रह्मादिक ललचाय:

शृद्धी भीलडीनां बोर,

लेतां ते न लजाय-दया. ३

जे पर छत्र धरे प्रेमधी, अमर छत्रपतिराय: ते गिरि छत्र धरी स्थिर करमां,

वरा स्वर करमा, भीजे गेापने गाय.-दया. ४

विधि शिव शेष अशेष वेदमां.

जेना दास कहाय;

अणवाणे पद हुपद सुताना,

दास बनी ते जाय-दया. ५

विद्या वैभव विविध वचन बल.

कोइ थकी न रीझाय;

गे।वर्द्धन प्रभु प्रेम बंधन थकी,

चतुर्थ पीठाघे सर नित्यलीलास्थ गास्वामी श्री १०८ श्री कन्हे यालालजी अ (श्री विद्वलनाथ ती महाराज कृत-पद

तुमतो अखिल लेक्किके स्वामी, दीनवंधु भक्तन मनरंजन आपही गरुडागामी ॥१॥ पुष्टिभक्ति आह नवधा भक्ति निजजन सेवक पामी, श्री विद्वलेशकी अब गृढ विनति मनकी जानत अंतरयामी ॥२॥

(?)

अब वश नाहीन नाथ रह्यो, विमयोग छुटाइ हो कब नाहीन जात सह्यो ॥१॥ आप इच्छा मबस्र जानी मेम ताप सह्यो, श्रोविङ्गलेशके श्रीगिरिधर प्यारा मश्र तुम पकरी बांह्य ग्रहयो ॥२॥

(3)

श्रीगोकुलेश अलबेलो, हमारा श्रीगोकुलेश अलबेले।, शरद पुनमना सुधाकर कहीए, सुज मन रंग रसिले। १ लटपटी पाघ अटबटी बांधी, तुरा अजब जुकेले।, विदलके पश्च के।टि काम हिब, रस हो रंग रेले। २

#श्रीकन्हैया पश्चनुं विस्तृत जीवन चरित्र, अन्य स्थळेथी मगट थयुं छे. एटले अनाए अहीं लख्युं नथी.

(8)

अवता बहुत भइ हे नाथ, सनमुख तुळसी दळ दे मोकों द्रढ कर पकरे हाथ. ॥१॥ क्षमा करे। आ अपराध हमारे।, निश्चदिन राखे। साथ, विद्वल उपर द्या करे। प्रभु हुं अनाथके नाथ ॥३॥

(4)

श्री गोकुलनाथ भक्त पे। खे, दान दया नित अपने जनपें, ताते रहत संते। खे. ॥१॥ श्रीमुख वचन भगवदी जनने, लीख लीए बावनदे। से, श्री विद्वल प्रभु निडर रहत हें, एक जु आप भरोसें. ॥२॥

(६)

हमारे श्री गोकुलेश निज ठेार, पार्वती वर श्री गोकुळ पति, जहां रसिक शिर मेार.॥१॥ इनके चरण कमळ तें छुटत, मनकी दाेडादेाड, श्री विद्वळजी रसिक बतायो बहुभ, कहा कहुं अब ओर.॥२॥

(७)

निशदिन वल्लभ वल्लभ करीए, मन मबोधको नित्य नेमसुं, करत पाठ अद्वसरीये. ॥१॥ नित्य चरित्रके धेाळ बांचके, भाव इरदेमें धराए, विद्वस्तके मश्च गांकुलपति के, नित्य उठ पाये पडाए. ॥२॥

(2)

हमारे श्री गोकुछेश वर रुडो, श्याम सचीकण केश सुशोभित शीश एटमा जुडो. ॥१॥ पहेर्यो हे मन दढ करके, अचळ सुहागको जुडो, विद्वळ कहे यह स्वरुप अलै।किक, ज्ञान ग्रंथको सुढो. ॥२॥

(9)

मनमें निश्चे भइ श्रीगोक्कणित अवता मनमें निश्चे भइ. श्रीगोक्कलित निज जान कृपाज कीनी, मन चिंता हरी छइ ॥१॥ ग्रंथ दुग्धवत भाव दिधवत, तामें मन मेरो रइ; कृपा कटाक्ष अवलोकी विलोकत दरशन मथम सही. १२। विरह रुप जलतत्त्व भर्यो नवनित मिलन हितसही, भगवदीयनकी भाव भावना, ताको पार नहिं, विदलके श्री गोक्कणितने, दृढ करी बाह्य ग्रही. ॥३॥

(¿o)

तुम वीन ओर न कोइ, श्री वल्लभ-तुमारी कृपातें एकही क्षणमें सिद्ध मने।रथ होइ ॥१॥ इच्छा विना पान नहीं हाले, करे। आप होये से।इ, विद्ठलके मन दढ यह आइ, राखें। चरण समे।इ ॥२॥

(? ?)

वल्लभ सुने। हमारी वितति, हमतो दास तिहारें हे, अतिही निकट समीपकं सन्मुख पास तिहारे हे ॥१॥ आप विना नहीं कोड मेरा, माणवत धारे है; इतनी ओर कृपा अब कीजे, श्रीमुख निहारे है. वल्लभ विद्वल के हृदयमें बसा गोक्कलपति प्यारे हें. ॥२॥

नित्यलीलास्थ श्रीमद् गा. श्री गाकुलेशजी

(जुनागढवाळा) कुत, निज मंदिरमां विराजता स्वरुपानी वधाइ—राग सारंग.

गाउं श्रीक्रष्ण मम देव तीनके गुनः पाउं सदा मनमग्रमयी
भदनमोहनको मुरलीनाद स्न स्वािमन्यादिक धाइ गइ.
अश्री दामादर देत सवनकाः भिवत कृपारश आनन्दमयी.
श्रीगोवर्द्धननाथ चरण द्वे. धरे चित्त तव बुद्धि दइ. २
भग्रुराधीश पश्च युगल चरणसां. निज दासनकी शुद्ध भ्रुलइः
हिरदास जव विष्णुरुप व्हें, दैवी जीवनको भित्त दइ. ३
विद्वलनाथ पश्च हस्तसां लिखदिया,दिया दान रसदृष्टि भइ
निजाचार्य पादुकारुपसां. देत दरस तब मित विजयी. ४

१ श्रीमदनमेाहनजी. २ श्रीस्वामिनीजी ३ श्रीदामेा-दरजी. ४ श्रीगोवर्द्धननाथजीना चरणारिवन्दनां वे मेाजां ५ श्रीमथुरेशजीना चरणारिवन्दनां वे मेाजां.६ श्रीगिरि-राज. ७ श्रीशालीग्राम. ८ श्रीग्रसांइजीना इस्ताक्षर, ९ श्रीमहापञ्चजीनी पादुकाजी.

िश्रीबालकष्ण हैयंगव हस्तहरि. दृष्टि पर गोपी खीजइ; िनटवर नृत्य करत आंगनमें ग्वालन सबनकें तब रीजइ.५ ंग्वाल बाल ढूंढत गलियनमें. कान कुंवरकें ले जु गइ; चुपूरनाद सुनत सब आये. खेलन आये छेल सही. ६ विश्वीव्रजवल्लभ रुप धर्यों जब, तब दैवीको अधिक छइ; निजदासनके कोटी मनेरिथ, तत् छीन है।त सब सिद्धसही.

१० श्रीवालकृष्णजी. ११ श्रीनटवरजी. १२ श्रीदामेा-दरजीनी पीठिकामां चार ग्वाछवाछ १३ श्री तातजी.



અમારા તરફથી પ્રસિદ્ધ થયેલાં પુસ્તકો.

ą	શ્રીસૂરદાસજનું` જીવન ચરિત્ર	3-4-0
-	-	=
ર	સંપૂ ર્જુ રાસ પંચાધ્યાયી (નંદદાસ છ કૃત)	
3	પ્રેમ–શુંગાર દાહાવલી	0-8-0
ጻ	બ્રક્સભપ્ટ દર્પ ાં (સ્વજ્ઞાતિને લે ટ)	0-0-0
ય	પતિવૃત્તા—પ્ર શ ાવ	0-3-0
ķ	શ્રા ગિરીરાજ ભૂષણ (તૈયાર નથી)	
Magin	ુ કાચાં પુઠાં	0-90-0
Ü	સૌરાષ્ટ્રની સાધ્વી } કાચાં પુઠાં કપડાનાં પાકાં પુઠાં	
<	શ્રી વૃજમંડલ—અને ૄ અંને શ્રી વલ્લભ અષ્ટોતર શતનામ ∫ સાઘે …	. 0-9-0
E	શ્ચા વલ્લભ અષ્ટોતર ેશતનામ ∫ સાઘે ¨	•
O	પુષ્ટિમાર્ગ'ના સાચા સિદ્ધાંત	o- 9 -६
19	પુષ્ટિમાગી ^{લ્} ય શિક્ષામૃત	०-३-०
ર	શ્રીમદ્ ભાગવત અને બાપદેવ તથા	
•	· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·	o- १ -६
ŧз	રી વલ્લભવંશ પદ્યવચનામૃત	9-8-0
	ફાડા—સૌરાષ્ટ્રની સાધ્વી મીરાંબાઇ	0-9-0
	શ્રા દારકેશલાલ છે રેસાઇઝ માટી	
		o-o-E

અામ માટે લાલ. ગારસા વર્ષે અલોકિક પ્રકાશ. શ્રી રાસ પંચાધ્યાયી—(નંદદાસજ કૃત). (કઠણ શબ્દોના અર્થ સહિત).

સર્વ ભગવદીય 'વષ્ણુવા અને સાહિત્ય રસિકાને જણાવતાં આનંદ થાય છે કે, આજ પર્યં ત શ્રી નંદ-દાસકૃત રાસ પંચાધ્યાયની જેટલી આવૃત્તિઓ પ્રસિધ્ધ થઇ છે. તે તમામ ૩૦૧ તુકની અર્થાત અપૂર્ણ છે. એમ કહાલમાં પુરવાર થઇ સુકસું છે. આમ થવાનું કારણ એજ કે પ્રકટ કરાવનારાઓએ કાંઇ પણ શ્રમ વેઠયા વિનાજ. પ્રથમ છપાયેલાં પુસ્તકા પ્રમાણે નકલે નકલ છપાયેલ છે, જેથી દરેક પુસ્તક એક સરખું જેવામાં આવે છે. વળી કેટલેક સ્થળે લહીયાની ભુલા થી શબ્દો અને મુળ છંદમાં પણ વિકૃતિ આવી ગઇ છે તે તરફ પણ પુરતું લક્ષ અપાયું નથી. પરંતુ શ્રી રાસ-રસિકેશ્વરની ઇચ્છાથી રહી રહીને આજે ચારસા વર્ષે એક પ્રાચીન પ્રત પ્રાપ્ત થઇ છે.

અમે મુંબઇ, રાજકાેટ, અમદાવાદ, ભાવનગર, પ્રયાગ, લખનઊ અને કાશી ઇત્યાદિ જુદા જુદા સ્થળાએથી પ્રસિધ્ધ થયેલ રાસપંચાધ્યાયી (નંદદાસકૃત)નાં પુરત કા મંગાવીને મેળવી જેયાં, પરંતુ તેમાંનાં વિશેષ ભાગે એક બીજાના ઊતારા કરેલાજ જેવામાં આવ્યા, તેમજ દરેકમાં એકજ પ્રકારની ૩૦૧ તુક જેઇ તેમ શખ્દોમાં પણ ફેરફાર જણાયા જેથી અમે પંચાધ્યાયી નાં જેટલાં મળી શકયાં તેટલાં–તમામ છપાયલાં તથા હાથનાં લખેલાં પુરત કા એક પ્રકરી તમામને મેળવીને એક ખરડા તૈયાર કરી પુસ્તકાકારમાં છપાવેલ છે. જેમાં દરેક પાના નિચે વજ ભાષાના કઠણ શખ્દોના ગુજરાતીમાં સરળ અર્થ લખ્યા છે, ઉપરાંત ન દદાસજના ભાષા સાહિત્ય વિષયના એક મહત્વના લેખ પણ સાથેજ દાખલ કરી છે.

વષ્ણવ વર્ગ તો નંદદાસ જની અલાકિક રસિક વાણીના આરવાદનથી પરિચીત છેજ, પરંતુ ઉત્તર આર્યાવર્ત્તમાં પણ કહેવત પ્રચલિત છે કે,

ઔર સળ ઘડીઆ—નંદદાસ જડીઆ.

અર્થાત:-અન્ય કવિએ ભાષા સાહિત્યરૂપી દાગીના ઘડનારા છે ત્યારે ન દદાસજી દાગીનામાં ન ગ જડનારા છે. ઘડતરની અપેક્ષાએ જડતર કામ વિશેષ મહત્વ-પૂર્ણ ગણાય છે. તે કાંઇ બધા સુવર્ણકાર (સાની) કરી શકતા નથી. તે સુજબ કાવ્ય પણ અનેક કવિએા કરી ગયા છે. પરંતુ નંદદાસજીની અવ્ય રસિકતા તા કાઇ અલીકિક વસ્તુ છે.

આવા મહાવ ભગવદ ભકત રસિક શિરામણી નંદ-દાસજની કાવ્યની આલાચના સાથે શ્રીનંદદાસજકૃત સંપૂર્ણ રાસ પંચાધ્યાયી, કઠણ શખ્દોના અર્થ સહિત, ચારસા પંદર તુકની જે આજ પર્યાંત પ્રસિદ્ધ થયેલ નથી તે અમાએ હાલમાંજ અતિ પ્રયાસ કરીને પ્રગટ કરાવી છે.

સારા ગ્લેઝ કાગળમાં, પાંચ ફારમ જેવડું માેડું પુસ્તક, છતાં નાેછાવર રૂા. ૦-૪-૦ પાેષ્ટ ખરચ રૂા. ૦-૧-૦ પાંચ આનાની પાેષ્ટની ટીકીટા માેકલવાથી મળી શકશે.

શ્રી પુષ્ટિમાર્ગ ના સિદ્ધાંત

શ્રી ચતુર્થ પીઠા**ધી**શ સદા લીલાસ્થ શ્રીમદ્ ગાેસ્વામી માકન્હેયાલાલજ મહારાજના ભાષ**ણ**નાે ગુજરાતીમાં સરળ અનુવાદ,

આ નાનું પુસ્તક ગાગરમાં સાગર ભરવા જેવું છે. આની અંદર પુષ્ટિ માર્ગ એટલે શું ^૧ પુષ્ટિના અ**ર્થ,** સિધ્ધાંત, અષ્ટાક્ષર મહામંત્ર, ખ્રદ્ધસંબંધ થયા પછી કલપ્રાપ્તિમાં વિલંખનાં કારણા, પુષ્ટિમાગી'ય મર્યાદા પુષ્ટિ—પુષ્ટિ અને શુધ્ધ પુષ્ટિ, અંતઃકરણ પ્રભાધ, શ્રીમદ આંચાય'જનું સ્વરૂપ, આંતર સાધન, લગવદ્દલીલાનું ગાન, બાહ્યસાધન, માલા–તિલક સુદ્રા પુષ્ટિમાગ'નું ગાંભીય' ઇત્યાદિ વિષયાનું ઘણું જ સુંદર વિવેચન કરેલું છે.

સિવાય સાસ્ત્રીજી મગનલાલ ગણપતરામનું ભાષણ કે જેમાં આચાર્યોની શિષ્યા તરફ ફરજ, પુષ્ટિના સત્ય અર્થ, વિષયાસિક્ત અને ભગવદ્ ભક્તિરસમાં તારતમ્ય, પુષ્ટિના બેદ, પુષ્ટિ ભકતે ચાતક વૃત હંસવત ધારણ કરવું વગેરે ઉપર એક શાસ્ત્રીય લેખ છે કે જેનું દરેક વૈષ્ણવાએ અવશ્ય મનન કરવું જોઇએ. ઘટાડેલી નાછાવર ૦-૧-૬ પા. ખ. ૦-૦-૬.

શ્રી મહાપ્રભુજીના તાદ્રશી સેવક શ્રી સૂરદાસજીનું જીવન ચરિત્ર. (બીજી સસ્તી આવૃતિ)

સૂરદાસ છેના શ્રંથ વાંચવાની અને પુસ્તકને પાતાના વાંચનમાં પધરાવવાની દરેક વૈષ્ણવને ઉત્કંઠા છે, એવું અનેક વૈષ્ણવા પાસેથી અમા સાંભળતા, પરંતુ પુસ્તક છપાયા બાદ એમ કહેવામાં આવતું કે, કીંમત એક રૂપિઓ છે તે વધારે છે, એટલે તમામને પુરતા લાભ મળી શકતા નથી. જેથી દરેકે દરેક વૈષ્ણવ લાભ લઇ શકે માટે અમાએ બીજી સરતી આવૃત્તિ થાડા ફેરફાર સાથે બહાર પાડી ઘણીજ એાછી કીંમત રાખવાથી જલદી ઉઠાવ થઇ ગયા છે હવે ફક્ત ૧૨૫ પ્રતિ બાલાંશમાં રહી છે તા દરેક વૈષ્ણવાને તુરતમાં મગાવી લેવા વિનતિ છે. નાેછાવર ૦—૬—૦ પાેસ્ટ ૦–૧–૦.

શ્રી વજ-મંડલ

તથા શ્રીવલ્લભ અહોત્તરશત નામનું પ્રાચિન ધાળ.

શ્રા ત્રજ ચારાસી કાેસની અંદર તમામ સ્થળાનું ઘેર બેઠાં દર્શન તથા સ્મરણ કરવું હાેય તાે, શ્રી ત્રજ—મંડલ મગાવા સાથે સાથે શ્રી મહાપ્રભુજથી આજ પર્યં ત ભ્તલ પર પ્રગટ થયેલ તમામ બાળકાેનું નામ સ્મરણ કરાવનારૂં પ્રાચિન અપ્રસિદ્ધ ધાળ પણ દાખલ કર્યું છે. ઘટાડેલી નાેછાવર ૦-૧-૦ પાે. ખ. ૦-૦-૬.



સૌરાષ્ટ્રની સાધ્વી

(માતાજી શ્રીમીરાંભાઇ) અને

યાત્રાના અનુભવ

શ્રીભગવદ્ ભક્તિનું સાક્ષાત્ મૃતિ મંત સ્વરૂપ એક ભક્તાત્મા વિદુષીખાઇનું અલોકિક જીવનચરિત્ર.

પ્રસ્તુત્ ભક્તિ-રસપ્રાધાન્ય ચરિત્ર પુસ્તકમાં સેવા-પરાયણ, આદર્શભક્તિસ્વરૂપ, સચ્ચરિત્રવાન સતિ-સાધ્વીનું બાેધક, ભક્તિનોતિ ભરિત, પ્રભુ-પ્રેમ રસ-સાગરની છાંહા ઊછાળતું સત્યઘટનાથી ભરપૂર. જીવન-વૃત્તાંત હાેવા ઉપરાંત તેમાં ભારતવર્ષનાં પવિત્રતીર્થોનું વર્ણન, ઐતિહાસિક તેમજ ભોગાલિક માહિતી સાથે આપેલ છે.

વળી તેમાં તીર્થ સ્થળામાં આવેલાં પ્રસિદ્ધ મંદિરા અને પ્રાચીન સ્થળાની ઉત્પત્તિ-સ્થિતિ વિષેતાં વર્ણુંના પણ અવશ્ય જાણવા યાગ્ય છે; સિવાય ગુરૂ-મહિમા, સત્સંગ, માહાત્મ્ય, નીતિધર્મ, ગૃહસ્થધર્મ, એકાદશી- વત-વિધાન ઇત્યાદિ ધર્મનાં તત્ત્વા, દર્શાત-પ્રમા**ણ** સાથે આપેલ હાેવાથી પુસ્તક અતિ મહત્વ પૂર્ણ બન્યું છે.

કેટલાક નીતિ**ધર્મ અને ભ**કિત–વિષયક શ્લાેકા અને હિન્દીભાષાનાં કવિત–સવૈયા વાંચતાં વાંચતાં મન-મંત્ર–મુગ્ધવત્ અની જાય છે.

પુસ્તકની અંદર પરમપૂજ્ય ચરણ શ્રીમાતા્છ મીરાંબાઇની દર્શનીય છબી પણ છે.

આ પુસ્તક ખુદાવિંદ નેકનામદાર જીનાગઢ સ્ટેટના કેળવણી ખાતાએ ઇનામ તથા લાઇબ્રેરીએ માટે મંજીર કર્યું છે.

કાગળ ગ્લેઝ, પૃષ્ટ ૨૦૦ થી વધારે– કોંમત–પાકાં પુંઠાં કપડાંનાં સાેનેરી નામવાળાં ૧–૨—૦. સાદાં પુંઠાં...... **૦-૧૦**-૦.

સૂચના—એક રૂપિઆ સુધીની કીમતનાં પુસ્તકો મગાવનારે નાેછાવર તથા પાેષ્ટ ખરચ માટે ટપાલની ટીકીટા માેકલવી. વી. પી. કરવાથી વૈષ્ણવાને ચાર આનાના વધારે ખરચ આવે છે.

> મળવાતું ઠેકાહ્યું, કવિ નરસિંગદાસ ભાણજભાઇ **પ્રદ્રાભદૃ.** કુતિઆણા (કાઠીઆવાડ).

लाल तहाबुर शास्त्री राष्ट्रीय प्रणासन अकादमी, पुस्तकालय Lal Bahadur Shastri National Academy of Administration Library

सम्<mark>चूरी</mark> MUSSOORIE

अवार्ष	ेत मं•	
Acc.	No	٠,

कृपया इस पुस्तक को निम्न लिखित दिनांक या उससे पहले वापस कर दें।

Please return this book on or before the date last stamped below.

दिनांक Date	उधारकर्ता की संख्या Borrower's No.	दिनांक Date	उधारकर्ता की संख्या Borrower's No.

H 294,538 J.D 2599

ACCI'H LAL BAHADUR SHASTRI

National Academy of Administration

MUSSOORIE

Accession No. 12-1108

- Books are issued for 15 days only but may have to be recalled earlier if urgently required.
- An over-due charge of 25 Paise per day per volume will be charged.
- 3. Books may be renewed on request, at the discretion of the Librarian.
- Periodicals, Rare and Reference books may not be issued and may be consulted only in the Library.
- Books lost, defaced or injured in any way shall have to be replaced or its double price shall be paid by the borrower.

Help to keep this book fresh, clean & moving